सम्पादकीय

अमन के विश्वव्यापी राजदूत
हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद-ज़िन्दाबाद

अख़बार बदर के इस विशेषांक के लिए प्यारे आक़ा सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने "जिहाद की हक़ीक़त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ी और जिहाद की रोशनी में " के विषय की मंज़ूरी प्रदान फ़रमाई है। यह बात हमारे लिए बहुत ही हौसला बढ़ाने वाली और ख़ुशी तथा प्रसन्नता का कारण है कि हुज़ूर अनवर ने पिछले सालों की तरह इस साल भी बावजूद अपनी अत्यधिक व्यस्तता के बदर के पाठकों के लिए बहुत ही ईमान वर्धक पैग़ाम और अपने मुबारक हाथ से दस्तख़त कर के एक तस्वीर भी भिजवाई है। हम हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की इस शफ़क़त और मुहब्बत के बहुत आभारी हैं और दिल की गहराइयों से दुआ करते हैं

اَللّٰھُمَّ اَیِّدْہُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ وَبَارِکْ لَنَا فِیْ عُمُرِہٖ وَاَمْرِہٖ۔

जिहाद की तीन क़िस्में बयान की जाती हैं।(1) जिहाद अकबर अर्थात नफ़्स को पवित्र करने का जिहाद। (2) जिहाद असग़र अर्थात तलवार का जिहाद। (3) जिहाद कबीर अर्थात तब्लीग़ इस्लाम का जिहाद।

जिहाद अकबर अर्थात सबसे बड़ा जिहाद जो नफ़्स को पवित्र करने का जिहाद है इस जिहाद के बग़ैर बाक़ी दो जिहाद के रास्ते उत्तम तरीके से तय नहीं हो सकते। यद्यपि कि इस युग में जिहाद असग़र अर्थात सबसे छोटा जिहाद जो तलवार या बंदूक़ का जिहाद है मौक़ूफ़ (स्थगित) है परन्तु जब यह जिहाद जायज़ था और इसी तरह जिहाद अकबर अर्थात तब्लीग़ इस्लाम का जिहाद ,यह हर दो जिहाद सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने बहुत उत्तम तरीके से किए जिसकी बड़ी वजह यही थी कि यह जिहाद अकबर के बेमिसाल शहसवार थे। अत: सबसे अहम जिहाद नफ़्स को पवित्र करने का जिहाद है जो हर वक़्त और हर समय में किया जा सकता है। इस के बाद तब्लीग़ इस्लाम का जिहाद है। यह जिहाद भी सिवाए कुछ छूट के हर समय हो सकता है। हां तलवार का जिहाद अब मौक़ूफ़ है और सिर्फ विशेष हालात के आधीन ही जायज़ हो सकता है।

यह हमारी बहुत बड़ी ख़ुश किस्मती है कि अल्लाह तआला ने हमें इस ज़माना के इमाम सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद महदी माहूद अलैहिस्सलाम को मानने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। इस इनाम के मुक़ाबला पर दुनिया के सारे इनाम तुच्छ हैं। और इस के नतीजा में फिर अल्लाह तआला ने हमें ख़िलाफ़त की नेअमत से नवाज़ा जिसके माध्यम से अल्लाह तआला दुनिया को इत्तिहाद तथा इत्तिफ़ाक़ के निहायत हसीन नज़ारे दिखा रहा है। हमें गर्व है कि हम एक हाथ के इशारे पर उठने और एक हाथ के इशारे पर बैठने वाली जमाअत हैं।

जमाअत अहमदिया इस वक़्त पूरी दुनिया में जिहाद कबीर अर्थात तब्लीग़ के जिहाद में सरगर्म है। जहां वह इस्लाम की हसीन तथा सुन्दर शिक्षाओं को दुनिया के सामने पेश कर रही है वहां इस्लाम की तरफ़ सम्बन्धित जिहाद के ग़लत अर्थों को भी धो रही है। अर्थात यह बता रही है कि इस्लाम दुनिया के किनारों तक केवल अपनी मुहब्बत और अमन की शिक्षा की कारण से फैला है ना कि तलवार और ज़ोर ज़बरदस्ती से।

इस अवसर पर हम विशेष रूप से इस बात का ज़िक्र करना चाहते हैं कि इस्लाम का सही चेहरा दुनिया के सामने पेश करने और विश्वव्यापी शान्ति की स्थापना के बारे में निरन्तर कोशिशें और सफल चेष्टाओं में सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का पूरी दुनिया में एक स्पष्ट और विशेष स्थान है। आपने विश्वव्यापी शान्ति की स्थापना पर सैंकड़ों लैक्चर दिए। इन लैक्चरों में जहां आपने विश्वव्यापी शान्ति की स्थापना पर ज़ोर दिया वहां आपने क़ुरआन तथा हदीस और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आचरण से यह भी साबित फ़रमाया कि इस्लाम विश्वव्यापी शान्ति की स्थापना का करने का सब से अधिक दावा करने वाले है और उस का दहशतगर्दी से कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं। इस्लाम की वास्तविक तस्वीर दुनिया के सामने पेश करने और इस्लाम के चेहरे से जिहाद और दहशतगर्दी के इल्ज़ाम को मिटाने में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का एक बिलकुल अलग तथा स्पष्ट स्थान है। इस विषय पर दुनिया की विभिन्न पार्लीमैंटों और मशहूर संस्थाओं में आप ने लैक्चर दिए। 22 अक्तूबर 2007 ई को आपने ब्रिटिश पार्लीमैंट दी हाऊस आफ़ कॉमन लंदन में ख़िताब फ़रमाया। दूसरी बार इसी पार्लीमैंट में आपने 11 जून 2013 ई को ख़िताब फ़रमाया। कैपिटल हिल अमरीका में 27 जून 2012 ई को,जर्मनी के मिल्ट्री हेडक्वार्टर में 30 मई 2012 ई को, यूरोपियन पार्लीमैंट (बरसल्ज़ बैलजीयम में 4 दिसम्बर 2012 ई को , न्यूज़ीलैंड की पार्लीमैंट में 4 नवम्बर 2013 ई को ,हॉलैंड की नैशनल पार्लीमैंट में 6 अक्तूबर 2015 ई को , कैनेडीयन पार्लीमैंट (पार्लीमैंट हाल में 17 अक्तूबर 2016 ई को आप ख़िताब फ़र्मा चुके हैं। दुनिया के इन मशहूर सदनों में इस्लामी शिक्षा की महानता वर्णन करना बहुत ही बहादुरी और हिम्मत का काम है और यह सिर्फ़ ख़ुदा का ख़लीफ़ा ही कर सकता है

पृष्ठ 33 पर शेष

विषय सूची

1	सम्पादकीय	1
2	पवित्र कुरआन	2
3	पवित्र हदीस	3
4	कलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम	4
5	नज़म हजरत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम	5
6	उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो	7
7	उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो	8
8	उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला अन्हो	9
9	उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रज़ी रहमहुल्लाह तआला अन्हो	10
10	उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अन्हो	11
11	हक़ीक़ी और स्थायी विश्व शान्ति की स्थापना	12
12	अंग्रेज़ी हुकूमत से तलवार का जिहाद ना करने के कारण	17
13	जिहाद की हक़ीक़त क़ुरआन मजीद की आयतों की रोशनी में	23
14	जिहाद का वास्तविक अभिप्राय आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की रोशनी में	26
15	जिहाद के ग़लत नज़रिया के बुरे नतीजे और इस का हल	28

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

और अल्लाह की राह में उनसे क़िताल करो जो तुम से क़िताल करते हैं और ज़्यादती ना करो। नि:सन्देह अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता।

अल्लाह तआला के उपदेश

अल्लाह तआला के रास्ता में जिहाद का आदेश

وَ جَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ (79 सूरह अल हज्ज)

अनुवाद: और अल्लाह के सम्बन्ध में जिहाद करो जैसा कि इस के जिहाद का हक़ है

जिहाद की हक़ीक़त

وَ الَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَ اِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ (अलअनकबूत 70)

अनुवाद::और वे लोग जो हमारे बारे में कोशिश करते हैं हम ज़रूर उन्हें अपनी राहों की तरफ़ हिदायत देंगे और नि:सन्देह अल्लाह एहसान करने वालों के साथ है।

जिहाद की क़िस्में (कुरआन के साथ जिहाद)

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا (अलफ़ुर्कान 53)

अनुवाद::अत: काफ़िरों की पैरवी ना कर और इस (क़ुरआन के द्वारा उन से एक बड़ा जिहाद कर)

माल के साथ जिहाद

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا اُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ (अल-अनफ़ाल 73)

अनुवाद::नि:सन्देह वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने हिज्रत की और अपने मालों और जानों के साथ अल्लाह की राह में जिहाद किया और वे लोग जिन्होंने (मुहाजरीन को) पनाह दी और (उनकी मदद की, यही लोग हैं जिनमें से कुछ कुछ के दोस्त हैं।)

तलवार के साथ जिहाद, मज़हबी आज़ादी और उपास्ना स्थलों की सुरक्षा

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۙ

(अल-हज्ज 40-41)

अनुवाद: उन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ क़िताल किया जा रहा है (क़िताल की) इजाज़त दी जाती है क्योंकि उन पर ज़ुल्म किए गए। और नि:संदेह अल्लाह उनकी मदद पर पूरा सामर्थ्य रखता है।(अर्थात वे लोग जिन्हें उनके घरों से अकारण निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है। और अगर अल्लाह की तरफ़ से लोगों की प्रतिरक्षा उन में से कुछ को कुछ दूसरों से भिड़ा कर ना की जाती तो राहिबों के घर तबाह कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के उपासना स्थल भी और मस्जिदें भी जिनमें बहुत अधिक अल्लाह का नाम लिया जाता है। और नि:सन्देह अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है। नि:सन्देह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और) कामिल ग़लबा वाला है।

धर्म में कोई जबर नहीं

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَ اللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ○ (अल-बक़र::257)

अनुवाद: धर्म में कोई जबर नहीं। नि:सन्देह हिदायत गुमराही से खुल कर स्पष्ट हो चुकी। अत: जो कोई शैतान का इन्कार करे और अल्लाह पर ईमान लाए तो यक़ीनन उसने एक ऐसे मज़बूत कड़े को पकड़ लिया जिसका टूटना संभव नहीं। और अल्लाह बहुत सुनने वाला (और) स्थायी ज्ञान रखने वाला है।

जो चाहे ईमान ले आए और जो चाहे इन्कार कर दे

وَ قُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۟ فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّ مَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ (अल-कहफ़30)

अनुवाद: और कह दे कि हक़ वही है जो तुम्हारे रब की तरफ़ से हो। अत: जो चाहे वह ईमान ले आए और जो चाहे वह इन्कार कर दे

अल्लाह की राह में क़िताल करो और हद से मत बढ़ो

وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَ لَا تَعْتَدُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ (अल-बक़र:191)

अनुवाद:: और अल्लाह की राह में उनसे क़िताल करो जो तुम से क़िताल करते हैं और ज़्यादती ना करो। नि:सन्देह अल्लाह ज़्यादती करने वालों को पसन्द नहीं करता।

जंग में किसी किस्म की ज़्यादती जायज़ नहीं

وَ اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَ اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ وَ الْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَ لَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ ﴿۱۹۲﴾ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ

(अल-बक़र:191-192)

अनुवाद::और (युद्ध के समय) उन्हें क़तल करो जहां कहीं भी तुम उन्हें पाओ और उन्हें वहां से निकाल दो-जहाँ से तुम्हें उन्होंने निकाला था। और फ़ित्ना क़तल से ज़्यादा संगीन होता है। और उनसे मस्जिद हराम के पास क़िताल ना करो यहां तक कि वे तुम से वहां क़िताल करें। अत: अगर वे तुमसे युद्ध करें तो फिर तुम उन को क़तल करो। काफ़िरों का ऐसा ही बदला होता है। अत: अगर वे रुक जाएं तो नि:सन्देह अल्लाह बहुत मग़फ़िरत करने (और) बार-बार रहम करने वाला है।

जंग का मक़सद मज़हबी आज़ादी की स्थापना

وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّ يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ؕ فَاِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ (अल-बक़र:194)

अनुवाद::और उनसे युद्ध करते रहो यहां तक कि फ़ित्ना बाक़ी ना रहे और धर्म (धारण करना) अल्लाह के लिए हो जाए। अत: अगर वे रुक जाएं तो (ज़्यादती करने वाले) ज़ालिमों के सिवा किसी पर ज़्यादती नहीं करनी।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे रहमहुल्लाह फ़रमाते हैं :

وَ قٰتِلُوْهُمْ में उन लोगों से लड़ने का आदेश है जो लोगों को इर्तिदाद पर मजबूर करते हैं। अत: जो तलवार के ज़ोर से इर्तिदाद पर मजबूर करें उनसे प्रतिरक्षात्मक जंग जायज़ है यहां तक कि वे रुक जाए।

☆ ☆ ☆

हे लोगो दुश्मन से मुड़भेड़ की आरज़ू ना करो , अल्लाह तआला से ख़ैर तथा आफ़ियत की दुआ माँगो, लेकिन जब तुम को दुश्मन का मुक़ाबला करना ही पड़े तो सब्र को धारण करो

(उपदेश आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी किसी को नहीं मारा

عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ مَا ضَرَبَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ شَيْئًا قَطُّ بِيَدِهٖ وَلَا امْرَأَةً وَلَا خَادِمًا اِلَّا اَنْ يُّجَاهِدَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَمَا نِيْلَ مِنْهُ شَيْئٌ قَطُّ فَيَنْتَقِمَ مِنْ صَاحِبِهٖ اِلَّا اَنْ يُّنْتَهَكَ شَيْئٌ مِنْ مَحَارِمِ اللهِ فَيَنْتَقِمَ لِلّٰهِ عَزَّ وَجَلَّ۔

(मुस्लिम ,किताबुल फ़ज़ाइल)

अनुवाद: हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी किसी को नहीं मारा, ना किसी औरत को ना ख़ादिम को। हां अल्लाह तआला के रास्ते में आप ने ख़ूब जिहाद किया। आपको जब कभी किसी ने तकलीफ़ पहुंचाई तो भी आप ने कभी इस से बदला नहीं लिया। हाँ जब अल्लाह तआला के किसी सम्मान योग्य मुक़ाम का अपमान और बे-हुरमती की जाती तो फिर आप अल्लाह तआला के लिए बदला लेते।

कौन सा कर्म अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द है।

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مَسْعُوْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ سَاَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَيُّ الْعَمَلِ اَحَبُّ اِلَى اللهِ تَعَالٰى ؟ قَالَ : اَلصَّلٰوةُ عَلٰى وَقْتِهَا : قُلْتُ ثُمَّ اَيٌّ ؟ قَالَ : بِرُّ الْوَالِدَيْنِ، قُلْتُ : ثُمَّ اَيٌّ ؟ قَالَ : اَلْجِهَادُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ۔

(बुख़ारी ,किताबुल जिहाद)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि ब्यान करते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा। कौन सा कर्म अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द है। आप ने फ़रमाया। वक़्त पर नमाज़ पढ़ना। मैंने निवेदन किया कि इस के बाद कौन सा? आप ने फ़रमाया। माँ बाप से नेक सुलूक करना। फिर मैंने अर्ज़ की कि इस के बाद कौन सा? आप ने फ़रमाया। अल्लाह तआला के रास्ता में जिहाद करना। अर्थात ख़ुदा तआला के धर्म की इशाअत के लिए पूरी पूरी कोशिश करना।

अपने मालों अपनी जानों और अपनी ज़बानों के द्वारा जिहाद करो

عَنْ اَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : جَاهِدُوا الْمُشْرِكِيْنَ بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ وَاَلْسِنَتِكُمْ۔

(अबू दाऊद, किताबुल जिहाद भाग 1 पृष्ठ 339)

अनुवाद: हज़रत अनस रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुशरिकों से अपने मालों अपनी जानों और अपनी ज़बानों के द्वारा जिहाद करो।

عَنْ مُعَاذٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَلْغَزْوُ غَزْوَانِ فَاَمَّا مَنِ ابْتَغٰى وَجْهَ اللهِ وَاَطَاعَ الْاِمَامَ وَاَنْفَقَ الْكَرِيْمَةَ وَيَاسَرَ الشَّرِيْكَ وَاجْتَنَبَ الْفَسَادَ فَاِنَّ نَوْمَهٗ وَنَبْهَهٗ اَجْرٌ كُلُّهٗ وَاَمَّا مَنْ غَزَا فَخْرًا وَرِيَاءً وَسُمْعَةً وَعَصَى الْاِمَامَ وَاَفْسَدَ فِي الْاَرْضِ فَاِنَّهٗ لَمْ يَرْجِعْ بِالْكَفَافِ۔

(मौता इमाम मालिक, किताबुल जिहाद , पृष्ठ 176)

अनुवाद: हज़रत मआज़ रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ग़ज़वा और जिहाद में दो तरह के इन्सान शामिल होते हैं। एक वह आदमी जो ख़ुदा की रज़ा के लिए जिहाद करता है इमाम की इताअत करता है अपना उम्दा माल ख़ुदा की राह में ख़र्च करता है। अपने साथी के साथ नरम सुलूक करता है और फ़ित्ना तथा फ़साद से बचा रहता है ऐसे आदमी को सोने और जागने सब हालात में सवाब मिलता है। दूसरा वह आदमी है जो गर्व और नाम के लिए जिहाद में शामिल होता है। इमाम की ना-फ़रमानी करता और ज़मीन में फ़ित्ना तथा फ़साद फैलाता है। ऐसा आदमी बेनसीब और ना-मुराद है कुछ भी हासिल ना कर पाएगा

हे लोगो दुश्मन से मुड़भेड़ की आरज़ू न करो

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ اَوْفٰى رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا اَنَّ رَسُوْلَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِيْ بَعْضِ اَيَّامِهِ الَّتِيْ لَقِيَ فِيْهَا الْعَدُوَّ يَنْتَظِرُ حَتّٰى اِذَا مَالَتِ الشَّمْسُ قَامَ فِيْهِمْ فَقَالَ : يَاَيُّهَا النَّاسُ لَا تَتَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ، وَاسْاَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ، فَاِذَا لَقِيْتُمُوْهُمْ فَاصْبِرُوْا، وَاعْلَمُوْا اَنَّ الْجَنَّةَ تَحْتَ ظِلَالِ السُّيُوْفِ، ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اَللّٰهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ وَمُجْرِيَ السَّحَابِ، وَهَازِمَ الْاَحْزَابِ اهْزِمْهُمْ وَانْصُرْنَا عَلَيْهِمْ

(मुस्लिम, किताबुल जिहाद)

अनुवाद: हज़रत अब्दुल्लाह बिन औफ़ रज़ि ब्यान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन दिनों में जबकि आप को एक दुश्मन से जंग लड़ना थी। सूरज ढलने का इंतिज़ार किया और फिर आप खड़े हुए और बतौर नसीहत फ़रमाया। लोगो! दुश्मन से मुड़भेड़ की आरज़ू ना करो। अल्लाह तआला से ख़ैर तथा आफ़ियत की दुआ माँगो। लेकिन जब तुमको दुश्मन का मुक़ाबला करना ही पड़े तो सब्र का मुज़ाहरा करो और समझ लो कि जन्नत तलवारों के साय में है। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआ मांगी। हे अल्लाह तू किताब नाज़िल करने वाला है , बादलों को चलाने वाला है दुश्मन की जमाअतों को शिकस्त देने वाला है अत: तू इस दुश्मन को शिकस्त दे और उनके मुक़ाबला में हमारी मदद फ़र्मा।

अफ़ज़ल जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने इन्साफ़ की बात करना है

عَنْ اَبِيْ سَعِيْدِ نِا لْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: اَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ عَدْلٍ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ۔

(तिरमिज़ी किताबुल फ़ितन)

अनुवाद: हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया बेहतरीन जिहाद ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ और इन्साफ़ की बात कहना है।

मोमिन कभी तलवार से जिहाद करता है और कभी ज़बान से

عَنْ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ اَنَّهٗ قَالَ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ اِنَّ اللهَ تَعَالٰى قَدْ اَنْزَلَ فِي الشِّعْرِ مَا اَنْزَلَ ، فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : اِنَّ الْمُؤْمِنَ يُجَاهِدُ بِسَيْفِهٖ وَلِسَانِهٖ وَالَّذِيْ نَفْسِيْ بِيَدِهٖ لَكَاَنَّمَا تَرْمُوْنَهُمْ بِهٖ نَضْحَ النَّبْلِ

(मिशकात,बाबुल-ब्यान)

अनुवाद: हज़रत काब बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर शेअर और शायरों के बारे में जो अल्लाह तआला ने नाज़िल फ़रमाया है इस का ज्ञान तो हुज़ूर को है (फिर मैं किस तरह अशआर के माध्यम से कुफ़्फ़ार की हजव लिखों इस पर आप ने फ़रमाया मोमिन कभी तलवार से जिहाद करता है और कभी ज़बान से। इस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ा में मेरी जान है तुम इस वक़्त (हिजू अशआर के द्वार) एक तरह से उन्हें तीरों से छलनी कर रहे हो।

यह एतराज़ कि इस्लाम ने धर्म को जबर से फैलाने के लिए तलवार उठाई है निहायत बे-बुनियाद और लज्जा योग्य इल्ज़ाम है

यह उन लोगों का ख़्याल है जिन्हों ने द्वेष से अलग हो कर क़ुरआन और हदीस और इस्लाम की प्रामाणिक तारीख़ों को नहीं देखा बल्कि झूठ और आरोप लगाने से पूरा पूरा काम लिया है।

उपदेश हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

यह स्पष्ट है कि इस्लाम ने कभी जब्र (बल प्रयोग) करने की बात नहीं सिखाई। यदि पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस की समस्त पुस्तकों और इतिहास की पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखा जाए और जहां तक इंसान के लिए संभव है चिंतन से पढ़ा या सुना जाए तो इतनी विशाल जानकारियों के पश्चात् ठोस विश्वास के साथ ज्ञात होगा कि यह आपत्ति कि जैसे इस्लाम ने धर्म को बल प्रयोग फैलाने के लिए तलवार उठाई है नितान्त निराधार तथा लज्जाजनक आरोप है और यह उन लोगों का विचार है जिन्होंने पक्षपात एवं द्वेष भावना से अलग होकर क़ुर्आन, हदीस तथा इस्लाम के विश्वसनीय इतिहासों को नहीं देखा अपितु झूठ और लांछन लगाने से पूरा-पूरा काम लिया है, परन्तु मैं जानता हूं कि अब वह युग निकट आता जाता है कि सच के भूखे और प्यासे इन लांछनों की वास्तविकता जान लेंगे। क्या उस धर्म को हम बलात् का धर्म कह सकते हैं जिसकी किताब क़ुर्आन में स्पष्ट तौर पर यह निर्देश है कि لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ अर्थात् धर्म में सम्मिलित करने के लिए बलात् वैध नहीं। क्या हम उस महान नबी पर बलात का आरोप लगा सकते हैं जिसने मक्का के तेरह वर्षों में अपने समस्त साथियों को दिन-रात यही परामर्श और उपदेश दिया कि बुराई का मुकाबला न करो या धैर्य धारण करते रहो। हां जब शत्रुओं की बुराई सीमा से अधिक हो गई तथा इस्लाम धर्म को मिटा देने के लिए समस्त जातियों ने प्रयास किया तो उस समय ख़ुदा के स्वाभिमान ने चाहा कि जो लोग तलवार उठाते हैं उनका तलवार से ही वध किया जाए अन्यथा पवित्र क़ुर्आन ने जब्र या बलात् की शिक्षा कदापि नहीं दी। यदि जब्र की शिक्षा होती तो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथी जब्र की शिक्षा के कारण इस योग्य न होते कि परीक्षाओं के अवसर पर सच्चे ईमानदारों की भांति श्रद्धा दिखा सकते, परन्तु हमारे सय्यद व मौला नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा की वफादारी एक ऐसी बात है जिसे वर्णन करने की हमें आवश्यकता नहीं। यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि उनकी श्रद्धा और वफादारी के नमूने इस श्रेणी पर प्रकटन में आए कि दूसरी जातियों में उनका उदाहरण मिलना कठिन है।

इस वफ़ादार जाति ने तलवारों के नीचे भी अपनी वफ़ादारी तथा श्रद्धा को नहीं छोड़ा अपितु अपने महान एंव पवित्र नबी की मित्रता में वह श्रद्धा दिखाई कि मनुष्य में वह श्रद्धा नहीं आ सकती जब तक ईमान से उसका दिल तथा सीना प्रकाशित न हो। अत: इस्लाम में जब्र का हस्तक्षेप नहीं। इस्लाम के युद्ध तीन प्रकारों से बाहर नहीं

(1) प्रतिरक्षा के तौर पर अर्थात अपनी स्वायत्तता की रक्षा के तौर पर।

(2) दण्ड के तौर पर अर्थात खून के बदले खून।

(3) स्वतंत्रता की स्थापना के तौर पर अर्थात् उन युद्ध करने वालों की शक्ति को तोड़ने के लिए जो मुसलमान होने पर वध करते थे।

अत: जिस अवस्था में इस्लाम में यह निर्देश ही नहीं कि किसी व्यक्ति को जब्र और वध की धमकी से धर्म में सम्मिलित किया जाए तो फिर किसी खूनी महदी या खूनी मसीह की प्रतीक्षा करना सर्वथा व्यर्थ तथा बेकार है, क्योंकि संभव नहीं कि क़ुर्आनी शिक्षा के विपरीत कोई ऐसा मनुष्य भी संसार में आए जो तलवार के साथ लोगों को मुसलमान करे। यह बात ऐसी न थी कि समझ में न आ सकती या उसके समझने में कुछ कठिनाइयां होतीं किन्तु मूर्ख लोगों को हृदय की लोलुपताओं ने इस आस्था की ओर झुकाया है क्योंकि हमारे अधिकतर मौलवियों को यह धोखा लगा हुआ है। वे विचार करते हैं कि महदी की लड़ाइयों के कारण बहुत सा धन उनको प्राप्त होगा यहां तक कि वे संभाल नहीं सकेंगे और चूंकि आजकल इस देश के अधिकांश मौलवी बहुत दरिद्र हैं इस कारण भी वे ऐसे महदी की दिन-रात प्रतीक्षा कर रहे हैं कि कदाचित् इसी के द्वारा उनकी हार्दिक इच्छाएं पूरी हों। इसलिए जो व्यक्ति ऐसे महदी के आने से इन्कार करे ये लोग उसके शत्रु हो जाते हैं और उसे तुरन्त काफ़िर ठहरा दिया जाता तथा इस्लाम के दायरे से बाहर समझा जाता है। अत: मैं भी इन्हीं कारणों से इन लोगों की दृष्टि में काफ़िर हूं क्योंकि ऐसे ख़ूनी महदी तथा खूनी मसीह के आने को नहीं मानता हूं अपितु इन व्यर्थ आस्थाओं को सख़्त घृणा तथा नफ़रत से देखता हूं और मुझे काफ़िर कहने का केवल यही कारण नहीं कि मैंने ऐसे काल्पनिक मसीह के आने से इन्कार कर दिया है जिस पर उनकी आस्था है अपितु एक कारण यह भी है कि मैंने ख़ुदा तआला से इल्हाम पा कर इस बात की सार्वजनिक घोषणा की है कि वह वास्तविक मसीह मौऊद वही वास्तव में महदी भी है जिसके आने का शुभ सन्देश इंजील और क़ुर्आन में पाया जाता है तथा हदीसों में भी उसके आने का वादा दिया गया है वह मैं ही हूं किन्तु बिना तलवारों तथा बन्दूकों के और ख़ुदा ने मुझे आदेश दिया है कि नर्मी, धैर्य, सहनशीलता तथा विनम्रता के साथ उस ख़ुदा की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करूं जो सच्चा, अनश्वर, अपरिवर्तनीय ख़ुदा है तथा पूर्ण पवित्रता, पूर्ण सहनशीलता, पूर्ण दया तथा पूर्ण न्याय रखता है।

(मसीह हिन्दोस्तान में, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 15 पृष्ठ 11)

कुछ मुसलमान जिनमें अहले हदीस का वह समुदाय भी है जिसको वहाबी भी कहते हैं उनकी यह आस्थाएं कि जो ख़ूनी महदी और ख़ूनी मसीह मौऊद के बारे में उनके हृदयों में हैं उनकी नैतिक अवस्थाओं पर बहुत ही बुरा प्रभाव डाल रही हैं, यहां तक कि वे इस बुरे प्रभाव के कारण न किसी अन्य जाति से नेक नीयत, मैत्री और ईमानदारी के साथ रह सकते हैं और न किसी अन्य सरकार के अधीन सच्चे और पूर्ण आज्ञापालन एवं वफ़ादारी से जीवन व्यतीत कर सकते हैं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि ऐसी आस्था गंभीर आपत्ति का स्थान है कि ग़ैर क़ौमों पर इतना बल प्रयोग किया जाए कि या तो अविलम्ब मुसलमान हो जाएं या वध कर दिए जाएं और प्रत्येक अन्तरात्मा बड़ी आसानी से समझ सकती है कि इससे पूर्व कोई व्यक्ति किसी धर्म की सच्चाई को समझ ले और उसकी नेक शिक्षा और खूबियों से परिचित हो जाए ऐसे ही जब्र, बल प्रयोग और वध की धमकी से उसे अपने धर्म में सम्मिलित करना नितान्त अप्रिय ढंग है और ऐसे ढंग से धर्म की उन्नति क्या होगी अपितु इसके विपरीत प्रत्येक विरोधी को आपत्ति करने का अवसर प्राप्त होता है और ऐसे सिद्धान्तों का अन्तिम परिणाम यह है कि मानव जाति की हमदर्दी हृदय से पूरी तरह उठ जाए तथा दया और न्याय जो मानवता का एक बड़ा आचरण है समाप्त हो जाए और उसके स्थान पर द्वेष और दुर्भावना बढ़ती जाए और केवल

दरिंदगी शेष रह जाए तथा उच्च आचरणों का नाम व निशान न रहे। किन्तु स्पष्ट है कि ऐसे सिद्धान्त उस ख़ुदा की ओर से नहीं हो सकते जिसकी प्रत्येक पकड़ समझाने के अन्तिम प्रयास के पूर्ण हो जाने के पश्चात् है।

(मसीह हिन्दुस्तान में, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 15 पृष्ठ 7)

इस ज़माना में भीतरी जंग के नमूने दिखाने अभीष्ट हैं

अब इस ज़माना में जिसमें हम हैं जंग ज़ाहिरी की कुछ भी ज़रूरत और आवश्यकता नहीं। बल्कि इन आख़री दिनों में भीतरी जंग के नमूने दिखाने अभीष्ट थे और रुहानी मुक़ाबला समक्ष था। क्योंकि उस वक़्त भीतरी इर्तिदाद और इलहाद के प्रकटन के लिए बड़े बड़े सामान और मध्यम बनाए गए। इसलिए उनका मुक़ाबला भी इसी किस्म के असलहों से ज़रूरी है। क्योंकि आजकल अमन तथा शान्ति का ज़माना है और हम को हर तरह की सुविधा और अमन हासिल है। आज़ादी से हर आदमी अपने मज़हब का प्रकाशन और तब्लीग़ और आदेशों को पूर्ण कर सकता है। फिर इस्लाम जो अमन का सच्चा समर्थक है, बल्कि वास्तव में अमन और सलामती और प्रेम को फैलाने वाला ही इस्लाम है क्योंकर इस अमन तथा आज़ादी के ज़माना में इस पहले नमूना को दिखाना पसंद कर सकता था ? अत: आजकल वही दूसरा नमूना अर्थात रुहानी मुजाहिदा अभीष्ट है क्योंकि

कि हलवा चू यकबार ख़रन्द व बस

मौजूदा ज़माना में जिहाद

एक और बात भी है कि इस पहले नमूना के दिखाने में एक और बात भी समक्ष थी। अर्थात इस वक़्त बहादुरी का इज़हार भी मक़सूद था जो इस वक़्त की दुनिया में सबसे ज़्यादा प्रशंसनीय और प्यारा गुण समझा जाता था और इस वक़्त तो जंग एक फ़न हो गया है कि दूर बैठे हुए भी एक आदमी तोप और बंदूक़ चला सकता है। उन दिनों में सच्चा बहादुर वह था जो तलवारों के सामने सीना निकालता था। और आजकल का जंग का फ़न तो बुज़दिलों का पर्दापोश है। अब बहादुरी का काम नहीं बल्कि जो आदमी जंग के नए माध्यम और नई तोपें इत्यादि रखता और चला सकता है वे कामयाब हो सकता है। इस जंग का मुद्दा और मक़सद मोमिनों के छुपे हुए बहादुरी के माद्दा का इज़हार था और ख़ुदा तआला ने जैसा चाहा ख़ूब तरह उसे दुनिया पर ज़ाहिर किया। अब उस की ज़रूरत नहीं रही इसलिए कि अब जंग ने फ़न और मकीदत और खदीयत की शक्ल धारण कर ली है और नए नए जंग के हथियार और पेचदार अस्त्र ने इस क़ीमती और गर्व के योग्य गुण को ख़ाक में मिला दिया है। इस्लाम के आरम्भ में प्रतिरक्षात्मक लड़ाईयों और जिस्मानी जंगों की इसलिए भी ज़रूरत पड़ती थी कि इस्लाम की दावत करने वाले का जवाब उन दिनों में दलीलों तथा तर्कों से नहीं बल्कि तलवार से दिया जाता था। इसलिए विवश हो कर प्रत्युत्तर में तलवार से काम लेना पड़ा लेकिन अब तलवार से जवाब नहीं दिया जाता बल्कि क़लम और दलीलों से इस्लाम पर आलोचनाएं की जाती हैं। यही वजह है कि इस ज़माना में ख़ुदा तआला ने चाहा है कि सैफ (तलवार) का काम क़लम से लिया जाए और लेखनी से मुक़ाबला कर के मुख़ालिफ़ों को पस्त किया जाए। इसलिए अब किसी के योग्य नहीं कि क़लम का जवाब तलवार से देने की कोशिश करे।

गर हिफ़्ज़ मुरातिब नकनी ज़िंदीक़ी

इस वक़्त क़लम की ज़रूरत है

इस वक़्त जो ज़रूरत है वह निसन्देह समझ लो। तलवार की नहीं बल्कि क़लम की है। हमारे मुख़ालिफ़ीन ने इस्लाम पर जो शंकाएं की हैं और विभिन्न साईंसों और औज़ारों की दृष्टि से अल्लाह तआला के सच्चे मज़हब पर हमला करना चाहा है। उसने मुझे मुतवज्जा किया है कि मैं क़लम का असलाह पहन कर इस साईंस और इलमी तरक़्क़ी के रणक्षेत्र में उतरूं और इस्लाम की रुहानी बहादुरी और बातिनी क़ुव्वत का करिश्मा भी दिखाओं। मैं कब इस मैदान के योग्य हो सकता था? यह तो सिर्फ अल्लाह तआला का फ़ज़ल है और इस की बेहद इनायत है कि वह चाहता है कि मेरे जैसे विनीत इन्सान के हाथ से इस के धर्म की इज़्ज़त ज़ाहिर हो। मैंने एक वक़्त उन आरोपों और हमलों को गिना था जो इस्लाम पर हमारे मुख़ालिफ़ीन ने किए हैं। उनकी संख्या उस वक़्त मेरे ख़्याल और अंदाज़ा में तीन हज़ार हुई थी और मैं समझता हूँ कि अब तो और भी संख्या बढ़ गई होगी। कोई यह ना समझ ले कि इस्लाम की बुनियाद ऐसी कमज़ोर बातों पर है कि इस पर तीन हज़ार एतराज़ वारिद हो सकता है। नहीं ऐसा हरगिज़ नहीं। ये आरोप तो बुरा चाहने वालों और नादानों की नज़र में आरोप हैं मगर मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि मैंने जहां उन आरोपों को गिना वहां यह भी ग़ौर किया है कि इन आरोपों की तह में दरअसल बहुत ही दुर्लभ सच्चाइयां मौजूद हैं जो अन्धेपन के कारण उनको दिखाई नहीं दें और हक़ीक़त में यह ख़ुदा तआला की हिक्मत है कि जहां अन्धा आरोप लगाने वाला आकर अटका है वहीं हक़ायक़ तथा मआरिफ़ का छुपा हुआ ख़ज़ाना रखा है।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 49 से 51 प्रकाशन 2018 कादियान)

☆ ☆ ☆

कलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इशाअते दीन बुज़ूर-ए-शमशीर हराम है

अब छोड़ दो जिहाद[1] का ए दोस्तो ख़्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
अब आ गया मसीह जो दीं का इमाम है
दीं की तमाम जंगों का अब इख़तताम है
अब आसमां से नूरे ख़ुदा का नुज़ूल है
अब जंग और जिहाद का फ़तवा फ़ुज़ूल है
दुश्मन है वह ख़ुदा का जो करता है अब जिहाद
मुनकिर नबी का है जो यह रखता है एतिक़ाद
क्यों छोड़ते हो लोगो नबी की हदीस को
जो छोड़ता है छोड़ दो तुम इस ख़बीस को
क्यों भूलते हो तुम यज़अउल हरब की ख़बर
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोल कर
फ़र्मा चुका है सय्यद कौनैन मुस्तफ़ा
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इलतिवा
जब आएगा तो सुलह को वह साथ लाएगा
जंगों के सिलसिले को वह यकसर मिटाएगा
पीयेंगे एक घाट पे शेर और गोस्पंद्
खेलेंगे बच्चे साँपों से बे-ख़ौफ़ बे-गज़ंद
यानी वह वक़्त अमन का होगा ना जंग का
भूलेंगे लोग मशग़ला तीरो तफ़ंग का
यह हुक्म सुन के भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा
इक मोजिज़ा के तौर से यह पेशगोई है
काफ़ी है सोचने को अगर अहल कोई है

अल-क़िस्सा यह मसीह के आने का है निशाँ
कर देगा ख़त्म आ के वह दीं की लड़ाईयां
ज़ाहिर हैं ख़ुद निशाँ कि ज़माँ वह ज़माँ नहीं
अब क़ौम में हमारी वह ताबो तवाँ नहीं
अब तुम में ख़ुद वह क़ुव्वतो ताक़त नहीं रही
वह सलतनत वह रोब वह शौकत नहीं रही
वह नाम वह नमूद वह दौलत नहीं रही
वह अज़्म मुकबला ना वह हिम्मत नहीं रही
वह इलम वह सलाह वह इफ़्फ़त नहीं रही
वह नूर और वह चांद सी तलअत नहीं रही
वह दर्द वह गुदाज़ वह रिक़्क़त नहीं रही
ख़ल्क़े ख़ुदा पे शफ़क़तो रहमत नहीं रही
दिल में तुम्हारे यार की उल्फ़त नहीं रही
हालत तुम्हारी जाज़िब नुसरत नहीं रही
हुमुक़ आ गया है सिर में वह फ़ित्नत नहीं रही
कसल आ गया है दिल में जिलादत नहीं रही
वह इलम-ओ-मार्फ़त वह फ़िरासत नहीं रही
वह फ़िक्र वह क़ियास वह हिक्मत नहीं रही
दुनिया व दीं में कुछ भी लियाक़त नहीं रही
अब तुम को ग़ैर क़ौमों पे सबक़त नहीं रही
वह उनस वह शौक़ वह वजद वह ताअत नहीं रही
ज़ुल्मत की कुछ भी हद्दो निहायत नहीं रही
हर वक़्त झूठ सच की तो आदत नहीं रही
नूर-ए-ख़ुदा की कुछ भी अलामत नहीं रही
सौ-सौ है गंद दिल में तहारत नहीं रही
नेकी के काम करने की रग़बत नहीं रही
ख़्वाँने तही पड़ा है वह नेअमत नहीं रही
दीं भी है एक क़शर हक़ीक़त नहीं रही
मौला से अपने कुछ भी मुहब्बत नहीं रही
दिल मर गए हैं नेकी की क़ुदरत नहीं रही
सब पर यह इक बला है कि वहदत नहीं रही
एक फूट पड़ रही है मोद्दत नहीं रही
तुम मर गए तुम्हारी वह अज़मत नहीं रही
सूरत बिगड़ गई है वह सूरत नहीं रही
अब तुम में क्यों वह सैफ की ताक़त नहीं रही
भेद इस में है यही कि वह हाजत नहीं रही
अब कोई तुम पे जबर नहीं ग़ैर क़ौम से
करती नहीं है मना सलात और सौम से
हाँ आप तुमने छोड़ दिया दीं की राह को
आदत में अपनी कर लिया फ़िस्क़-ओ-गुनाह को
अब ज़िन्दगी तुम्हारी तो सब फ़ासिक़ाना है
मोमिन नहीं हो तुम कि क़दम काफिराना है
ए क़ौम ! तुम पे यार की अब वह नज़र नहीं
रोते रहो दुआओं में भी वह असर नहीं
क्योंकर हो वह नज़र कि तुम्हारे वह दिल नहीं
शैताँ के हैं ख़ुदा के प्यारे वह दिल नहीं
तक़्वा के जामे जितने थे सब चाक हो गए
जितने ख़याल दिल में थे नापाक हो गए
कुछ-कुछ जो नेक मर्द थे वह ख़ाक हो गए
बाकी जो थे वह ज़ालिम-ओ-सफ़्फ़ाक हो गए
अब तुम तो ख़ुद ही मौरिद-ए-खश्म-ए-ख़ुदा हुए
इस यार से ब-शामते इस्याँ जुदा हुए
अब ग़ैरों से लड़ाई के माने ही क्या हुए
तुम ख़ुद ही ग़ैरीन के महल्ले सज़ा हुए
सच्च सच्च कहो कि तुम में अमानत है अब कहाँ
वह सिदक़ और वह दीनो दियानत है अब कहाँ
फिर जबकि तुम मैं ख़ुद ही वह ईमां नहीं रहा
वह नूर मोमिनाना वह इरफ़ाँ नहीं रहा
फिर अपने कुफ्र की ख़बर ए क़ौम लीजिए
आयत अलैकुम अनफ़्सकुम याद कीजिए
ऐसा गुमाँ कि महदी ख़ूनी भी आएगा
और काफ़िरों के क़तल से दें को बढ़ाएगा
ए ग़ाफ़िलो ये बातें सरासर दरोग़ हैं
बुहतां हैं बे सबूत हैं और बे फ़रोग़ हैं
यारो जो मर्द आने को था वो तो आ चुका
ये राज़ तुम को शमसो क़मर भी बता चुका
अब साल सतरह१७ भी सदी से गुज़र गए
तुम में से हाय सोचने वाले किधर गए
थोड़े नहीं निशाँ जो दिखाए गए तुम्हें
क्या पाक राज़ थे जो बताए गए तुम्हें
पर तुम ने उन से कुछ भी उठाया ना फ़ायदा
मुंह फेर कर हटा दिया तुमने ये माइदा
बुख़लों से यारो बाज़ भी आओगे या नहीं
ख़ू अपनी पाक साफ़ बनाओगे या नहीं
बातिल से मैल दिल की हटाओगे या नहीं
हक़ की तरफ़ रुजू भी लाओगे या नहीं
अब उज्र क्या है कुछ भी बताओगे या नहीं
मख़फ़ी जो दिल में है वह सुनाओगे या नहीं
आख़िर ख़ुदा के पास भी जाओगे या नहीं
इस वक़्त उस को मुंह भी दिखाओगे या नहीं
तुम में से जिसको दीनो दियानत से है प्यार
अब उस का फ़र्ज़ है कि वह दिल करके उस्तवार
लोगों को ये बताए कि वक़्त-ए-मसीह है
अब जंग और जिहाद हराम और क़बीह है
हम अपना फ़र्ज़ दोस्तो अब कर चुके अदा
अब भी अगर ना समझो तो समझाएगा ख़ुदा

1 यहां जिहाद से मुराद इस्लाम को तलवार के ज़ोर से फैलाना है जो कि ग़ैर इस्लामी नज़रिया है।

(ज़मीमा तोहफ़ा गोल्ड़ व्य सफ़ा 26 प्रकाशित 1902 ई)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

जिहाद उस वक़्त तक जायज़ है कि मोमिन कुफ़्फ़ार के फ़ित्ना में ना रहे और जो ईमान ला चुके हैं वह अपनी इबादत बिना किसी ख़ौफ़ तथा रोक के अदा कर सकें।

(उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो)

अल्लाह तआला जो नबियों को भेजता है तो अमन क़ायम करने के लिए यह इच्छा नहीं होती कि लोगों को पकड़ कर मुसलमान बनाएं।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो सूरत अल-बकर 194 की व्याख्या में फ़रमाते हैं

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ:यह मसला ख़ूब याद रखना चाहिए कि अल्लाह धर्मों का इबताल नहीं चाहता बल्कि क़ुरआन शरीफ़ में लिखा है कि अल्लाह तआला चाहता तो सारे जहान को एक मज़हब पर क़ायम कर देता।

فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ(अल-अनाम 150)

दूसरे स्थान पर फ़रमाया

لَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ (अल-हज्ज 41)अर्थात अगर अल्लाह आदमियों की एक दूसरे से मुदाफ़अत ना करता रहता तो ईसाईयों की , मुसलमानों की , मजूसियों की, यहूदियों के उपास्ना स्थल नष्ट हो जातीं। जिससे मालूम हुआ कि धर्मों का मतभेद अल्लाह की इच्छा के अधीन है। अल्लाह तआला जो नबियों को भेजता है तो अमन क़ायम करने के लिए। यह इच्छा नहीं होती कि लोगों को पकड़ कर मुसलमान बनाएं बल्कि वह لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ(अल-बकर:257) के अधीन चलते हैं क्योंकि इन्सान उस वक़्त तक ख़ुदा के नज़दीक तो मोमिन नहीं होता जब तक कि दिल से ईमान ना लाए। और फिर ज़रूरी है कि इस के ईमान के चिन्ह उस के ज़ाहिरी कामों में प्रकट हों और कोई उस को रोक ना सके

अत: जिहाद भी इस वक़्त तक जायज़ है कि मोमिन कुफ़्फ़ार के फ़ित्ना में ना रहे और जो ईमान ला चुके हैं वे अपनी इबादत बिना किसी ख़ौफ़ तथा रोक के अदा कर सकें। वह निफ़ाक़ से काम लेने पर मजबूर ना हों बल्कि يَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ के लिए उनका धर्म हो और फ़ित्ना ना रहे।

(हक़ायक़ुल फ़ुर्कान ,भाग 1, पृष्ठ 327)

सूरतुल-हज्ज की आयत 39-40 की व्याख्या मैं आप फ़रमाते हैं

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۟ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ (सूरत उल-हज्ज 39)हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ी अल्लाह अन्हो फ़रमाते हैं اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا अल्लाह तआला ने हर चीज़ की सीमा निर्धारित कर दी है। जब इस हद से कोई चीज़ बढ़ने लगती है तो इस को दूर करने वाली चीज़ पैदा कर देता है। कुफ्र बढ़ गया है इस लिए हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह और उनकी जमाअत को पैदा कर दिया। क्योंकि वह कुफ्र करने वालों को पसन्द नहीं करता। यह ख़्याल कि कोई महदी ऐसा आएगा जो समस्त इन्सानों को मुसलमान बना लेगा एक व्यर्थ ख़्याल है। क्या वह हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर क़ुव्वत क़ुदसिया रखने वाला कोई होगा? क्या वह क़ुरआन शरीफ़ से बढ़कर किताब लाएगा? अल्लाह तआला हर चीज़ को एक हद के अंदर रखना है।

इसी तरह फ़रमाते हैं:

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۟ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ

(सूरत अल-हज्ज 40)इजाज़त दी गई उन लोगों को जिनसे लड़ाई की गई इस लिए कि वे पीड़ित हैं और अल्लाह उन्हें दुश्मन पर ग़ालिब कर देने पर क़ादिर है .... इस्लाम का ख़ुदा तआला ने दोनों तरह का ग़लबा दिखाना चाहा है। एक वक़्त था जब दुश्मन ने इस्लाम को समाप्त करने के लिए तलवार उठाई। मुसलमानों को क़तल करना शुरू कर दिया तो इस्लाम ने मुसलमानों को बग़ावत से रोक दिया कि ग़दर ना करना। इस मुल्क से निकल जाओ। जहां तकलीफ़ है !इस लिए मक्का मुअज़्ज़मा का मुल्क छोड़ दिया गया। जब दुश्मन को इस पर सब्र ना आया और उसने पीछा किया तो आख़िर इस्लाम ने तलवार उठाई और कामयाब हो गया!

फिर इस वक़्त चौदहवीं सदी में सिर्फ तर्कों के हथियार से इस्लाम से जंग शुरू हो गई इस्लाम के कारण कोई क़ौम किसी मुसलमान पर हथियारों से अब काम नहीं लेती। तो इस्लाम ने भी तर्कों तथा इसी तरह अन्य सुदृढ़ दलीलों और स्पष्ट प्रमाणों से मुक़ाबला शुरू किया।

बुत की पूजा करने वाली कौमें इस्लाम के मुक़ाबला से हार कर बुत की पूजा के दावा से रुक रही हैं और बिलकुल इस मसला में सुलह जो हो रही हैं क्योंकि इंडिया में कुछ ब्रह्मो हो गए हैं और कुछ आर्या समाज और इधर यूरोप तथा अमरीका में योनी टेरेन , फ्री थिंकरों का समुंद्र मौज मार रहा है और क्या ख़ूब हुआ। हज़रत मसीह की ख़ुदाई तबाह हो रही है मख़लूक़ पवित्र इस्लाम के मज़हब में आ रही है

जो दुनिया में नेकी है। इस के साथ कुछ कठिनाइयां भी हैं और सुख के साथ दु:ख और दु:ख के साथ सुख। अन्तिम वाले का उदाहरण प्रसव वेदना और फिर पुत्र के जन्म की है

सहाबा कराम मक्का मुअज़्ज़मा में बहुत तकलीफ़ों में थे। (1)कुछ आदमियों के एक पैर को एक ऊंट से और दूसरा पैर को दूसरे ऊंट से बांध कर अलग दिशाओं में चला कर चीरा जाता (3)कुछ औरतों की शर्मगाहों में भाला मारा है और गले से निकाला है (3)तीन वर्ष बनू हाशिम को आनाज पहुंचाने में रोकें डाली गईं (4)कुछ सहाबा को शिद्दत से गर्म किए हुए पत्थरों में लिटाया जाता था। मगर वे लोग बड़े सब्र, सुदृढ़ और हिम्मत से उन समस्त तकलीफ़ों को सहन करते।

मुहर्रम में जब इमाम हुसैन रज़ि की तकलीफ़ों का वर्णन करते हैं। मगर सहाबा रज़ि ने जो जो कष्ट उठाए हैं वे कई बार उन से बढ़कर हैं। अत: इस सब्र के बदला जिहाद की इजाज़त दी गई। यह ग़लत है आप को जत्थे का इंतज़ार था। لَا تُكَلَّفُ اِلَّا نَفْسَكَ(अन्निसा 85)का आदेश और जंग हुनैन में सब के भागने पर खड़ा रहना उस का गवाह है। अत: यह झूठ है कि इस्लाम तलवार को ज़ोर से फैलाया गया।

एक और उपकार इस्लाम ने किया जो मेरे ख़्याल में दुनिया के किसी सुधारक और मुस्लेह को नहीं सूझा वह यह है:

اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۟ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ... لَهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا

हम कई बार प्रतिरक्षा का आदेश देते हैं और इस से उद्देश्य यह है कि अगर यह ना हो तो गिरजे तबाह हो जाए। धर्मशाला और यहूदियों के उपासना स्थल तबाह हो जाए और हम नहीं चाहते कि वे तबाह हों। क्या यह सुनहरा नियम दुनिया की किसी धार्मिक किताब में पाया जाता है? अगर यह वाक्य इंजील में होता तो मसीही लोगों ने जो सुलूक अपने विरोधी लोगों से किया है वह ना होता। माइथालोजी को पढ़ो तो तुम्हें पता चलेगा कि मसीही लोगों से पहले कितने उपासना स्थल थे जिनका आज नाम तथा निशान भी नहीं। जैसे पड़ामो का महान मंदिर था जहां महान सिकन्दर पैदल हज करने आया था। मगर आज कोई नहीं बता सकता कि वह मन्दिर कहां था।

इतनी तंगदिली,ज़िद और द्वेष और ज़िद इस्लाम पसन्द नहीं करता कि उपासना स्थल गिरा दिए जाएं। मुसलमानों ने जहां आठ सौ बरस , हज़ार और ग्यारह सौ बरस भी राज किया है इस मलिक के उपासना स्थल अब तक मौजूद हैं और उनको तबाह नहीं किया। मगर बड़ी रोशनी वाली क़ौम से पूछें कि पड़ामों का मंदिर कहां था? तो नहीं बता सकते। निशान तक मिटा दिए बल्कि यरूशलम जैसी जगह जो बाइबल में भी मुक़द्दस समझी गई थी तबाह कर दी गई और वहां सूअर की क़ुर्बानी की गई। शायद कोई कह दे कि सूअर नापाक नहीं। मगर बाइबल पढ़ेंगे तो उस के ख़िलाफ़ पाएँगे।

इस के विपरीत देखो कि स्पेन और फ़िलस्तीन में कैसी वैभव तथा शौकत वाली इस्लामी सल्तनत थी। मगर देख लो पुराने से पुराने उपासना स्थल को छेड़ा नहीं। बल्कि फ़ारूक़ आज़म के ज़माना में जब वह यरूशलम तशरीफ़ ले गए तो वहां के बिशप ने कहा कि यहां नमाज़ पढ़ लो। उन्होंने फ़रमाया कि तुम बड़े अदूरदर्शी हो। अगर मैं यहां नमाज़ पढ़ूं तो मुसलमान उस को मस्जिद बना लेंगे। हमारी सरकार सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुज़ूर नजरान के ईसाई आए और इतवार का दिन था। आप ने फ़रमाया मेरी मस्जिद में गिरजा कर लो। वे लोग रोमन कैथोलिक होंगे। मगर हौसला कि साथ उनको इजाज़त दी। इस से पाया जाता था कि जहां वे एहसान आम करते थे वहां मज़हब के बाकी रखने में भी इन का मज़हब था। चाहे हिन्दुस्तान में पहली सदी हिज्री में अरब आए और कम से कम साढ़े ग्यारह सौ साल तक इस्लामी हुकूमत यहां रही .....इस लम्बे समय में हिन्दुस्तान के उपासना स्थलों पर इस्लामी सल्तनत ने क्या प्रभाव किया? उनकी मौजूदगी ख़ुद ज़ाहिर करती है

(हक़ायक़ुल फ़ुर्कान, भाग 3, पृष्ठ 154 से 157)

इलाही कलाम की मदद से लोगों को धर्म की तरफ़ बुलाओ हमारा हथियार क़ुरआन करीम ही है इस क़ुरआन की तलवार लेकर दुनिया से जिहाद के लिए निकल खड़ा हो।

(सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अस्सानी के उपदेश)

हमारा हथियार क़ुरआन करीम ही है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो कुरआन करीम की आयत اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ की व्याख्या वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"नबुव्वत के अर्थों की दृष्टि से यह अर्थ होगा कि इलाही कलाम की मदद से लोगों को धर्म की तरफ़ बुलाओ। जो दलीलें ख़ुद क़ुरआन करीम ने दी हैं। उन्हीं को पेश करो। अपने पास से ढकोस्ले ना पेश किया करो। आह! अगर इस गुर को मुसलमान समझते तो यहूदियत और ईसाइयत को खा जाते। हमारा हथियार क़ुरआन करीम ही है जिसके बारे में अल्लाह तआला फ़रमाता है: اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ (अल-फ़ुर्क़ान 5)इस क़ुरआन की तलवार लेकर दुनिया से जिहाद के लिए निकल खड़ा हो पर अफ़सोस कि आज दुनिया की हर चीज़ मुसलमान के हाथ में है लेकिन अगर नहीं तो यही तलवार जिसको लेकर निकल खड़े होने का आदेश था।

(तफ़सीर कबीर ,भाग 4 , पृष्ठ 273)

فَلَا تَعۡجَلۡ عَلَیۡہِمۡ में जिहाद के मसला को बिलकुल स्पष्ट कर दिया गया है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह अन्हो कुरआन की आयत فَلَا تَعۡجَلۡ عَلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّمَا نَعُدُّ لَہُمۡ عَدًّا (सूरत मर्यम 85)की तफ़सीर में फ़रमाते हैं

"देखो इस जगह जिहाद के बारे में कैसे स्पष्ट और अहम हिदायत दी गई है और किस तरह इस महान दृष्टिकोण का समर्थन किया गया है जो जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्तमान ज़माना में जिहाद के बारे में पेश फ़रमाया है

इस आयत में अल्लाह तआला ने बताया है कि एक ज़माना ऐसा आने वाला है जब मुसलमानों का एक हिस्सा यह कहेगा कि इस्लाम की तरक़्क़ी अब इसी तरह हो सकती है कि इन कुफ़्फ़ार से जिहाद किया जाए और उन्हें तलवार के ज़ोर से मिटाने की कोशिश की जाए मगर उनकी यह राय बिलकुल ग़लत होगी। सही और ठीक रास्ता यही होगा कि उनके मुक़ाबला में जल्दबाज़ी से काम ना लिया जाए और उनके हमलों को सब्र के साथ बर्दाश्त किया जाए और सिर्फ रुहानी तरीके धारण की जाएं अर्थात तब्लीग़ इस्लाम और दुआएं इत्यादि। अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम ने जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से दुनिया के सुधार के लिए भेजे गए थे उन्होंने लोगों के सामने यही फ़रमाया कि

यह आदेश सुन के भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा

आपने फ़रमाया कि जब मुसलमानों के पास किसी किस्म की ताक़त ही नहीं तो उन पर तलवार का जिहाद किस तरह फ़र्ज़ हो सकता है। जब वह वक़्त आएगा तो अल्लाह तआला जिस रंग में चाहेगा मुसलमानों को उनके मुक़ाबला की ताक़त प्रदान फ़र्मा देगा। बहरहाल आपने जिहाद के बारे में मुसलमानों में समय अनुकूल प्रचलित विचारों का खण्डन फ़रमाया और यही वह हक़ीक़त है जो لَا تَعۡجَلۡ ला तजअल में वर्णन की गई है।

असल बात यह है कि इस सूर: में मसीहियों की जिन तरक्कियों का ज़िक्र किया गया है वे अगले ज़माना में होने वाली थीं बल्कि हदीसों और क़ुरआन में उन्हें आख़िरी ज़माना के साथ जोड़ा गया है अत: **"ला तजअल"** से अभिप्राय रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वजूद नहीं बल्कि आइन्दा ज़माना का मुसलमान मुराद है और बताया गया है कि वह एक वक़्त मसीहियों की तरक़्क़ी को देखकर उनसे जिहाद करने के शौक़ में मुब्तला हो जाएगा अत: यह बात हैरतअंगेज़ है कि जिस ज़माना में मसीहियत मुसलमानों का शिकार थी और उनको इस से मुक़ाबला करने की ताक़त थी उस वक़्त तक तो मुसलमान उनकी तरफ़ से ग़ाफ़िल रहे और जब मसीहियत दुनिया में फैल गई तो उन्हें जिहाद का ख़्याल आया हालाँकि उस वक़्त ख़ुदा का इरादा نَعُدُّ لَہُمۡ عَدًّا वाला प्रकट हो चुका था और इस इलम के बाद मुसलमानों को चाहिए था कि पिछली ग़फ़लत पर इस्तिग़फार करते और आगे के लिए अल्लाह तआला से साफ रंग में दुआ करते कि उनके फ़ित्ना से मुसलमानों को बचाए और कुरआन का जिहाद शुरू कर देते ताकि पिछली ग़फ़लत दूर हो जाती और क़ुरआन करीम की बरकत से मसीहियत की ताक़त टूट जाती मगर उन्होंने तलवार का जिहाद का असमय इज़हार करके मसीहियों को इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोपेगंडा का मौक़ा दिया और इस से प्रभावित हो कर हज़ारों मुसलमान मसीही हो गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम एक ही आदमी थे जिन्हों ने इस कमज़ोरी की तरफ़ ध्यान दिलाया। मगर इस वजह से उन पर कुफ्र के फ़तवे लगाए गए और कहा गया कि यह आदमी इस्लामी तरक़्क़ी का दुश्मन है हालाँकि इस्लामी तरक़्क़ी का एक मात्र माध्यम इस ज़माना में इस्लाम की सही शिक्षा का प्रकाशन था ताकि ख़ुद मसीहियों में से एक हिस्सा को जीता जाए और बाक़ी हिस्सा के दिल से ग़लत-फ़हमियाँ दूर की जाएं मगर अफ़सोस कि इस ख़िदमत की वजह से आपको इतनी गालियां मुसलमानों ने दीं कि शायद किसी मामूर को इतनी प्रचुरता से और इतनी संख्या में में गालियां ना मिली होंगी .....इस ज़ुलम का बदला क़यामत के दिन हम मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से लेंगे। वह ख़ुद उन ज़ालिमों पर अपनी नाराज़गी का इज़हार करेंगे और हमारे दिलों पर तसकीन का मरहम रखेंगे। इंशा अल्लाह तआला ....बहर हाल فَلَا تَعۡجَلۡ عَلَیۡہِمۡ में जिहाद के मसला को बिलकुल स्पष्ट कर दिया गया है और अल्लाह तआला ने बताया है कि हम ने उनके लिए एक समय मुक़र्रर किया हुआ है और हम उनकी हलाकत की घड़ियाँ गिन रहे हैं। जब वह वक़्त आएगा तो हम ख़ुद पकड़ लेंगे।

(तफ़सीर कबीर, भाग 5,पृष्ठ 365)

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह की فَلَا تُطِعِ الۡکٰفِرِیۡنَ وَجَاہِدۡہُمۡ بِہٖ جِہَادًا کَبِیۡرًا तफ़सीर में फ़रमाते हैं

अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि جَاہِدۡہُمۡ بِہٖ جِہَادًا کَبِیۡرًا (अलफ़ुर्क़ान रकूअ 5) अर्थात हे मुहम्मद रसूलुल्लाह तुझे लड़ाईयां तो पेश आयेंगी लेकिन वे लड़ाईयां तेरी ज़िन्दगी का सार नहीं होंगी बल्कि तेरी ज़िन्दगी के कामों का एक बहुत छोटा सा हिस्सा होंगी। तेरी ज़िन्दगी का लक्ष्य क्या है कि क़ुरआन से अपनी क़ौम के साथ जंग कर और यह जंग भी बड़ी जंग होगी। तलवार की जंग उस के मुक़ाबला में होगी।

अब देख लो यह पेशगोई किस शान से पूरी हुई मक्का वालों को बेशक कुछ अरब क़बीलों से जंगें लड़नी पड़ी। लेकिन वह क़बीले भी छोटे थे और उन का नतीजा भी छोटा था। मगर जो जंग आपको क़ुरआन करीम के द्वारा करनी पड़ी वह अरब से भी हुई ईरान से भी हुई और फिर बाद में सारी दुनिया से हुई और हो रही है जिस दिन इस जंग का नतीजा निकलेगा सारी दुनिया के दिल इस्लाम के लिए फ़तह हो जाएंगे और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बादशाहत मैदानों और समुंद्रों को फाँदती हुई दुनिया के किनारों तक पहुंच जाएगी। उस के मुक़ाबला में ज़ाहिरी जंगों का नतीजा बहुत छोटा था मगर ताज्जुब है कि इन खुली आयतों की मौजूदगी में पश्चिमी लोग अब तक यह आरोप करते चले जा रहे हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंगो के साथ अपने दुश्मनों को पराजित किया अगर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की विजय जंगों के साथ जुड़ी थीं तो फिर क़ुरआन करीम ने इशारा में उनको छोटा क्यों कहा और कुरआन की जंग को बड़ा क्यों कहा। उसने यह क्यों फ़रमाया कि جَاہِدۡہُمۡ بِہٖ جِہَادًا کَبِیۡرًا। हे मुहमद रसूलुल्लाह तेरी असल जंग क़ुरआन करीम के हथियार से है। तू इस हथियार के साथ अपने दुश्मनों से जंग कर। यही जंग बड़ी जंग होगी।

यह अजीब बात है कि यह आयत जिस में दो जिहादों की ख़बर दी गई है एक तलवार के जिहाद को जो छोटा होगा और एक दलीलों और बराहीन के जिहाद की जो बड़ा होगा यह सूरत फुर्क़ान की आयत है जो मक्की सूरत है। मानो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अभी मक्का में ही थे। ना कोई फ़ौज आपके साथ थी। ना कोई देश आपके साथ था कि आपको ख़ुदा तआला ने बताया कि तुझे अपने मुख़ालिफ़ों के साथ लड़ाईयां पेश आएंगी कुछ तलवार की और कुछ दलीलों और बराहीन की। दलीलों और बराहीन की लड़ाईयां बड़ी होंगी और तलवार की छोटी। ख़ुद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस फ़र्क़ को वर्णन फ़रमाया है। अत: एक बार आप जिहाद से वापस आए तो आपने फ़रमाया رَجَعۡنَا مِنَ الۡجِہَادِ الۡاَصۡغَرِ اِلَی الۡجِہَادِ الۡاَکۡبَر (रद्दुल मुख़तार अलद्दुर्रुल मुख़्तार, भाग 3 पृष्ठ 235) हम एक छोटी लड़ाई से वापस आए हैं ताकि बड़ी लड़ाई अर्थात दलीलों और बराहीन की लड़ाई और क़ुरआन के प्रकाशन की लड़ाई को शुरू करें। अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी दलीलों और बराहीन की लड़ाई को बड़ी लड़ाई और तलवार की लड़ाई को छोटी लड़ाई क़रार दिया है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 7, पृष्ठ 471)

अपनी समस्त ताक़त और अपने समस्त सामर्थ्य के साथ अल्लाह तआला की राह में जिहाद करो और इस कोशिश और जिहाद को अपने कमाल तक पहुँचाओ।

(सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह के उपदेश)

अपनी समस्त क़ुव्वत और अपनी समस्त ताक़त और अपने समस्त सामर्थ्य के साथ अल्लाह तआला की राह में जिहाद करो।

इब्राहीमी दुआओं और उन भविष्यवाणियों के अनुसार जो पहली किताबों में पाई जाती थीं अल्लाह तआला ने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से एक उम्मत मुस्लिमा को क़ायम किया। जैसा कि क़ुरआन करीम सूर: हज में फ़रमाता है

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ هُوَ سَمّٰكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ (सूरत अल-हज्ज 79)

यहां अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि अपनी समस्त क़ुव्वत और अपनी समस्त ताक़त और अपनी समस्त शक्तियों के साथ अल्लाह तआला की राह में जिहाद करो और इस कोशिश और जिहाद को अपने चरम तक पहुँचाओ (حَقَّ جِهَادِهٖ)उस के हक़ को पूरा करो क्योंकि उसने तुम्हें मुज्तबा बनाया है और तुम्हें बुज़ुर्गी प्रदान की है और कामिल धर्म तुम्हें दिया है। बेहतरीन आदेश तुम्हारे लिए नाज़िल किए हैं और उन आदेशों की पैरवी करने के लिए जिन कुव्वतों और ताक़तों की ज़रूरत थी वे भी साथ ही तुम्हें प्रदान की गई हैं। इस लिए इन हुक्काम की पैरवी करने से तुम पर कोई बोझ नहीं पड़ता तुम्हारे बाप इब्राहीम की मिल्लत अल्लाह ने तुम्हें अलमुस्लेमीन का नाम दिया है। उम्मत मुस्लिमा क़रार दिया है तुम्हारे बारे में यह नाम पहली किताबों में भी प्रयोग हुआ था और क़ुरआन करीम भी तुम्हें اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ के नाम से याद करता है और यह नाम उन दुआओं के नतीजा में है जो हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने की थीं कि एक उम्मत मुस्लिमा दुनिया में क़ायम की जाए (इस अफ़ज़ल रसूल की बिअसत के साथ) और उनकी औलाद भी उम्मत मुस्लिमा में शामिल हो अत: ख़ाना काबा के उद्देश्य के साथ सम्बन्ध रखने वाली जो आयतें हैं उन में وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَا اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ की जो दुआ थी। क़ुरआन करीम सूर: हज की इस आयत में यह दावा करता है कि वह दुआ क़बूल हो गई और जो पेशगोइयां पहली किताबों में दी गई थीं उनके पूरा होने का वक़्त आ गया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हो चुके हैं और उम्मत मुस्लिमा क़ायम हो गई है और इसलिए क़ायम हुई है कि इन्सान के अंदर जो रुहानी और अख़लाक़ी क़ुव्वतें और ताकतें और शक्तियां रखी गई थीं उनके इज़हार का वक़्त आ गया है।

(ख़ुत्बात नासिर, भाग 1, पृष्ठ 732 ख़ुत्बा जुम्अ: 9 जून 1967 ई)

सारी दुनिया के एटम बम और हाईड्रोजन बम मिलकर भी एक दिल में कोई तबदीली पैदा नहीं कर सकते।

इस वक़्त अल्लाह तआला ख़िलाफ़त साल्सा के द्वारा दलीलों के साथ और आसमानी निशानों के साथ ग़लबा इस्लाम के ज़्यादा से ज़्यादा सामान पैदा करता जाता है और करता चला जाएगा। जब तक कि वह आख़िरी ग़लबा इस्लाम को हासिल नहीं हो जाएगा जिसके लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम मबऊस हुए हैं और समस्त मानव जाति जब तक इस्लाम में दाख़िल हो कर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़िदाई ना बन जाएं। इस ग़लबा के हुसूल के लिए जिस जिहाद की ज़रूरत है वह तलवार का जिहाद नहीं क्योंकि इस्लाम के ख़िलाफ़ तलवार मियान से नहीं निकाली गई। ना मज़हब को तबाह करने के लिए एटम-बम प्रयोग किया जाता है। दुश्मन क़ौम को तबाह करने के लिए एटम-बम तो प्रयोग किया जाता है और होना भी यही चाहिए क्योंकि उस की हलाकत का जिस्मों पर असर है। लेकिन मज़हब के मुक़ाबला में एटम बम ना प्रयोग किया जाता है ना प्रयोग किया जा सकता है। क्योंकि जैसा कि मैंने यूरोप को कहा अब भी बताया कि सारी दुनिया के एटम बम और हाईड्रोजन बम मिलकर भी एक दिल में कोई तबदीली पैदा नहीं कर सकते। लाखों करोड़ों को तबाह कर सकते हैं इस में कोई शक नहीं लेकिन एक दिल में वह तबदीली पैदा नहीं कर सकते। दिल में तबदीली पैदा करना अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हुआ करता है। वह फ़ज़ल अल्लाह तआला ने हमारे साथ शामिल कर दिया है।

(ख़ुत्बात नासिर,भाग 3 , पृष्ठ 247 ख़ुत्बा जुम्अ:31 जुलाई 1970 ई)

नफ़्स के सुधार और कुरआन के अनवार के माध्यम से शैतानी ज़ुलमात के ख़िलाफ़ जिहाद आपस में अनिवार्य हैं।

जहां तक जिहाद का सम्बन्ध है उसे तीन किस्मों में बांटा गया है। **पहला जिहाद** तो बुनियादी तौर पर नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद है अर्थात ऐसी नफ़्सानी इच्छाएं जो इन्सानी फ़ितरत और अल्लाह तआला की प्रसन्नता के ख़िलाफ़ हों उनका मुक़ाबला करना, ...। इस से बढ़कर यह कि उसे अपने दायरा इस्तिदाद के अंदर ऊंचाई के इंतिहाई स्थान पर पहुंचा कर अल्लाह तआला के इंतिहाई प्यार को हासिल करना यह एक बुनियादी जिहाद है जिसे जिहाद अकबर कहते हैं। यहीं से जिहाद की बुनियाद शुरू होती है और इस के ऊपर फिर दूसरे जिहाद की इमारत खड़ी होती है। जब तक नफ़्स से कामयाब जिहाद ना हो दूसरे दो जिहाद अकल की दृष्टि से संभव ही नहीं। अत: नफ़्स के ख़िलाफ़ इन्सान का जिहाद अर्थात शैतानी शंकाओं और शैतान की पैदा की गई इच्छाओं और ख़ाहिशात के ख़िलाफ़ जिहाद की कामयाबी और इस्लाह नफ़्स पर दूसरे हर दो जिहाद की कामयाबी का आधार है क्योंकि सबसे बड़ा जिहाद यही है। ...इस लिए सबसे पहले अपने नफ़्स की इस्लाह ज़रूरी है

दूसरा जिहाद क़ुरआन करीम और इस के प्रकाशन का जिहाद है और इस को जिहाद कबीर कहते हैं। यह जिहाद अकबर अर्थात नफ़्स के जिहाद से उभरता है। उनका आपस में गहरा सम्बन्ध है क्योंकि नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद कुरआन की शिक्षा और कुरआन के नूरूं के बिना संभव ही नहीं। परन्तु जहां तक नफ़्स के ख़िलाफ़ जिहाद का सम्बन्ध है यह बहरहाल मुक़द्दम है। वर्ना तो यह मानना पड़ेगा कि ख़ुद अनुकरण नहीं करते और दूसरों को नसीहत करते हैं। इस लिए क़ुरआन करीम की हिदायत के अनुसार नफ़्स की इच्छाओं के ख़िलाफ़ जिहाद अर्थात नफ़्स का सुधार और कुरआन के अनवार के माध्यम से शैतानी ज़ुलमतों के ख़िलाफ़ जिहाद आपस में अनिवार्य हैं। जब इन्सानी इच्छाएं और शैतानी शंकाएं इन्सानी नफ़्स को घेरे में लेने की कोशिश करती हैं और इस के और इस के पैदा करने वाले रब के बीच दूरी पैदा करने की कोशिश करती हैं तो उनसे बचने के लिए अर्थात नफ़्स के सुधार के लिए इन्सान क़ुरआन करीम को माध्यम बनाता है। फिर कुरआन के अनवार को फैलाना कुरआन के अनवार ही के माध्यम संभव है जैसा कि कहा गया है।

मुहम्मद हसत बुरहाने मुहम्मद

इसी तरह यह भी एक हक़ीक़त है कि कुरआन के अनवार की इशाअत और क़ुरआन करीम की हुकूमत को क़ायम करना कुरआन के नूरूं के बिना सम्भव नहीं। अत: जब अपने नफ़्स में इन अनवार को जज़ब कर लिया तो फिर उन्हीं अनवार को लेकर दुनिया की इस्लाह के लिए बाहर जाना है और इशाअत क़ुरआन करनी है और यह दूसरी किस्म का जिहाद है अर्थात इस्लाहे नफ़्स इन्सानी कुरआन के नूरूं के माध्यम से।

तीसरी किस्म का जिहाद वह है कि जब शैतान अपनी तलवार मियान से निकाले और भौतिक और सांसारिक ताक़त के साथ रुहानी इक़दार को कुचलने की कोशिश करे तो इस तलवार को ख़ुदा तआला की सहायता से और दुआओं से अल्लाह तआला के फ़ज़ल को जज़ब कर के तोड़ देना और नाकाम बना देना। यह सबसे छोटा जिहाद है इसीलिए उसे जिहाद असग़र कहते हैं।

(ख़ुत्बात नासिर, भाग 4, पृष्ठ 295 ख़ुत्बा जुम्अ:21 जुलाई 1972 ई)

अपने रब की तरफ़ मानव जाति को बुलाना हक़ीक़ी और प्रथम और अफ़ज़ल जिहाद है

(उपदेश सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह तआला)

इस्लाम को समस्त दूसरे धर्मों पर ग़ालिब करने की हक़ीक़त

जब यह कहा जाता है कि इस्लाम को इस उद्देशय से पैदा किया गया ताकि समस्त दुनिया के दूसरे धर्मों पर यह ग़ालिब आ जाए तो इस का हरगिज़ यह अभिप्राय नहीं कि तलवार हाथ में पकड़ो अर्थात मुसलमानों को यह शिक्षा हो कि तुम तलवार हाथ में पकड़ो और समस्त दुनिया में इनकार करने वालों की गर्दनें काटते फिरो और जो स्वीकार करे और सिर झुका दे सिर्फ उसी को अमन का पैग़ाम दो ,बाक़ी सब के लिए तुम फ़साद और जंग का पैग़ाम बन जाओ। यह ना अक़ल के अनुसार बात है ना व्यावहारिक रूप में दुनिया में ऐसा हो सकता है ना कभी हुआ है इस लिए जमाअत अहमदिया को हमेशा इस उसूल को सम्मुख रखना चाहिए कि जब हम मुक़ाबला की और जिहाद की और मानव जाति पर इस्लाम को ग़ालिब करने की बातें करते हैं तो क़ुरआन और मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस्तलाहों में बातें करते हैं और दुनिया की इस्तलाहों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं होता। यही वजह है कि आज के इबतिला के वक़्त वे मुसलमान जो इन बातों को नहीं समझ सके,ना समझ सकते हैं क्योंकि उनके राहनुमा उन को ग़लत शिक्षा देते हैं , वे जगह जगह अपने आपको मुश्किल में दिख रहे हैं और दिन प्रतिदिन उनकी हालत ख़राब हो रही है। विभिन्न देशों में कमज़ोर अक़ल्लीयतें हैं और इस्लाम की शिक्षा को ग़लत पेश करने के नतीजा में अपने प्रतिक्रिया को सही रास्ते पर चलने वाला नहीं रख सकते। ग़लत राहों पर चलाते हैं जहां चलना उनके लिए संभव नहीं है और इस के नतीजा में बहुत नुक़्सान उठाते हैं और इस्लाम को और अधिक बदनामी का कारण बनते हैं।

(ख़ुत्बात ताहिर,भाग 10 पृष्ठ 56 ख़ुत्बा जुम्अ:25 जनवरी 1991 ई)

वे तीन दृष्टिकोण जिनके नतीजा में इस्लाम की तस्वीर ख़राब हो हो रही है

इस्लामी जगत में बहुत ही ख़ौफ़नाक ऐसी बातें प्रचलित हैं जो इस्लाम के साथ बेवफ़ाई का आदेश रखती हैं और बजाय इस के कि इस्लाम की न्याय वाली शिक्षा को समझें और क़बूल करें,इस्लाम को दुनिया के सामने एक ऐसे मज़हब के तौर पर प्रस्तुत किया जा रहा है जिसका न्याय के साथ कोई दूर का भी सम्बन्ध नहीं। इस में सबसे बड़ा क़सूर मुल्ला और सियास्तदान का है इन दोनों के गठजोड़ के नतीजा में इस्लाम के न्याय के निज़ाम को तबाह किया जा रहा है तीन ऐसे दृष्टिकोण इस्लाम की तरफ़ मंसूब करके पेश किए जा रहे हैं कि जिनके नतीजा में बैरूनी दुनिया में इस्लाम की तस्वीर ज़ालिमाना तौर पर ख़राब हो कर पेश हो रही है और हर इस्लामी मुल्क से भी अमन उठता चला जा रहा है।

पहला दृष्टिकोण यह प्रस्तुत किया जाता है कि तलवार का प्रयोग विचार धाराओं के प्रसार में ना सिर्फ जायज़ बल्कि ज़रूरी है और तलवार के ज़ोर से विचार धारा को तबदील कर देने का नाम इस्लामी जिहाद है लेकिन साथ ही यह भी कहा जाता है कि यह हक़ सिर्फ मुसलमानों को है। ईसाइयों या यहूद या हिंदूओं या बुद्धों को यह हक़ नहीं कि वे किसी मुसलमान की विचार धारा को ज़बरदस्ती तबदील करें लेकिन ख़ुदा ने यह हक़ सारे का सारा मुसलमानों के सुपुर्द कर रखा है। कैसा अन्याय पूर्ण , कैसा जाहिलाना विचार है लेकिन उसे इस्लाम के नाम पर सारी दुनिया में फैलाया जा रहा है।

फिर **दूसरा दृष्टिकोण** इस का यह है कि अगर कोई ग़ैर मुस्लिम मुसलमान हो जाएगा तो किसी का हक़ नहीं कि उसे मौत की सज़ा दे। समस्त दुनिया में जहां कोई चाहे अपने धर्म को छोड़ छोड़कर इस्लाम में दाख़िल होता रहे दुनिया के किसी मज़हब के मानने वालों को हक़ नहीं कि उसे मौत की सज़ा दें लेकिन अगर कोई मुसलमान दूसरा धर्म धारण कर ले तो दुनिया के हर मुसलमान का हक़ है कि इस की गर्दन उड़ा दे। यह इस्लाम का दूसरा न्याय वाला उसूल है जो इस्लाम का झण्डा उठाने वाले ख़ुदा और क़ुरआन के नाम पर दुनिया के सामने पेश करते हैं

तीसरा उसूल यह है कि मुसलमान हुकूमतों का फ़र्ज़ है कि शरीयत इस्लामीया को ज़बरदस्ती इन शहरियों पर भी लागू करें जो इस्लाम पर ईमान नहीं लाते लेकिन दूसरे धर्मों को यह हक़ नहीं कि वे अपनी अपनी शरीयत मुसलमानों पर नाफ़िज़ करें। अत: इस नज़रिया न्याय की दृष्टि से यहूद को भी यह हक़ नहीं कि मुसलमानों से तालमूद में वर्णन किया गया सुलूक करें और हिन्दुओं को भी ये हक़ नहीं कि मुसलमानों से मनु स्मृति में वर्णन किया सुलूक करें। अत: यह तीसरा विचार न्याय है। यह सिर्फ तीन उदाहरण हैं लेकिन हक़ीक़त में आप आर अधिक जायज़ा लें तो बहुत से और मामले भी ऐसे हैं जिनमें आज के मौलवी का पेश किया गया विचार इस्लाम क़ुरआन करीम के स्पष्ट और न्याय वाले उसूल से विरोधी है और उसे रद्द करने के सामान है। आज दुनिया में इस्लाम के ख़िलाफ़ सबसे ज़्यादा प्रयोग होने वाला हथियार यही वे तीन उसूल हैं जिनकी फ़ैक्ट्रीयां मुसलमान देशों में लगाई गई हैं। यहूद सबसे ज़्यादा कामयाबी के साथ इन तीन इस्लामी उसूलों को अर्थात नऊज़-बिल्लाह मिन ज़ालेका इस्लामी उसूलों को मौलवियों के बनाए हुए इस्लामी उसूलों को कहना चाहिए, पश्चिमी दुनिया में और दूसरी दुनिया में पेश करते हैं और कहते हैं कि इन लोगों से तुम्हें किस तरह अमन नसीब हो सकता है उन लोगों से हमें किस तरह अमन नसीब हो सकता है जिनका इन्साफ़ का तसव्वुर और न्याय का तसव्वुर ही पागलों वाला तसव्वुर है जिसके अंदर कोई अक़ल का अंश भी दिखाई नहीं देता। मुसलमानों के लिए एक हुक़ूक़ ग़ैरों के लिए दूसरे हुक़ूक़, सारे हुक़ूक़ दुनिया में राज करने के मुसलमानों को और सब ग़ैर हर दूसरे हक़ से महरूम। अगर नऊज़ बिल्लाह मिन ज़ालिक ये कुरआन के उसूल है तो अनिवार्य है कि सारी दुनिया इस उसूल से दूर होगी और मुसलमानों को विश्व शान्ति के लिए बहुत ख़तरा महसूस करेगी।

...फिर एक और अजीब बात यह है कि जिहाद के दावे भी किए जाते हैं और ऐलान भी किए जाते हैं और साथ ही मुल्लाओं के इन तीन उसूलों को स्वीकार भी किया जाता। ये सियास्तदान का दूसरा जुर्म है जानते बूझते हुए कि इस्लाम का न्याय का निज़ाम इस किस्म की लड़ाईयों की नसीहत नहीं करता जिस किस्म की लड़ाईयों को मुल्ला जिहाद क़रार देता है। जब भी कोई मुल्की ख़तरा सम्मुख हो और स्यासी जंग सामने हो तो ख़ुद मुल्लाओं से कहकर और इस के हम-आवाज़ हो कर अवाम को जिहाद के नाम पर बुलाने लगते हैं जिसके नतीजे में दुनिया उन क़ौमों से और अधिक दूर हो जाती है और दिल में यक़ीन कर लेती है कि उनके सियास्तदान ज़ाहिरी तौर पर तो यही कहते हैं कि इस्लाम के जिहाद का हरगिज़ यह मतलब नहीं कि तलवार के ज़ोर से विचार धाराओं को फैलाओ या हर लड़ाई में ख़ुदा का नाम प्रयोग करो मगर जब ज़रूरत पड़ती है तो हमेशा इसी विचार का सहारा लेते हैं बार-बार हर जगह ऐसे होता है और होता चला आया है।

(ख़ुत्बाते ताहिर भाग 10 पृष्ठ 178 ख़ुत्बा जुम्अ: 1 मार्च 1991 ई)

☆ ☆ ☆

जिहाद सिर्फ़ वह है जो मज़हब पर हमला करने वालों के ख़िलाफ़ किया जाए बाक़ी जंगें राजनीतिक और क़ौमी जंगें कहलाती हैं

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के उपदेश

जिहाद सिर्फ़ वह है जो मज़हब पर हमला करने वालों के ख़िलाफ़ किया जाए।

अल्लाह तआला मज़हबी जंग में मज़लूम और हक़ पर रहने वाले की ज़रूर मदद करता है और इस ज़माना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िन्दगी में इस वक़्त जो ज़ुलम हो रहे थे वह मज़लूमियत की चरम थी। मुसलमानों की मक्का में जो दयनीय अवस्था थी वह इस से हर वक़त ज़ाहिर हो रही थी। मज़हबी जंगें हिज्रत के बाद अगर किसी से की जा रही थीं तो वे मुसलमानों से की जा रही थीं। अत: अल्लाह तआला ने अपने वादा के अनुसार अपने सुदृढ़ और ताक़तवर होने का सबूत दिया और कम सामान, थोड़े और ना तजुर्बा कार होने के बावजूद मुसलमानों को यह आदेश दिया कि अब जंग करो तो उनकी मदद भी फ़रमाई और फ़रिश्तों को मुसलमानों की मदद के लिए भेजा। अत: इस से यह बात भी ज़ाहिर हो गई कि अल्लाह तआला ने जंग की इजाज़त प्रतिरक्षा के तौर पर दी थी। अमन क़ायम करने के लिए दी थी। जिहाद सिर्फ़ वह है जो मज़हब पर हमला करने वालों के ख़िलाफ़ किया जाए। बाक़ी जो जंगें होती हैं, चाहे वे मुसलमान मुसलमान देशों की हों या मुसलमानों की ग़ैर मुस्लिमों के साथ हों वे राजनीतिक और क़ौमी जंगें कहलाती हैं और आजकल जो जंगें हो रही हैं वे राजनीतिक और क़ौमी जंगें हैं यह जिहाद नहीं है

फिर अल्लाह तआला ने अपने सुदृढ़ होने का ऐलान करके यह फ़रमाया कि मज़हब पर हमला करने वालों के ख़िलाफ़ में मज़हब के मानने वालों की मदद करूँगा और क्योंकि अब आख़िरी और मुकम्मल मज़हब अल्लाह तआला के ऐलान के अनुसार इस्लाम है इसलिए अल्लाह तआला ने मुसलमानों की मदद का वादा फ़रमाया और إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ कह कर अर्थात अल्लाह तआला बहुत ताक़तवर और कामिल ग़लबा वाला है इस बात का ऐलान कर दिया कि मुसलमानों के ख़िलाफ़ अगर मज़हबी जंग होगी तो मैं मदद करूँगा। अत: आजकल के जो हमले, फ़साद या जंगें हो रही हैं जिसमें मुसलमान बजाय विजयों के अपमान का सामना कर रहे हैं यह इस बात का सबूत है और यह दलील है कि यह ना जिहाद है और ना अल्लाह तआला की नज़र में मज़हबी जंग है और इसी वजह से उसे अल्लाह तआला का समर्थन भी हासिल नहीं है।

(ख़ुत्बात मसरूर भाग 7 पृष्ठ 478 ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 9 अक्तूबर 2009 ई)

दुनिया को अपनी सलामती और अमन का ख़तरा इस्लाम से नहीं बल्कि उन लोगों से है जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं।

पिछले दिनों यहां एक अख़बारों में कालम लिखने वाले ने लिखा और इसी तरह एक ऑस्ट्रेलियन सियास्तदान ने भी कहा कि इस्लाम की शिक्षा में जो जिहाद और कुछ दूसरे आदेश हैं उन्हीं की वजह से मुसलमान उग्रवादी बनते हैं आजकल जो इस्लाम के नाम पर इराक़ और शाम में उग्रवादी गिरोह ने कुछ इलाक़े पर क़ब्ज़ा कर के अपनी हुकूमत क़ायम की है उसने पश्चिमी देशों को भी ना सिर्फ धमकियां दी हैं ....कहने और लिखने वाले यह भी लिखते हैं कहते भी हैं कि ठीक है दूसरे धर्मों की शिक्षा में भी सख़्ती है। कुछ आदेश ऐसे हैं लेकिन उनके मानने वाले या तो इस पर अब अनुकरण नहीं करते या इस में हालात के अनुसार तबदीलियां कर ली हैं और ज़माना की ज़रूरत के अनुसार इस शिक्षा को कर लिया है। और इस बात पर उनका ज़ोर है कि अत: अब क़ुरआन करीम के आदेशों को भी इस ज़माना के अनुसार ढालने की ज़रूरत है

हम मानते हैं कि इस्लाम के नाम पर कुछ मुसलमान गिरोहों के ग़लत कर्म ने इस्लाम को बदनाम किया है लेकिन इस पर क़ुरआन करीम की शिक्षा को निशाना बनाना और इंतिहा तक चले जाना भी इस्लाम के ख़िलाफ़ दिलों के द्वेष और हसद का इज़हार है। इस का एक इंतिहाई इज़हार तो आजकल अमरीका के एक सदारती उम्मीदवार का इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ बोलना है। बहरहाल यह इस्लाम के बारे में जो चाहे बोलते रहें लेकिन इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा का मुक़ाबला ना किसी मज़हब की शिक्षा कर सकती है और ना ही उनके अपने बनाए हुए क़ानून कर सकते हैं

पिछले दिनों यहां ब्रिटिश पार्लीमैंट में ग्लास्गो की एक एम पी ने इस्लाम की हक़ीक़त के बारे में जमाअत अहमदिया के हवाले से यह बता कर कहा कि इस्लाम की अमन और सलामती की शिक्षा पर अनुकरण करने वाले अहमदी मुसलमान हैं और मैं ग्लास्गो में उनके एक पीस सिंपोज़ियम में शामिल हुई थी और उसने बड़ी प्रशंसा की। इस पर वहीं बैठी हुई वज़ीर-ए-दाख़िला, होम सैक्रेटरी ने भी कहा कि जो इस्लाम अहमदी पेश करते हैं वह वास्तव इस से बिलकुल मुख़्तलिफ़ है जो इस्लामी शिद्दत-पसन्द दिखाते हैं। और हक़ीक़त में अहमदी अम्न पसन्द शहरी हैं। और हक़ीक़त यह है कि अहमदी कोई नई शिक्षा प्रस्तुत नहीं करते बल्कि क़ुरआन करीम की शिक्षा पेश करते हैं। .... प्रैस ने एक बार ख़बर दे दी और हम ख़ामोश हो गए। लेकिन शिद्दत पसन्दी की कोई घटना होती है या नहीं भी होता तो उनके हवाले से अख़बार में बड़ी सुर्ख़ियाँ दी जाती हैं। फिर इस्लाम विरोधी लोगों को इस्लाम के ख़िलाफ़ बोलने का मौक़ा मिल जाता है।

पिछले दिनों जब मैं जापान में था तो वहां भी पढ़े लिखे वर्ग का यह इज़हार था। बल्कि एक ईसाई पादरी ने भी कहा कि इस्लाम की शिक्षा जो तुम क़ुरआन करीम की रोशनी में बता रहे हो उस को जानने की जापानियों को बहुत ज़रूरत है बल्कि दुनिया को ज़रूरत है। उसने कहा लेकिन इस का फ़ायदा तभी होगा कि अब इस बात को इस फंक्शन तक सीमित ना करें जिसमें आप बोल रहे हैं बल्कि जापान में निरन्तर कोशिश से यह शिक्षा लोगों को बताएं।

अत: यह हर अहमदी की बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है कि धर्म की ज़ाती ख़ूबियों को प्रस्तुत करने के लिए क़ुरआन करीम का ज्ञान हासिल करें और फिर अपने नेक नमूने क़ायम कर के दुनिया को अपनी तरफ़ खींचें और यही ज्ञान और कर्म है जिससे इस ज़माने में हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ग़ुलामी में आते हुए क़ुरआन करीम और इस्लाम की हिफ़ाज़त के काम में हिस्सादार बन सकते हैं और दुनिया को बता सकते हैं कि अगर दुनिया में हक़ीक़ी अमन क़ायम करना है तो क़ुरआन करीम के माध्यम से ही क़ायम हो सकता है

अत: इस्लाम की शिक्षा तो दोस्ती का हाथ बढ़ाने की शिक्षा है। अमन और सलामती क़ायम करने की शिक्षा है। अगर कुछ मुसलमान गिरोह अनुकरण नहीं करते तो उनकी बदक़िस्मती है। क़ुरआन बेशक असल शब्दों में उनके पास मौजूद है लेकिन अनुकरण नहीं है। क़ुरआन करीम की शिक्षा की और क़ुरआन करीम के आदेशों की जो हिफ़ाज़त करनी थी या करनी चाहिए वो ये लोग नहीं कर रहे। इस की हिफ़ाज़त तो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और आपकी जमाअत ने ही करनी है। दुनिया को हमने अपने ज्ञान और अनुकरण से बताना है कि दुनिया को अपनी सलामती और अमन का ख़तरा इस्लाम से नहीं बल्कि उन लोगों से है जो इस्लाम के ख़िलाफ़ हैं....ये लोग जो इस्लाम को बदनाम करते हैं वे झूठ और आरोप से काम लेते हैं। और उनका यह झूठ और आरोप असल में दुनिया की सलामती को ख़तरे में डाल रहा है। ये लोग अपने स्वार्थों के लिए, दुनिया में अपनी भूगोलक और राजनीतिक बरतरी हासिल करने के लिए फ़साद फैलाए हुए हैं। मुसलमान देशों के फ़साद में भी कुछ बड़े देशों का हिस्सा है। और अब तो विभिन्न पश्चिमी मीडिया पर ख़ुद उनके अपने लोग ही कहने लग गए हैं कि मुसलमानों की ये शिद्दत-पसन्द तंज़ीमें हमारी हुकूमतों की पैदावार हैं जो हमने इराक़ की जंग के बाद या सीरिया के हालात के बाद पैदा की हैं। इस बात से मैं मुसलमानों और उन लोगों को जो इस्लाम के नाम पर मुसलमान कहलाते हुए शिद्दत पसन्दी का और इस्लाम की ग़लत शिक्षा के इज़हार का मुज़ाहरा कर रहे हैं बरी नहीं करता लेकिन इस आग को भड़काने में बड़ी ताक़तों का बहरहाल हिस्सा है। इन्साफ़ से काम ना लेने की एक बहुत बड़ी वजह है जिसकी वजह से ये सब कुछ हो रहा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: दिनांक 11 दिसंबर 2015 ई ,अख़बार बदर 7, 14 जनवरी 2016 ई)

वास्तविक और स्थायी विश्व शान्ति की स्थापना

यद्यपि हम सब दुनिया के बिगड़ते हालात से वाक़िफ़ हैं लेकिन बहुत से लोगों को इस की समझ नहीं है कि कुछ देशों के आपस के सम्बन्ध किस हद तक ख़राब हो चुके हैं और यह कि इस कटुता के कितने तबाह करने वाले प्रभाव हो सकते हैं बावजूद इस के कि दुनिया में इस वक़्त इतने ऐटमी हथियार मौजूद हैं जो चंद घंटों मैं इन्सानी तहज़ीब को संसार से मिटाने के लिए काफ़ी हैं, यह बात इंतिहाई हैरत-अंगेज़ है कि ऐटमी जंग के अंदेशे की तरफ़ दुनिया का ध्यान बहुत कम है।

हथियारों का कम फैलाओ तो लोगों के दबाओ के नतीजा में ही संभव सकता है अर्थात जब "इन्सानियत" की आवाज़ के सामने हथियार के व्यापारी और जंग पर हर वक़त तत्पर दुनयावी हुकमरानों की आवाज़ दब जाए।

अगर हम वर्तमान युग के प्रमुख मस्लों का सरसरी जायज़ा भी लें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि दुनिया तबाही की तरफ़ बढ़ रही है। दुनिया एक ऐसे दायरा में उलझ चुकी है जिसमें एक झगड़ा दूसरे को जन्म दे रहा है क्योंकि आपस की दुश्मनियां और नफ़रतें पहले से ज़्यादा गहरी होती जा रही हैं।

शरणार्थियों के मसला का स्थायी हल यही है कि जंग से प्रभावित देशों में अमन क़ायम किया जाए और वहां पर मजबूरी की हालत में ख़ौफ़ और तंग-दस्ती के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर अवाम की मदद की जाए ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हों और सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

इस्लामी दृष्टिकोण से हमें समस्त दुनिया को मुत्तहिद करने की कोशिश करनी चाहिए, करंसी के एतबार से भी सारी दुनिया को एक हो जाना चाहिए, इसी तरह कारोबार और तिजारती लिहाज़ से भी दुनिया को एक हो जाना चाहिए,फिर आज़ादी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने और हिजरत के लिहाज़ से भी उचित और अनुकरण योग्य पालसी बनानी चाहिऐं ताकि सारी दुनिया हो जाई

इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में अमन का स्थापना की एक बुनियादी मांग यह है कि कौमें एक दूसरे के साथ न्याय का सुलूक रखें।

ताक़तवर कौमें बजाय अपनी दौलत और संसाधनों पर मुतमइन रहने के अपनी ताक़त के बलबूते पर ग़रीब देशों को अपने अधीन करने की कोशिश करती हैं

हमें अपनी सारी ताक़तें और क़ुव्वतें अमन की स्थापना में खर्च करनी चाहिऐं

जमाअत अहमदिया बर्तानिया के आधीन 16 वीं नैशनल पीस सिंपोज़ियम आयोजित 9 मार्च 2019 ई के आवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के सदारती ख़िताब का उर्दू से अनुवाद

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्राहीम, सम्मान्नीय मेहमानान,अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातुहो

हर साल जमाअत अहमदिया मुस्लिमा पीस सिंपोज़ियम का आयोजन करती है जिस में वर्तमान युग के मस्ले और दुनिया की उमूमी अवस्था का जायज़ा लिया जाता है और मैं इन मसलों का इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में हल पेश करने की कोशिश करता हूँ। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि इस आयोजन के विश्वव्यापी स्तर पर क्या प्रभाव होते हैं मैं पहले भी कह चुका हूँ कि इस का मुझे ज्ञान नहीं, परन्तु इस से ध्यान हटाते हुए कि इस का बाक़ी दुनिया पर क्या असर है, हम अमन और न्याय की स्थपना और बढ़ावा के सिलसिला में अपनी कोशिशों को जारी रखेंगे और मुझे यक़ीन है कि आप सब भी हमारी तरह दुनिया में हक़ीक़ी और स्थायी अमन की स्थापना के इच्छुक हैं।

नि:सन्देह आप सब भी यह ख़ाहिश रखते होंगे कि आज के इस दौर में दुनिया के अमन और सुकून को बर्बाद कर देने वाली जंगों और झगड़ों का ख़ात्मा हो जाए और एक ऐसा अमन वाला समाज स्थापित हो जाए जिसमें समस्त कौमें एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखते हुए आपस में मिल-जुल कर अमन के साथ रह सकें। मगर यह एक इंतिहाई अफ़सोस वाली हक़ीक़त है कि कहां यह कि जंगों और झगड़ों से हाथ खींचा जाए हर साल उस के विपरीत ही देखने में आ रहा है। जहां दुश्मनियां शिद्दत इख़तियार कर रही हैं और जंग के नए क्षेत्र खोले जा रहे हैं वहां पहले से मौजूद आपस की शत्रुताएं भी ख़त्म होती दिखाई नहीं देतीं।

यद्यपि हम सब दुनिया के बिगड़ते हालात से वाक़िफ़ हैं लेकिन बहुत से लोगों को इस बात की समझ नहीं है कि कुछ देशों के आपस के सम्बन्ध किस हद तक ख़राब हो चुके हैं और यह कि इस दूरी के कितने तबाह करने वाले प्रभाव हो सकते हैं। उदाहरण के तौर पर Bloomberg Businessweek की पिछली संख्या में एक सहाफ़ी Peter Coy लिखते हैं: "बावजूद इस के कि दुनिया में इस वक़्त इतने एटमी हथियार मौजूद हैं जो चंद घंटों में इन्सानी तहज़ीब को संसार से मिटाने के लिए काफ़ी हैं ये बात बहुत अधिक हैरान करने वाली है कि ऐटमी जंग के अंदेशे की तरफ़ दुनिया का ध्यान बहुत कम है अब जबकि अमरीका और रूस के मध्य हथियारों के कम करने का मुआहिदा ख़त्म हो चुका है इस तरफ विशेष ध्यान देने की ज़रूरत है। ऐसा मालूम होता है कि ऐटमी हथियारों की एक नई दौड़ जन्म ले रही है। जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि एक साधारण इन्सान इस सिलसिला में क्या कर सकता है तो हथियारों का कम फैलना तो अवामी दबाओ के नतीजा में ही संभव हो सकता है। अर्थात इन्सानियत' की आवाज़ के सामने हथियार के व्यापारियों और जंग पर हर वक़त तत्पर दुनयावी हुकमरानों की आवाज़ दब जाए।

लेखक ने अपने इस आर्टीकल में Middlebury Institute of International Studies से संबंधित Nikolai Sokov की तरफ़ से जारी की गई एक चेतना को भी शामिल किया है:"समस्त निशानियां इस बात की निशानदेही कर रही हैं कि यूरोपियन देश ख़तरनाक हद तक ऐटमी हथियारों और रिवायती जंगी हथियारों तथा सामान की दौड़ में एक दूसरे से आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं।

इस निबन्ध के बाक़ी हिस्सा में इस बात पर-ज़ोर दिया गया है कि विश्वव्यापी स्तर पर हथियारों की एक नई दौड़ शुरू हो चुकी है इसी तरह यह कि ऐटमी जंग के ख़तरा की नौईयत को साधारण नहीं समझना चाहिए।

इंडिया और पाकिस्तान के मध्य पिछले दिनों अचानक पैदा होने वाली ख़राब अवस्था दुनिया के सामने है। यह दोनों देशों ऐटमी ताक़तें हैं और दोनों ने विभिन्न देशों के साथ ज़ाहिरी या ख़ुफ़ीया इत्तिहादी मुआहिदे कर रखे हैं जिनकी वजह से उनके बीच होने वाली किसी भी जंग के संभवत: परिणाम बहुत व्यापक और तबाह करने वाले होंगे।

मैं कई बार इस बात को प्रकट कर चुका हूँ कि कुछ ऐटमी ताक़तों के सरबराह ऐटमी हथियारों के प्रयोग के लिए हर समय तत्पर नज़र आते हैं जिससे महसूस होता है कि शायद उन्हें उस के ख़ौफ़नाक नतीजों की समझ नहीं। यह हथियार ना सिर्फ उन देशों को संसार से मिटा देने की ताक़त रखते हैं जिनके ख़िलाफ़ यह प्रयोग किए जाएं बल्कि उनका प्रयोग तो समस्त दुनिया के अमन और सलामती के लिए ख़तरा है। इसलिए यह ज़रूरी है कि कौमें और उनके लीडर अपना ध्यान सिर्फ अपने देश के स्वार्थों पर केन्द्रित रखने की बजाय विश्वव्यापी लाभों को सम्मुख रखें। अमन को बढ़ावा देने के लिए अन्य देशों और गिरोहों से बातचीत बहुत महत्तव वाली है। हर पक्ष को बर्दाश्त की रूह के साथ दुनिया में स्थायी अमन के बढ़ावा जैसे साझा मक़सद के लिए कोशिश करनी चाहिए।

Spiegel Online को दिए गए एक हालिया इंटरव्यू में जर्मनी के भूतपूर्व वज़ीर ख़ारजा Sigmar Gabriel ने ख़बरदार किया है कि दुनिया मौजूदा भौगोलिक सियासत के नतीजा में पैदा होने वाले ख़तरों को नजर अंदाज़ कर रही है। उन्होंने दुनिया के मौजूदा हालात का 1945 ई और 1989 ई के हालात से तुलना करते हुए कहा:"दुनिया के हालात बड़ी तेज़ी के साथ तबदील हो रहे हैं....मग़रिब विभिन्न गिरोहों में बट चुका है ....पिछले सत्तर सालों के दौरान प्रकट होने वाली एक स्पष्ट तबदीली यह है कि पहले हम अमरीका पर बतौर एक रहनुमा देश भरोसा कर सकते थे। लेकिन आज हम एक ऐसे दौर से गुज़र रहे हैं कि जब यूरोप को अपनी ख़ुद मुख़तारी की जंग सम्मुख है।"

इसी तरह न्यूयार्क टाईम्स के एक आर्टीकल में रूस के भूतपूर्व रहनुमा Mikhail Gorbachev ने वर्णन किया कि अमरीका और रूस के बीच हालिया I.N.F. Treaty के ख़ातमा के नतीजा में ऐटमी हथियारों की एक नई दौड़ शुरू हो चुकी है। वह लिखते हैं:"हथियारों की एक नई कश्मकश शुरू हो चुकी है। I.N.F. Treaty का ख़ातमा दुनिया में ज़ोर पकड़ने वाली अस्करीयत पसन्दी (militarisation) के नतीजा में होने वाली कोई पहली घटना नहीं। इस से पहले 2002 ई में अमरीका ऐन्टी बैलिस्टिक मिज़ाईल के मुआहिदा से पीछे हट गया था और इस साल ईरान के साथ किए जाने वाले न्यूक्लीयर (एटमी)हथियारों के मुआहिदा का ख़त्म होना भी इसी रुझान का परिणाम है। अस्करी अख़राजात आसमानों को छूने लगे हैं और दिन प्रतिदिन बढ़ते चले जा रहे हैं।"

ऐटमी जंग के ख़तरा से ख़बरदार करते हुए गोरबाचोफ़ लिखते हैं: "ऐसी जंग का कोई फ़ातिह नहीं हो सकता जो सब मिलकर अपने ही ख़िलाफ़ लड़ रहे हों। विशेष रूप से अगर वह ऐटमी हथियारों के प्रयोग पर आधारित हो। इस संभावना को रद्द भी नहीं किया जा सकता। अंधाधुंध हथियारों की दौड़, विश्वव्यापी तनाव, विश्वव्यापी सतह पर दुश्मनियां और भरोसे का न होने की फ़िज़ा जलती पर तेल का काम कर रही है।"

अत: माहिर समीक्षक और सियास्तदान इस नतीजा पर पहुंचे हैं कि ऐटमी जंग अब कोई दूर की बात नहीं बल्कि उस का ख़तरा बढ़ता जा रहा है और उसे नज़र अंदाज नहीं किया जा सकता।

अगर हम वर्तमान समय के कुछ प्रमुख मसलों का सरसरी जायज़ा भी लें तो यह बात स्पष्ट हो जाएगी कि दुनिया तबाही की तरफ़ बढ़ रही है। पिछले साल अमरीका ने बड़े भरोसा से यह दावा किया था कि वह उत्तर कोरिया के साथ एक तारीख़ी अमन मुआहिदा करने में कामयाब होने वाला है जबकि अब यह स्पष्ट हो चुका है कि इस सिलसिला में कोई ख़ास कामयाबी हासिल नहीं हो सकी।

इसके इलावा मध्य एशिया में जारी झगड़े भी शिद्दत पकड़ते जा रहे हैं। पिछली लगभग एक दहाई से शाम ख़ूँन वाली जंग का शिकार है और देश की शान्ति बिखर चुकी है। यह कहा जा रहा है कि घरेलू जंग अब समाप्ति के क़रीब है, मगर पिछली दहाई में सिवाए लाखों लोगों के मरने और इस से कहीं ज़्यादा लोगों के बेघर हो जाने के और क्या हासिल हुआ है? इस समस्त कार्रवाई का कोई भी सकारात्मक नतीजा नहीं निकला और अब भी भविष्य ग़ैर यक़ीनी और भयभीत है क्योंकि ऐसे देश जिनके व्यक्तिगत लाभ सीरिया के भविष्य के साथ जुड़े हैं उनके बीच तनाव में इज़ाफ़ा हो रहा है। एक तरफ़ रूस और तुर्की का इत्तिहाद है तो दूसरी तरफ़ अमरीका और सऊदी अरब मिलकर ईरान पर दबाओ डाल रहे हैं और इस पर और अधिक पाबंदियां लगाने की कोशिश में हैं। सयासी मुबस्सिरीन इस बात का खुले आम इज़हार कर रहे हैं कि इन देशों का मक़सद सिर्फ मध्य एशिया पर अपना कन्ट्रोल स्थापित करना है।

एक और भय वाली बात तुर्की और कुर्द क़ौम के बीच बिगड़ते हुए हालात हैं जहां कुर्द आज़ादी हासिल करना चाहते हैं।

अत: दुनिया एक ऐसे बुरे दायरे में उलझ चुकी है जिसमें एक झगड़ा दूसरे झगड़ा को जन्म दे रहा है क्योंकि आपस की दुश्मनियां और नफ़रतें पहले से ज़्यादा गहरी होती जा रही हैं। कोई नहीं जानता कि ये मसले हमें आख़िर कहाँ तक ले जाऐंगे और इस के कितने ख़ौफ़नाक नतीजे ज़ाहिर होंगे। ये सब कुछ तो मैंने नमूना के रूप में वर्णन किया है, उनके इलावा भी बहुत से ऐसे भयावह मसले हैं जिनसे दुनिया के अमन और ख़ुशहाली को बहुत ख़तरा है।

उदाहरण के तौर पर यह कहा जा रहा है कि दहश्तगर्द ग्रुप 'दाइश' अब अपनी तबाही के किनारे पर है और उनकी तथाकथित ख़िलाफ़त भी दम तोड़ चुकी है। लेकिन कुछ माहरीन अभी भी ख़बरदार कर रहे हैं कि यद्यपि कि 'दाइश' अपने इलाक़ाई प्रभुत्तव को खो चुकी है लेकिन इसके तशद्दुद वाले नज़रियात में ज़िन्दगी की रमक़ अभी भी बाक़ी है और उसके जो मैम्बरान बच निकले हैं वे दुनिया में फैल रहे हैं और वे किसी वक़्त भी दुबारा संगठित हो कर यूरोप या दूसरे स्थानों पर हमले कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त पश्चिमी दुनिया के सिर पर "क़ौमीयत परस्ती" का भूत दोबारा सवार हो गया है और दाएं बाज़ू से सम्बन्ध रखने वाले शिद्दत पसन्द गिरोह मक़बूलियत हासिल कर रहे हैं।

इन पार्टीयों को बेशक सयासी तौर पर स्पष्ट बहुमत प्राप्त नहीं हुआ लेकिन फिर भी जब तक समाज की हर सतह पर इन्साफ़ स्थापित ना हो जाए ये पार्टीयां प्रसिद्धि हासिल करती रहेंगी। उनकी प्रसिद्धि की एक बहुत बड़ी और बुनियादी वजह शरणार्थियों की संख्या में वृद्धि है जिससे लोगों में बेचैनियां जन्म ले रही हैं और यह नज़रिया जड़ पकड़ रहा है कि इन देशों के असल शहरियों के संसाधन बजाय उन पर ख़र्च होने के ग़ैर मुल्की पनाह लेने वालों की सहायता पर ख़र्च किए जा रहे हैं। मैं पहले भी इस

विषय पर विस्तार से बात कर चुका हूँ इसलिए पुरानी बातें दोहराना नहीं चाहता। इतना कह देना काफ़ी है कि अगर अमन की स्थापना के लिए हक़ीक़ी कोशिशें की जाएं और समस्त देशों को तरक़्क़ी हासिल करने में मदद दी जाए तो लोगों को अपने घरों से भाग कर बाहर के देशों में स्थानान्तरित होने की मजबूरी और इच्छा ख़ुद बख़ुद ठण्डी पड़ जाएगी

लोग तो सिर्फ यही चाहते हैं कि वे अपने ख़ानदानों की कफ़ालत करने के योग्य बन जाएं और जब उस के दरवाज़े भी उन पर बंद किए जाऐंगे तो फिर बेहतर ज़िन्दगी की प्राप्ति के लिए ये लोग अपने मुल्क छोड़ने की कोशिश करेंगे। अत: पनाह लेने वालों के मसला का स्थायी हल यही है कि जंग से प्रभावित देशों में अमन क़ायम किया जाए और वहां पर मजबूरी की हालत में ख़ौफ़ और तंग-दस्ती के साथ ज़िन्दगी गुज़ारने पर मजबूर अवाम की मदद की जाए ताकि वे अपने पैरों पर खड़े हों और सुकून के साथ ज़िन्दगी गुज़ार सकें।

सार यह है कि मुहाजिरीन या सयासी पनाह लेने वाले जब अपने देशों की सयासी या मज़हबी अवस्था की वजह से पश्चिमी देशों का रुख करते हैं तो जहां उनके साथ इज़्ज़त तथा सम्मान का सुलूक होना चाहिए वहां यह भी समक्ष रहे कि उन्हें मुहय्या की जाने वाली सहायता तथा सुविधाए और रियाअतों से स्थानीय शहरियों की सहूलते प्रभावित न हों।

मुहाजिरीन की इस बात पर हौसला-अफ़ज़ाई होनी चाहिए कि वे शीघ्र से शीघ्र अपने लिए रोज़ी का माध्यम तलाश करें बजाय इसके कि लंबे समय तक हुकूमत की तरफ़ से एहसान के तौर पर मिलने वाले एलाउंस और रियाअतों पर गुज़ारा करते रहें। उन्हें ख़ुद भी चाहिए कि वे मेहनत के साथ अपने पांव पर खड़े होने की कोशिश करें और समाज की तरक़्क़ी में सकारात्मक किरदार अदा करें वर्ना अगर उन्हें निरन्तर टैक्स अदा करने वालों के पैसा से सहायता मुहय्या की जाती रही तो इस से अनिवार्य रूप से शिकवे जन्म लेंगे

मैं यह समझता हूँ कि आर्थिक और आर्थिक महरूमियाँ समाज में नफ़रत और बेचैनी पैदा करने में बुनियादी किरदार अदा करती हैं। कुछ गिरोह उस बेचैनी का नाजायज़ फ़ायदा उठा कर मुहाजिरीन को या किसी ख़ास मज़हब के मानने वालों को मुल्ज़िम ठहराते और उनके ख़िलाफ़ नफ़रत फैलाने लगते हैं

अत: यूरोप में यह प्रभाव पैदा हो चुका है कि एशियाई, अफ़्रीक़ी और विशेष रूप से मुसलमान वतन छोड़ने वाले समाज के लिए ख़तरा हैं। अमरीका में भी लोग मुसलमानों और हिस्पानवी लोगों के बारे में जो मैक्सीको के रास्ता से उनके देश में दाख़िल होने की कोशिश कर रहे हैं इसी किस्म के भय रखते हैं। बहरहाल मेरा इस बात पर दृढ़ यक़ीन है कि अगर बड़ी ताक़तें व्यक्तिगत स्वार्थों को पीछे डालते हुए मुख़लिस हो कर ग़रीब देशों की आर्थिक हालात को बेहतर करने की कोशिश करें और उनके साथ हमदर्दी और इज़्ज़त तथा सम्मान म का सुलूक करें तो इस किस्म के मसले कभी पैदा ही ना हों।

यहां बर्तानिया में Brexit और भविष्य में बर्तानिया के योरुपी यूनीयन के साथ सम्बन्धों के हवाला से अवस्था बहुत ज़्यादा ग़ैर यक़ीनी है। 2012 ई में यूरोपीयन पार्लीमैंट में मैंने अपने ख़िताब में इस विषय पर खुल कर बात रखी थी और कहा था कि "आप लोगों को एक दूसरे के हुक़ूक़ का सम्मान करते हुए इस इत्तिहाद को क़ायम रखने के लिए हर संभव कोशिश करनी चाहिए। अवाम के भय और परेशानियाँ हर हाल में दूर होनी चाहिऐं।"

मैंने उस वक़्त यह भी कहा था कि यूरोप की मज़बूती उस के एकजुट रहने में है। इस किस्म के इत्तिहाद से आपको ना सिर्फ यहां यूरोप में लाभ होगा बल्कि विश्वव्यापी स्तर पर भी यह इत्तिहाद इस महाद्वीप की ताक़त और प्रभाव को क़ायम रखने का माध्यम बनेगा।

सात साल पहले मैंने अपनी तक़रीर में अवाम के इमीग्रेशन के बारे में भय को दूर करने की एहमीयत और योरुपी यूनीयन के इत्तिहाद के लाभों पर भी ज़ोर दिया था।

फिर भी लोगों की शंकाओं पर पूरी तरह ध्यान नहीं दिया गया इस वजह से यूरोप भर में लोग योरुपी यूनीयन के लाभ पर सवाल उठाने लग गए। इस की सब से बुरा उदाहरण Brexit है। कुछ अन्य यूरुपीयन देशों जैसे इटली, स्पेन और यहां तक कि जर्मनी में भी क़ौम परस्त पार्टीयां मक़बूलियत हासिल कर रही हैं और स्यासी मैदान में सीटें भी जीत रही हैं। इस वजह से वे योरपी यूनीयन को और अधिक कमज़ोर करने की कोशिश करने के साथ-साथ इमीग्रेशन मुख़ालिफ़ एजंडे को बढ़ावा दे रही हैं।

मेरा ख़्याल था कि यूरोप अपने इत्तिहाद को मज़ीद बढ़ावा देगा लेकिन पिछले कुछ सालों से यहां मतभेद और फिर उस के नतीजा में पैदा होने वाली अफ़रातफ़री ग़ालिब होती नज़र आ रही है। इस किस्म की बेचैनियां क्यों जन्म ले रही हैं? ये बेचैनियां कुछ आर्थिक मसलों की वजह से और कुछ कुछ हुकूमतों की अवाम के साथ न्याय तथा इन्साफ़ का मामला करने में नाकामी और अपने शहरियों के हुक़ूक़ की सुरक्षा ना कर सकने की वजह से पैदा हुई हैं। मेरा नुक़्ता नज़र यही है कि विश्वव्यापी स्तर पर आपसी सहयोग दुनिया के हालात में बेहतरी पैदा करने और मुत्तहिद रहने के लिए एक सकारात्मक किरदार अदा करता है। इस को समक्ष रखते हुए यूरपी पार्लीमैंट में मैंने यह भी कहा था "इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र की दृष्टि से हमें समस्त दुनिया को मुत्तहिद करने की कोशिश करनी चाहिए। करंसी के एतबार से भी सारी दुनिया को एक हो जाना चाहिए। इसी तरह कारोबार और व्यापार के लिहाज़ से भी दुनिया को एक हो जाना चाहिए। फिर आज़ादी से आने जाने और इमीग्रेशन के लिहाज़ से भी उचित और अनुकरण योग्य पालिसियां बननी चाहिऐं ताकि सारी दुनिया एक हो जाए।"

अत: इस्लामी नुक़्ता-ए-नज़र यही है कि इत्तिहाद ही अमन की स्थापना का बेहतरीन माध्यम है। लेकिन अफ़सोस की बात है कि मुत्तहिद होने की बजाय हम लोग मतभेद का शिकार हो रहे हैं और दुनिया के साझा लाभों पर व्यक्तिगत लाभों को प्राथमिकता दे रहे हैं। मेरा यक़ीन है कि इस किस्म की पालिसीयां भविष्य में आने वाले वक़्तों में बल्कि इस वक़्त भी दुनिया के अमन तथा शान्ति को कमज़ोर करने का कारण बन रहे हैं। इस्लामी शिक्षाओं की रोशनी में अमन की स्थापना का एक बुनियादी मांग यह है कि कौमें एक दूसरे के साथ न्याय का सुलूक रखें।

अगर कुछ देशों को मसलों का सामना हो तो दूसरी क़ौमों को चाहिए कि वे इन देशों की बेनफ़्स हो कर मदद करें और अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को पीछे डाल दें। उदाहरण के तौर पर क़ुरआन करीम में आता है कि अगर दो पक्षों के बीच जंग या मतभेद है तो दूसरी क़ौमों को चाहिए कि वे बग़ैर किसी एक पक्ष की तरफ़दारी करने के इन्साफ करने वाले का किरदार अदा करें और मसलों का अमन वाला हल तलाश करें। हाँ, अगर एक पक्ष नाइंसाफ़ी पर क़ायम रहे और अमन वाले हल पर तत्पर ना हो तो फिर दूसरी क़ौमों को चाहिए कि वह ज़ालिम क़ौम को ज़ुलम से रोके रखने के लिए मुत्तहिद हो जाएं। जब ज़ुलम करने वाला पक्ष अपनी ज़्यादतियों से रुक जाए तो फिर ऐसी अवस्था में इस्लाम स्पष्ट तौर पर आदेश देता है कि ग़ैर इन्साफ वाली पाबंदियां लगा कर या उस क़ौम के संसाधनों को लूट कर इस से बदला हरगिज़ ना जाए।

लेकिन कुछ देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं जो जंग से प्रभावित क़ौमों के इलाकों में दाख़िल होते हैं या अमन के नाम पर इन पिछड़े देशों की सहायता करते हैं लेकिन इसके साथ ही मुख़्तलिफ़ बहानों से उनके संसाधनों पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। ताक़तवर कौमें बजाय अपनी दौलत और संसाधनों पर सन्तुष्ट रहने के अपनी ताक़त के बलबूते पर ग़रीब देशों को

अपने अधीन करने की कोशिश करती हैं।

जैसा कि मैं कह चुका हूँ कि इस बेचैनी और इस के नतीजा में पैदा होने वाले बुरे प्रभावों की बुनियादी कारण, चाहे वह पूर्व हो या पश्चिम, आर्थिक अन्याय हैं। इसलिए ज़रूरी है कि क़ौमों और देशों के बीच आर्थिक मतभेद को कम करने के लिए ठोस कोशिशें की जाएं। फिर यह कि हर किस्म के उग्रवाद और द्वेष चाहे वह धार्मिक बुनियाद पर हो, या नस्ली या किसी भी किस्म का , उस की समाप्ति के लिए हम सबको मिलकर कोशिश करनी चाहिए।

जिन देशों के बारे में यह बात स्पष्ट है कि वहां के लोग तकलीफ़ में हैं और उनके रहनुमा उनके हुक़ूक़ की सुरक्षा नहीं कर रहे वहां अमन की स्थापना के लिए क़ायम की जाने वाली विश्वव्यापी संस्थाएं विशेष रूप से यू एन ओ को चाहिए कि क़ानून की सीमा में रहते हुए अमन पसन्द शहरियों के हुक़ूक़ की रक्षा और समाज में अमन और इन्साफ़ की स्थापना के लिए जायज़ और उचित दबाओ डालें।

जहां तक इस्लाम का सम्बन्ध है तो किसी के दिल में यह ख़्याल पैदा हो सकता है कि मुसलमान देश तो ख़ुद कई साल से मतभेदों और अस्थिरता का शिकार हैं तो फिर इस्लाम अमन की स्थापना के हवाला से हमें क्या सिखा सकता है? तो उसका जवाब यह है कि इन मुसलमान देशों की यह अफ़सोस वाली हालत इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से दूर होने की वजह से ही है

इस्लामी हुकूमत का तरीका तथा क़ियादत की असल तस्वीर देखने और हक़ीक़त जानने के लिए हमें इस्लाम के संस्थापक हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक ज़माना पर नज़र डालनी होगी। मदीना हिजरत करने के बाद आप ने यहूदियों के साथ एक सन्धि की जिसके अनुसार मुसलमान और यहूदी शहरियों के आपसी अमन के साथ और आपस में हमदर्दी , भाईचारा और बराबरी की रूह को क़ायम रखते हुए मिलजुल कर रहने पर ज़ोर दिया गया।

यह मुआहिदा इन्सानी हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और न्याय पूर्ण हुकूमत के तरीका का महान चार्टर साबित हुआ और उसने मदीना में रहने वाली विभिन्न क़ौमों के बीच अमन को यक़ीनी बनाया। इस की शर्तों के अनुसार समस्त लोगों पर , उनके मज़हब और उनकी क़ौमीयत से हट कर , एक दूसरे के अधिकारों का ख़्याल रखना फ़र्ज़ था। मज़हबी आज़ादी और आज़ादी ज़मीर इस मुआहिदा की बुनियाद थी।

इत्तिहाद इस मुआहिदा की बुनियाद था क्योंकि उसके अनुसार मदीना पर हमला की अवस्था में मुसलमानों और यहूदियों का मुत्तहिद हो कर मदीना की रक्षा करना ज़रूरी था। इसके इलावा हर क़ौम को यह हक़ भी हासिल था कि अपने अंदरूनी मामलों को अपने अपने अक़ीदों और रिवाज के अनुसार हल करें। तारीख़ इस बात पर गवाह है कि नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस मुआहिदा की हर शर्त पर पूरी तरह पाबन्द रहे।

मुहाजिरीन की हैसियत में मुसलमानों ने इस नए समाज की तरक़्क़ी में सकारात्मक किरदार अदा किया और मदीना के शहरियों के हुक़ूक़ का ख़्याल रखा। अत: यह समाज विभिन्न क़ौमों के इत्तिहाद और सभ्याताओं के मिलाप का बहुत उत्तम उदाहरण बना। मीसाक़ मदीना दरअसल कुरआन के शिक्षाओं के उसूलों के ठीक अनुसार था। जैसे क़ुरआन करीम में सूरत अन्नहल की आयत नम्बर 91 मैं ख़ुदा तआला फ़रमाता है। "नि:सन्देह अल्लाह न्याय का और एहसान का और रिश्तेदारों का ध्यान रखने का आदेश देता है।"

अत: क़ुरआन करीम लोगों और क़ौमों के साथ सामाजिकता और सुलूक के तीन स्तर प्रस्तुत करता है

पहला और सबसे निचला दर्जा न्याय तथा इन्साफ़ का है जिसके अधीन क़ुरआन करीम उस ज़रूरत की तरफ़ रहनुमाई करता है कि हर एक के साथ इन्साफ़ और बराबरी का सुलूक किया जाए। न्याय तथा इन्साफ़ के इस स्तर का ज़िक्र क़ुरआन करीम की सूरत अन्निसा आयत नम्बर 136 में वर्णित है

अल्लाह तआला फ़रमाता है "हे वे लोगो! जो ईमान लाए हो अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए इन्साफ़ को मज़बूती से क़ायम करने वाले बन जाओ चाहे ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देनी पड़े या माता पिता और क़रीबी रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ चाहे कोई अमीर हो या ग़रीब दोनों का अल्लाह ही बेहतरीन निगरानी करने वाला है अत: अपनी इच्छाओं की पैरवी ना करो कहीं न्याय से गुरेज़ करो और अगर तुम ने गोल मोल बात की या पहलू छुड़ाया तो नि:सन्देह अल्लाह जो तुम करते हो इस से बहुत ख़बर रखने वाला है।

अत: क़ुरआन करीम के अनुसार न्याय की मांग यह है कि एक आदमी गवाही देने को तैयार रहे चाहे वह उसके अपने ख़िलाफ़ हो या उसके रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ताकि सच की फ़तह हो।

सामाजिकता का दूसरा स्तर जो क़ुरआन ने वर्णन किया है वह यह है कि एक आदमी ना सिर्फ आदिल हो बल्कि वह इस से बढ़कर दूसरों के साथ दया और उपकार का सुलूक करे। इस के अन्तर्गत जैसा कि मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ क़ुरआन करीम यह शिक्षा देता है कि जब तुम एक अत्याचार करने वाली क़ौम को ज़ुल्म से रोकने में कामयाब हो जाओ तो बदला ना लो और ना इस पर और अधिक पाबन्दियां लगाओ।

बल्कि तुम्हें चाहिए कि उनकी अर्थ व्यवस्था को मज़बूत करने और बुनियादी सहूलतों को प्रदान करने में उनकी मदद करो। जहां यह बात उन्हें फ़ायदा देगी वहां भविष्य मैं तुम्हें भी लाभ देगी। अगर वे देश जो जंग या फसाद का केन्द्र रहे हैं आर्थिक तौर पर सुदृढ़ हो जाएं तो ना तो वह मायूसी और महरूमी के कारण अन्य देशों से नफ़रत को अपने अंदर पनपने देंगे और ना ही वहां के लोग हिजरत पर मजबूर होंगे।

यह वह हिक्मत है जो इस इस्लामी शिक्षा में छुपी हुई है कि बुनियादी न्याय तथा इन्साफ़ उपलब्ध करने के बाद और अधिक एहसान से काम लिया जाए और नरमी से सुलूक किया जाए

सामाजिकता का तीसरा स्तर जो क़ुरआन ने सिखाया है वह यह है कि दूसरों से ऐसा ही सुलूक किया जाए जैसा माँ अपने बच्चों से कुदरती मुहब्बत रखने की वजह से करती है। यह निस्वार्थ मुहब्बत किसी भी किस्म के इनाम की उम्मीद के बिना की जाती है। दूसरों के साथ एक माँ की मुहब्बत की तरह नि:स्वार्थ हो कर एहसान की नीयत से सुलूक करना आसान नहीं मगर यह स्तर हमेशा हमारे सम्मुख रहना चाहिए।

अत: अमन की स्थापना के लिए चाहे वह मुस्लिम देशों में हो या विश्वव्यापी सतह पर, यह ज़रूरी है कि हुकूमतों की तरफ़ से कम से कम इन्साफ़ की मांग पूरी की जाएं ताकि समस्त लोगों को उनके हुक़ूक़ बराबर प्राप्त हों और व्यक्तिगत हितों को छोड़ते हुए न्याय और इन्साफ़ को क़ायम रखा जा सके। इसी तरह यह कि विश्वव्यापि संस्था जैसा कि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

यू एन ओ है हर मुल्क से बराबरी का सुलूक रखें और ऐसा ना हो कि मामलों को तय करने में कुछ ताक़तों के हितों के लिए एक तरफ़ झुक जाएं। यह अमन की प्राप्ति के लिए ज़रूरी है और इसी पर अनुकरण कर के हम दुनिया में अमन की स्थापना कर सकते हैं। यह इन्सानियत को ख़तरनाक तबाही से बचाने का एक मात्र रास्ता है

इन कुछ शब्दों के साथ ,यह मेरी दुआ है कि अल्लाह तआला वास्तविक अमन को दुनिया में क़ायम फ़रमाए और अल्लाह करे कि जंग और लड़ाई के घनघोर साय जो हमारे सिरों पर मंडला रहे हैं अमन और ख़ुशहाली की रोशनी में बदल जाएं। मेरी दुआ है कि वे मायूसियाँ और महरूमियाँ ख़त्म हो जाएं जिनके कारण अनगिनत लोग परेशानियों का सामना कर रहे हैं और जिनकी वजह से दुनिया तबाह करने वाली जंगों की लपेट में है।

मेरी यह भी दुआ है कि बजाय दूसरों पर अधिकार जमाने और केवल अपने हुक़ूक़ का तहफ़्फ़ुज़ करने के देशों और उनके लीडरों को उन लाभों पर नज़र रखने वाले हों जो एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा करने से हासिल होंगे। बजाय इस के कि दुनिया के मसलों का ज़िम्मेदार एक विशेष मज़हब या क़ौम को क़रार दिया जाए। मेरी दुआ है कि हम एक दूसरे के अक़ीदों और रिवाज के बारे मैं धैर्य और बर्दाश्त पैदा करें और समाज में मौजूद विभिन्न कल्चरों और इक़दार के मिलन की क़दर और उनका एहतिराम करें। मेरी दुआ है कि हम इन्सानियत की बेहतरीन इक़दार की हिफ़ाज़त करें और अपने बच्चों के लिए एक बेहतर समाज की तामीर में एक दूसरे की ख़ूबियों और हुनर का फ़ायदा उठाते हुए उसे अमन का गहवारा बनाने वाले हों। वर्ना उस के विपरीत हालात जो पैदा हो सकते हैं उनका तो तसव्वुर भी इंतिहाई तकलीफ़ देने वाला है

इस से पहले मैंने बहुत सारे माहिरीन के विचार वर्णन किए हैं जिन्होंने ऐटमी जंग और दुनिया में हथियारों की दौड़ के बारे में ख़बरदार करते हुए अपने डर का इज़हार किया है। यह विषय और इन जैसे और बहुत सारे विषयों पर समीक्षा करते हैं कि दुनिया बहुत तेज़ी से एक बहुत बड़ी तबाही की तरफ़ बढ़ रही है। ऐसी तबाही है जो इन्सान ने पहले कभी नहीं देखी और जिसको रोकना फिर नामुमकिन होगा।

एक अंदाज़ा के अनुसार ऐटमी जंग का प्रभाव 90 प्रतिशत दुनिया पर होगा और अगर ऐटमी जंग होती है तो हम सिर्फ मौजूदा दुनिया की ही तबाही के ज़िम्मेदार नहीं होंगे बल्कि अपने पीछे तबाही और बर्बादी के स्थायी प्रभाव छोड़ेंगे। अत: हमें चाहिए कि हम ठहर कर सोचें और अपने फ़ैसलों और कामों के संभावित भयावह परिणाम पर ग़ौर करें।

हमें किसी भी मामला को , चाहे वह किसी एक देश से सम्बन्ध रखता हो या विश्वव्यापि स्तर का है , मामूली नहीं समझना चाहिए। चाहे हम आर्थिक मामलों से निपट रहे हों या पनाह लेने वालों के मसलों का हल तलाश कर रहे हों या कोई और संकट सम्मुख हो हमें धैर्य के साथ कोशिश कर के इन रुकावटों को ख़त्म करना चाहिए जो हमारे मध्य मतभेदों को पैदा करती हैं। हमें अपनी सारी ताक़तें और क़ुव्वतें अमन की स्थापना में व्यतीत करनी चाहिऐं। हमें हर झगड़े को अमन वाले तरीक़े से निपटाना चाहिए , आपस में बैठ कर बातचीत और आपसी समझौता के माध्यम से मसलों का हल ढूंढना चाहिए और एक दूसरे के अधिकारों की अदायगी और सुरक्षा के द्वारा अमन की स्थापना को यक़ीनी बनाना चाहिए।

अल्लाह तआला हमें ऐसा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन। इन शब्दों के साथ, मैं आप सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप आज यहां तशरीफ़ लाए। आप सब का शुक्रिया।

☆ ☆ ☆

☆ ☆

कलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

इस्लाम और बानी इस्लाम से इश्क़

हर तरफ़ फ़िक्र को दौड़ा के थकाया हम ने
कोई दीं। दीने मुहम्मद सा ना पाया हम ने
कोई मज़हब नहीं ऐसा कि निशाँ दिखलावे
यह समर बाग़ मुहम्मद से ही खाया हम ने
हम ने इस्लाम को ख़ुद तजुर्बा कर के देखा
नूर है नूर उठो देखो सुनाया हम ने
और दीनों को जो देखा तो कहीं नूर ना था
कोई दिखलाए अगर हक़ को छुपाया हम ने
थक गए हम तो इन्हीं बातों को कहते कहते
हर तरफ़ दावतों का तीर चलाया हमने
आज़माईश के लिए कोई ना आया हर-चंद
हर मुख़ालिफ़ को मुक़ाबिल पे बुलाया हम ने
आओ लोगो कि यहीं नूर ख़ुदा पाओगे
लो तुम्हें तौर तसल्ली का बताया हम ने
आज इन नूरों का एक ज़ोर है इस आजिज़ में
दिल को इन नूरों का हर रंग दिलाया हम ने
जब से यह नूर मिला नूर पयम्बर से हमें
ज़ात से हक़ की वजूद अपना मिलाया हम ने
मुस्तफ़ा पर तेरा बेहद हो सलाम और रहमत
इस से यह नूर लिया बारे ख़ुदाया हम ने
मौरिद क़हर हुए आँख में अग़यार के हम
जब से इशक़ इस का तहे दिल में बिठाया हम ने
ज़ोअम में उनके मसीहाई का दावा मेरा
इफ़्तिरा है जिसे अज़ ख़ुद ही बनाया हम ने
काफ़िरो मुल्हिदो दज्जाल हमें कहते हैं
नाम क्या क्या ग़मे मिल्लत में रखाया हम ने
गालियां सुन के दुआ देता हूँ उन लोगों को
रहम है जोश में और ग़ैज़ घटाया हम ने
तेरे मुँह की ही किस्म मेरे प्यारे अहमद
तेरी ख़ातिर से ये सब बार उठाया हम ने
तेरी उल्फ़त से है मामूर मेरा हर ज़र्रह
अपने सीना में ये इक शहर बसाया हम ने
सफ़े दुश्मन को किया हमने ब हुज्जत पामाल
सैफ का काम क़लम से ही दिखाया हम ने
नूर दिखला के तेरा सबको किया मुल्ज़िमो ख़ार
सब का दिल आतिश सोज़ां में जलाया हम ने
हम हुए ख़ैर उमम तुझ से ही ए ख़ैर रसुल
तेरे बढ़ने से क़दम आगे बढ़ाया हम ने
आदमी ज़ाद तो क्या चीज़ फ़रिश्ते भी तमाम
मदह में तेरी वो गाते हैं जो गाया हम ने
क़ौम के ज़ुलम से तंग आके मेरे प्यारे आज
शोरे महशर तेरे कूचा में मचाया हम ने

(आईना कमालात इस्लाम पृष्ठ 224 प्रकाशन 1893 ई)

☆ ☆ ☆

अंग्रेज़ी हुकूमत से तलवार का जिहाद ना करने के कारण

(हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शमस रज़ी अल्लाह अन्हो)

हज़रत मौलाना जलालुद्दीन साहिब शमस रज़ी अल्लाह अन्हो का यह प्रमुख निबन्ध रुहानी ख़ज़ायन भाग नम्बर 17 से लिया गया है जिस में आपने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताब "गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद" के परिचय में यह निबन्ध लिखा है। आपने कई उल्मा के उद्धरणों से यह साबित फ़रमाया है कि उन्होंने भी हज़रत मसीह मौऊद तथा महदी माहूद अलैहिस्सलाम के मौक़फ़ के समर्थन में अंग्रेज़ी हुकूमत से तलवार के जिहाद से मना करने का फ़तवा दिया है। इसी तरह जिहाद के और भी विभिन्न पहलूओं पर आप ने इस निबन्ध में रोशनी डाली है, जो बदर के पाठकों के ज्ञान में वृद्धि के लिए पेश हैं। सम्पादक)

यह रिसाला 22 मई 1900 ई को प्रकाशित हुआ। इस रिसाला में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हक़ीक़त जिहाद और इस की फ़िलासफ़ी वर्णन फ़रमाई और क़ुरआन हदीस और तारीख़ से जिहाद पर रोशनी डालते हुए बताया है कि इस्लाम के आरम्भ में मुसलमानों को मजबूरी की अवस्था में जो जंगें करनी पड़ीं वे केवल वक़्ती और प्रतिरक्षा में और मज़हबी आज़ादी क़ायम करने के लिए थीं। वरना इस्लाम से बढ़कर सुलह तथा शान्ति और अमन तथा सलामती का झण्डा उठाने वाला कोई और मज़हब नहीं है। हज़रत अक़दस ने अपनी कई पुस्तकों में जिहाद के मसला पर रोशनी डाली है और इस की वजह यह है कि आपका मिशन संसार के धर्मों पर दलील तथा बराहीन की दृष्टि से इत्माम हुज्जत और इस्लाम का ग़लबा साबित करना था। और पश्चिमी फिलासफरों और मुस्तश्रिक़ीन उल्मा का सबसे बड़ा एतराज़ इस्लाम पर यह था कि इस्लाम तलवार के ज़ोर से फैला है और वह मज़हब के मामला में जबर तथा ज़बरदस्ती जायज़ रखता है। अत: पादरी मैल्कम मीकाल लंडन के अंग्रेज़ी रिसाला "दी टवनथ सेंचुरी" दिसम्बर 1877 ई के पृष्ठ 832 मैं लिखता है:

"क़ुरआन दुनिया को दो हिस्सों में बांटता है। दारुल इस्लाम अर्थात इस्लाम का देश और दारुल हरब अर्थात दुश्मन का मुलक। जो लोग मुसलमान नहीं हैं वे सब इस्लाम के मुख़ालिफ़ हैं। अत: सच्चे मुसलमान का फ़र्ज़ है कि कुफ़्फ़ार के ख़िलाफ़ जंग करे यहां तक कि वे या तो इस्लाम क़बूल कर लें या क़तल हो जाएं जिसको जिहाद या जंग मुक़द्दस कहते हैं। जिसका ख़ातमा सिर्फ इस आवस्था में हो सकता है कि या तो दुनिया के कुफ़्फ़ार सब के सब इस्लाम क़बूल कर लें या उनका हर एक आदमी मारा जाए। अत: ख़लीफ़ इस्लाम का मुक़द्दस फ़र्ज़ यह है कि जब आवसर आए ग़ैर मुस्लिम दुनिया पर जिहाद किया जाए।

(अंग्रेज़ी से अनुवाद)

सर विलियम म्यूर 'Life of Muhammad" पृष्ठ 533 प्रकाशन लन्दन 1887 ई में लिखते हैं कि मदीना पहुंच कर ताक़त हासिल कर लेने के बाद

"Intolerance quickly took the place of freedom, force of Persuasion ..... Slay the unbelievers wheresoever ye find them; was now the watchword of Islam."

अर्थात "मज़हबी मुज़ाहमत ने आज़ादी की जगह और ज़बरदस्ती ने तरग़ीब की जगह ले ली और इस्लाम का इमतियाज़ी निशान अब यह कलिमा हो गया कि जहां पाओ काफ़िरों को क़तल करो।'

और मेजर आसबरन अपनी किताब ' Islam under the Arab Role" मैं जिहाद के विषय के अन्तर्गत लिखता है:"जब आपको तकलीफ़ें दी जाती थीं उस वक़्त जो उसूल आपने तजवीज़ किए थे उन में से एक यह भी था कि मज़हब में कोई ज़बरदस्ती नहीं होनी चाहिए मगर कामयाबी के नशा ने आपके बेहतर ख़्यालात की आवाज़ को बहुत अरसा पहले ही ख़ामोश करा दिया था। उन्होंने जंग का एक आम फ़रमान जारी कर दिया था (जिसका नतीजा यह था कि अरब वालों ने एक हाथ में क़ुरआन और दूसरे हाथ में तलवार लेकर जलते हुए शहरों के शोलों और तबाह तथा बर्बाद किए ख़ानदानों की चीख़ तथा पुकार के मध्य अपने धर्म का प्रसार किया।"(अंग्रेज़ी से अनुवाद)

(इस्लाम अंडर दी अरब रूल प्रकाशन लॉंग मैन ग्रीन ऐंड कंपनी लंडन, पृष्ठ 46)

चूँकि मग़रिब ने मसला जिहाद की हक़ीक़त ना समझने की वजह से इस्लाम की सूरत सख़्त भयानक रंग में पेश की थी इस लिए हज़रत अक़दस ने अपनी की पुस्तकों में मसला जिहाद पर बेहस की और इस की हक़ीक़त ज़ाहिर फ़रमाई। इस के अतिरक्त कई एक दूसरे कारण इस मसला पर बार-बार लिखने के ये हैं।

(1) आपका दावा मसीह मौऊद और महदी माहूद होने का था और मुसलमानों का यह ख़्याल था कि जब मसीह मौऊद और महदी ज़ाहिर होंगे तो वह काफ़िरों से जंग करेंगे और तलवार के साथ इस्लाम का प्रसार करेंगे। अत: इमाम नौवी हदीस "यज़उल जज़िया" की व्याख्या करते हुए लिखते हैं:

وامّا قوله صلى الله عليه وسلم يضع الجزية و الصواب فى معناه انه لا يقبلها و لايقبلها من الكفار الّا الاسلام، و من بذل منهم الجزية لم يكف عنه بها بل لايقبل الّا الاسلام او القتل هٰكذا قال الامام ابو سليمان الخطابى وغيره من العلماء

(शरह अन्नौवी सही मुस्लिम, भाग 1, पृष्ठ 87 प्रकाशन असहहुल मताबा दिल्ली)

"अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यह फ़रमान कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जज़िया को हटा देंगे उस का सही मफ़हूम यही है कि वह जज़िया क़बूल नहीं करेंगे और कुफ़्फ़ार से सिर्फ उनका इस्लाम लाना क़बूल करेंगे और उन में से अपने आपको जो जज़िया देकर छुड़ाना चाहेगा तो वह इस से क़बूल ना किया जाएगा बल्कि मसीह अलैहिस्सलाम उनके सिर्फ इस्लाम लाने को ही क़बूल करेंगे और अगर कोई इस्लाम ना लाएगा तो उसे क़तल कर देंगे। इमाम अबू सुलैमान अल-ख़ताबी इत्यादि उल्मा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वसल्लम के फ़रमान "यज़उल जज़िया" का यही अभिप्राय वर्णन किया है।

(इसी तरह देखो फ़तहुल बारी शरह सही बुख़ारी ले इब्न हिज्र असकलानी ,भाग 2 पृष्ठ 315)

इसी तरह नवाब मौलवी सिद्दीक़ हसन ख़ान भोपाली अपनी किताब ''हुजजुल किराम' पृष्ठ 374 प्रकाशन मतबा शाहजहानी वाक़्य बलदा भोपाल और उनके साहबज़ादे नवाब मौलवी नूरुल हसन ख़ान साहिब अपनी किताब''इक़तिराबुस्साअ' में महदी माहूद की जंगों के बारे में लिखते हैं

"सारे बादशाह ज़मीन के इताअत में दाख़िल हो जाऐंगे। महदी अपना एक लश्कर हिन्दुस्तान की तरफ़ रवाना करेंगे। यहां के बादशाह आज्ञाकारी हो कर उन के पास हाज़िर किए जाऐंगे। सारे खज़ाने हिंद के

बैतुल-मुक़द्दस भेज दिए जाऐंगे। वे सब ख़ज़ायन बैतुल-मुक़द्दस के ज़ेवर होंगे। कई बरस तक महदी इस अवस्था में रहेंगे।

(इक़तिराबुस्साअ , पृष्ठ 80 प्रकाशन 1309 ह, मतबा सईद अलमताबा बनारस)

अत: अंग्रेज़ी गवर्नमेंट एक तो मुसलमानों के इस अक़ीदा के अनुसार कि मसीह मौऊद और महदी तलवार के साथ काफ़िरों को मुसलमान बनाएंगे या उन्हें क़तल कर देंगे , जमाअत अहमिदया के संस्थापक को उनके दावा मसीहीयत और महदिवियत की वजह से शंका की निगाहों से देखती थी

(2) **दूसरे** इस वजह से कि आपके दावा महदवियत से कुछ साल पहले महदी सूडानी ने (1871 ई-1882 ई) मैं महदी होने का दावा किया और सूडान में जिहाद का ऐलान कर के अंग्रेज़ों से जो जंग तथा क़िताल का हंगामा बरपा किया था और आख़िर 1882 ई में शिकस्त खाई थी अंग्रेज़ उसे भूले नहीं थे। इस लिए महदी का दावा करने वाले को गवर्नमेंट अंग्रेज़ी अच्छी नज़र से नहीं देख सकती थी और ना ऐसे वजूद को बर्दाश्त कर सकती थी।

(3) **तीसरे** यह कि कुछ उल्मा आपके ख़िलाफ़ हुकूमत के पास यह शिकायतें कर रहे थे और हुकूमत को महदी सूडानी का ज़माना याद दिला कर आपके ख़िलाफ़ उकसा रहे थे। अत: मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी का तो यह पेशा हो चुका था। वह अपने रिसाला ''इशाअतुस्सुन्ना' में लिखते हैं:"गवर्नमेंट को इस का एतबार करना उचित नहीं और इस से भयभीत रहना ज़रूरी है वर्ना इस महदी कादियानी से इस क़दर नुक़्सान पहुंचने का भय है जो महदी सूडानी से नहीं पहुंचा।"

(इशाअतुस्सुन्ना, भाग 16 नंबर 6 हाशिया पृष्ठ 168 1893 ई)

(4) **चौथे** पादरी साहिबान जो मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का दलीलों की दृष्टि से मुक़ाबला करने से आजिज़ आ चुके थे वे अपनी शिकस्त का आप से इंतिक़ाम लेना इसी अवस्था में आसान ख़्याल करते थे कि गवर्नमेंट अंग्रेज़ी को जो उनकी हम मज़हब थी आपसे बदज़न कर के आपको क़ैद कराएं या आप पर पाबंदी लगा कर के तब्लीग़ इस्लाम से रोक रखें अत: पादरी हैनरी मार्टिन क्लार्क ने उस मुक़द्दमा इक़दाम क़तल में जो आपके ख़िलाफ़ पादरियों की साज़िश से खड़ा किया गया था यह हलफ़ी ब्यान दिया था कि

"मिर्ज़ा साहिब की निसबत मेरी व्यक्तिगत राय यह है कि वह एक ख़राब फ़ित्ना फैलाने वाला और ख़तरनाक आदमी है अच्छा नहीं है।"

(रुहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 200)

पादरी हैनरी मार्टिन क्लार्क अंग्रेज़ी हुक्काम के साथ खुले रूप में मिलता और उन के साथ खाता पीता, उठता बैठता था गवर्नमेंट अंग्रेज़ी के हुक्काम के कान आपके ख़िलाफ़ भरता रहता था और इसी तरह दूसरे पादरी इमादुद्दीन इत्यादि भी अपनी तहरीरों में भी आप पर इस किस्म के इल्ज़ाम लगाते थे

(5) **पांचवें** आपके दावा का ज़माना वह था जबकि 1857 ई की बग़ावत पर थोड़ा ही अरसा गुज़रा था। बग़ावत में यद्यपि हिंदूओं और मुसलमानों ने हिस्सा लिया था। लेकिन हिंदूओं ने यह कह कर कि असल में मुसलमानों ने अपनी हुकूमत दुबारा क़ायम करने के लिए यह सब फ़ित्ना खड़ा किया है अपने आपको अलग कर लिया और हज़रत अक़दस बानी जमाअत अहमदिया जिन्होंने ख़ुदा के आदेश से महदी होने का दावा किया था। जिसका तात्पर्य अंग्रेज़ों की नज़र में सिवाए बग़ावत के और कुछ ना थे। दूसरे यह कि आप मुग़ल ख़ानदान से थे और इस शिजरा नसब की एक शाख़ थे जिनकी सलतनत का ख़ातमा 1857 ई में अंग्रेज़ों के हाथों से हुआ था। इसलिए आपके बारे में अंग्रेज़ों का ख़्याल करना कि आपने महदी होने का दावा इस लिए किया है कि ताकि अपने ख़ानदान की खोई हुई अज़मत और सलतनत को वापिस लें हैरान करने वाली बात नहीं था। विशेष रूप से जबकि मौलवी और पादरी भी गवर्नमेंट को आपके ख़िलाफ़ भड़काने में दिन रात व्यस्त थे और ख़ुफ़ीया रिपोर्टों के माध्यम से गवर्नमेंट को आप से बदज़न कराने के लिए कोशिशें करते रहते थे। इन्हीं कारणों के आधार पर हज़रत अक़दस को कई बार अपनी पुस्तकों में जिहाद के बारे में मुसलमानों के ग़लत नज़रिया का रद करने और जिहाद की हक़ीक़त वर्णन करने और गवर्नमेंट के बारे में अपने रवैय्या की वज़ाहत करने के लिए इस ख़ास रिसाला के लिखने की ज़रूरत पेश आई। 1857 ई की बग़ावत में आपके ख़ानदान ने जो गवर्नमेंट की ख़िदमत की थी उस का बार-बार ज़िक्र करने की भी यही वजह थी और यह बताना मक़सूद था कि अगर दावा महदवियत से आपका अभिप्राय अपने ख़ानदान की खोई हुई रियासत का वापस लेना होता तो आपका ख़ानदान उस वक़्त जबकि अंग्रेज़ों को अपनी जान के लाले पड़े हुए थे उन की मदद क्यों करता।

अंग्रेज़ी हुकूमत से तलवार के जिहाद ना करने की वजह

आपने अंग्रेज़ों से तलवार के जिहाद को नाजायज़ इसलिए क़रार दिया कि शरीयत इस्लामी की दृष्टि से ऐसी गवर्नमेंट से जो अमन तथा इन्साफ़ क़ायम करती और कामिल मज़हबी आज़ादी देती और मुसलमानों के माल तथा जान की हिफ़ाज़त करती हो, तलवार का जिहाद करना जायज़ नहीं है। अत: आप गवर्नमेंट अंग्रेज़ी की ख़ुशामद करने का इल्ज़ाम देने वालों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाते हैं:"हे नादानो मैं इस गवर्नमेंट की कोई ख़ुशामद नहीं करता बल्कि असल बात यह है कि ऐसी गवर्नमेंट से जो इस्लाम धर्म और धार्मिक रस्मों पर कुछ हाथ नहीं डालती और ना अपने धर्म को तरक़्क़ी देने के लिए हम पर तलवारें चलाती है। क़ुरआन शरीफ़ की दृष्टि से मज़हबी जंग करना हराम है। क्योंकि वह भी कोई मज़हबी जिहाद नहीं करती।"

(किश्ती नूह ,रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 75 हाशिया पृष्ठ 69)

और फ़रमाते हैं :"जिस हालत में शरीयत इस्लाम का यह स्पष्ट मसला है जिस पर समस्त मुसलमानों की सहमति है कि ऐसी सलतनत से लड़ाई और जिहाद करना जिसके अधीन मुसलमान लोग अमन और सुरक्षा और आज़ादी से ज़िन्दगी बसर करते हों और जिसकी उपकारों से उपकृत और एहसान मन्द हों और जिसकी मुबारक सलतनत हक़ीक़त में नेकी और हिदायत फैलाने के लिए कामिल मददगार हो क़तई हराम है।"

(मज्मूआ इश्तिहारात भाग 1 पृष्ठ 66)

और यही मान्यता हज़रत सय्यद अहमद बरेलवी रहमहुल्लाह अलैहि मुजद्दिद तेरहवीं सदी का था। मौलाना मुहम्मद जाफ़र थानेसरी (मौलाना मुहम्मद जाफ़र थानेसरी के बारे में मौलाना मुहम्मद अली जालन्धरी लिखते हैं कि हिन्दुस्तान की तारीख़ में और सियासत में कौन सा छात्र है जो कि मौलाना जाफ़र थानेसरी, मौलाना फ़ज़ल हक़ ख़ैराबादी के नाम और आज़ादी वतन के लिए कोशिश से परिचित नहीं,आज़ाद 17 अप्रैल 1950 ई) लेखक "सवानिह अहमदी" लिखते हैं कि एक पूछने वाले ने यह सवाल किया कि आप अंग्रेज़ों से जो इस्लाम का धर्म का इन्कार करने वाले और इस देश के हाकिम हैं जिहाद कर के हिन्दुस्तान को क्यों नहीं ले लेते? आपने फ़रमाया

"सरकार अंग्रेज़ी यद्यपि इस्लाम की मुनकिर है मगर मुसलमानों पर ज़ुल्म और अत्याचार नहीं करती और ना उन को फ़र्ज़ मज़हबी और इबादत लाज़िमी से रोकती है। हम उनके देश में एलान के साथ नसीहत कहते हैं और मज़हब को फैलाते हैं वे कभी रोकने वाले और मुज़ाहम नहीं होते हमारा असल काम तौहीद इलाही का प्रकाशन और सय्यदुल मुर्सलीन की सुन्नत का पुन: जीवित करना है। अत: वह बिला रोक टोक इस देश में हम करते हैं। फिर हम सरकार अंग्रेज़ी पर किस कारण से जिहाद करें। और ख़िलाफ़ उसूल इस्लाम दोनों पक्षों का ख़ून बिना कारण गिराए। यह

जवाब सुनकर सवाल करने वाला ख़ामोश हो गया और असल उद्देश्य जिहाद का समझ गया।" (सवानिह अहमदी कलां पृष्ठ 71)

और पृष्ठ 139 में लिखते हैं:"सय्यद साहिब का सरकार अंग्रेज़ी से जिहाद करने का हरगिज़ इरादा नहीं था। वह इस आज़ाद हुकूमत को अपनी हुकूमत समझते थे।"

इसी तरह आप के पहले शागिर्द हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल शहीद ने कलकत्ता निवास के दौरान जब कि आप नसीहत फ़र्मा रहे थे। यह सवाल किया गया कि सरकार अंग्रेज़ी पर जिहाद करना उचित है या नहीं ? तो आपने इसके जवाब में फ़रमाया कि :"ऐसी द्वेष रहित और ग़ैर मुतअस्सिब सरकार पर किसी तरह भी जिहाद करना दरुस्त नहीं है।"

(सवानिह अहमदी कलां पृष्ठ 57)

और सर सय्यद अहमद ख़ान मरहूम ने अपनी किताब "रिसाला बग़ावत हिन्द" में दलीलों के साथ प्रमाणित किया है कि बग़ावत 1857 ई जिहाद ना थी और ना मुसलमान अंग्रेज़ी गवर्नमेंट से जिहाद करने के शरीयत के दृष्टि से इजाज़त रखते थे।

इसी तरह मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने एक रिसाला "अलइकतेसाद फ़ी मसाइलुल जिहाद" 1876 ई में लिखी और उलमाए इस्लाम की राय हासिल करने के लिए उन्होंने लाहौर से लेकर अज़ीमाबाद और पटना तक सफ़र किया और विभिन्न इस्लाम के फिर्कों के बड़े उल्मा को यह रिसाला सम्पूर्ण रूप से सुना कर उनकी राय हासिल किया। इस में आप दलीलों से ज़िक्र कर के लिखते हैं

"इन दलीलों से साफ़ साबित होता है कि मुल्क हिन्दुस्तान बावजूद के ईसाई सल्तनत के क़ब्ज़ा में है दारुल इस्लाम है। इस पर किसी बादशाह को अरब का हो चाहे अजम का। महदी सूडानी हो या हज़रत सुलतान शाह ईरानी, ख़ाह अमीर खुरासान हो मज़हबी लड़ाई चढ़ाई करना हरगिज़ जायज़ नहीं।" (अलइकतेसाद पृष्ठ 16)

और लिखते हैं :"अहले इस्लाम को हिन्दुस्तान के लिए गवर्नमेंट अंग्रेज़ी की मुख़ालिफ़त तथा बग़ावत हराम है।"

(इशाअतुस्सुन्ना भाग 6 नम्बर 10 पृष्ठ 187)

और लिखते हैं :"इस अमन तथा आम आज़ादी एवं हुस्न इंतिज़ाम ब्रिटिश गवर्नमेंट की नज़र से अहल हदीस हिन्द इस सल्तनत को बहुत ग़नीमत समझते हैं और इस सल्तनत की प्रजा होने को इस्लामी सल्तनतों की प्रजा होने से बेहतर जानते हैं। और जहां कहीं वे रहें और जाएं (अरब में चाहे रुम में चाहे और कहीं) किसी और रियासत का महकूम तथा प्रजा होना नहीं चाहते।"

(इशाअतुस्सुन्ना नम्बर10 भाग 6 पृष्ठ 293)

यही अक़ीदा नवाब मौलवी मुहम्मद सिद्दीक़ हसन ख़ान आफ़ भोपाल और मौलवी नज़ीर हुसैन मुहद्दिस देहलवी का था और यही फ़तवा मौलवी रशीद अहमद गंगोही और मौलवी अशर्फ़ अली थानवी इत्यादि ने दिया और यही मज़हब मौलवी अब्दुल अज़ीज़ और मौलवी मुहम्मद मुफ़्ती लुधियाना का था कि "अंग्रेज़ी गवर्नमेंट की मुख़ालिफ़त मुसलमानों के लिए शरीयत की दृष्टि से हराम है।"

(नुसरतुल अबरार लेखक मौलवी मुहम्मद मुफ़्ती लुधियाना 1306 हिज्री)

और मौलाना ज़फ़र अली ख़ान सम्पादक अख़बार "ज़मींदार" भी हिन्दुस्तान को दारुल इस्लाम क़रार देते हुए लिखते हैं:"ज़मींदार और उसके पाठक गवर्नमेंट बर्तानिया को ख़ुदा का साया समझते हैं और उसकी इनायात शाहाना और इन्साफ़ ख़ुसरवाना को अपनी दिली इरादत कलबी अक़ीदत का कफ़ील समझते हुए अपने सारे संसार के बादशाह के माथे के एक एक क़तरे के स्थान पर अपने जिस्म का ख़ून बहाने के लिए तैयार हैं और यही हालत हिन्दुस्तान के समस्त मुसलमानों की है।"

(ज़मीनदार 9 नवम्बर 1911 ई)

और लिखते हैं:"मुसलमान एक क्षण के लिए ऐसी हुकूमत से बदज़न होने का ख़्याल नहीं कर सकते। अगर कोई बद-बख़्त मुसलमान गवर्नमेंट से सरकशी का साहस करे तो हम डंके की चोट से कहते हैं कि वह मुसलमान मुसलमान नहीं।" (ज़मींदार11 नवम्बर 1911ई)

इसी तरह अल्लामा अलसय्यद अलहायरी मुज्तहिद अल-असर (शीया लीडर) गवर्नमेंट बर्तानिया का शुक्रिया अदा करते हुए फ़रमाते हैं:"हमें को ऐसी सलतनत के अधीन होने का फ़ख़र हासिल है जिसकी हुकूमत में इंसाफ पसन्दी और मज़हबी आज़ादी क़ानून क़रार पा चुकी है जिसकी तुलना और उदाहरण दुनिया की किसी और सलतनत में नहीं मिल सकती ग़ौर करो कि तुम इस्लाम की तब्लीग़ और इशाअत के लिए कैसे बे-ख़ौफ़ तथा ख़तरा पूरी आज़ादी के साथ आज मैदान में तक़रीरें और नसीहत कर रहे हो। और किस तरह हर किस्म के सामान इस मुबारक ज़माना में हमें मयस्सर आए हैं जो पहले किसी हुकूमत में मौजूद ना थे। पिछली ग़ैर मुस्लिम सल्तनतों के ज़माना में यह हालत थी कि मुसलमान अपनी मस्जिदों में अज़ान तक ना कह सकते थे और बातों का तो ज़िक्र ही क्या है। हलाल चीज़ों के खाने से रोका जाता था। कोई बाक़ायदा तहक़ीक़ात होती ही ना थी इसलिए मैं कहता हूँ कि हर शीया को इस एहसान के बदला में (जो आज़ादी मज़हब की सूरत में उन्हें हासिल है दिल की गहराई से ब्रिटिश हुकूमत का एहसान मानने वाला और शुक्रगुज़ार होना चाहिए और इस के लिए शरीयत की दृष्टि से भी उन को मना नहीं है। क्योंकि पैग़म्बर इस्लाम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नौशेरवाँ आदिल के अह्द सलतनत में होने का ज़िक्र गर्व तथा फ़ख़र के रंग में वर्णन फ़रमाया है।"

(मोइज़ा तहरीफ़ क़ुरआन बाबत माह अप्रैल 1923 ई पृष्ठ 67-68 प्रकाशन यंग मैन सोसाइटी ख़्वाजगान नारोवाल लाहौर)

इसी तरह शमसुल उलमा मौलाना नज़ीर अहमद देहलवी ने अपने लैक्चर में जो 5 अक्तूबर 1888 ई को टाऊन हाल दिल्ली में दिया गवर्नमेंट अंग्रेज़ी के बारे में फ़रमाया :"क्या गवर्नमेंट जाबिर और सख़्ती करने वाली है? तौबा तौबा माँ बाप से बढ़कर शफ़ीक़।"

(मौलाना मौलवी हाफ़िज़ नज़ीर अहमद देहलवी के लैक्चरों का मजमूआ पहली बार 1890 ई पृष्ठ 9)

और फ़रमाया:"जो सुविधाएं हम को अंग्रेज़ी हुकूमत में उपलब्ध है किसी दूसरी क़ौम में इस के मुहय्या करने की सलाहीयत नहीं।"

(इसी तरह पृष्ठ 26)

और ऑनरेबल डाक्टर सर सय्यद अहमद ख़ान बहादुर मुसलमानों से ख़िताब करते हुए अंग्रेज़ी गवर्नमेंट के बारे में फ़रमाते हैं :"बादशाह आदिल का किसी रईयत पर मुस्तूली होना वास्तव में ख़ुदा तआला की अपने बंदों पर रहमत है और नि:सन्देह समस्त प्रजा इस आदिल बादशाह की एहसानमंद है। अत: हम हिन्दुस्तान की प्रजा जो सम्मान्नीय मालिका विक्टोरिया उस की सल्तनत मुल्क हिन्द से इंगलैंड तथा स्थापित रहे, की प्रजा हैं और जो हम पर न्याय तथा इन्साफ़ के साथ बग़ैर क़ौमी तथा मज़हबी तरफ़दारी के हुकूमत करती है सिर से पैर तक एहसानमंद हैं और हम को यह हमारे पाक और रोशन मज़हब की शिक्षा है। हम को उस का उपकार मानना और शुक्र करना वाजिब है।"

(मजमूआ लैक्चर हाय ऑनरेबल डाक्टर सर सय्यद अहमद ख़ान बहादुर हिलाली प्रैस साढौरा दिसम्बर1892 ई पृष्ठ 15)

और 10 मई 1886 ई को अलीगढ़ में तक़रीर में गवर्नमेंट अंग्रेज़ी से अपनी ख़ैर ख़्वाही का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया:"मेरी नसीहत यह है कि गवर्नमेंट की दृष्टि से अपना दिल साफ़ रखो और नेक दिली से पेश आओ और सब तरह पर गवर्नमेंट पर भरोसा रखो।"

(मजमूआ लैक्चर हाय ऑनरेबल डाक्टर सर सय्यद अहमद ख़ान

बहादुर हिलाली प्रैस साढौरा दिसम्बर1892 ई पृष्ठ 239)

अत: जो दृष्टिकोण गवर्नमेंट अंग्रेज़ी से जिहाद के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने वर्णन फ़रमाया समस्त बड़े बड़े उल्मा इसी दृष्टिकोण के समर्थक थे। ऊपर वर्णन किए गए कथनों के इलावा जो मुस्लिम सयासी और मज़हबी मुस्लिम रहनुमाओं के हैं एक जमाअत के बाहर के आदमी (मलिक मुहम्मद जाफ़र ख़ान ऐडवोकेट का वर्णन पेश करना भी अनुचित ना होगा। मलिक साहिब लिखते हैं:"मिर्ज़ा साहिब के युग में उनके मशहूर मुक़तदिर मुख़ालिफ़ीन जैसे मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी , पीर मेहर अली शाह गोलड़वी, मौलवी सनाउल्लाह साहिब और सर सय्यद अहमद ख़ान सब अंग्रेज़ों के ऐसे ही वफ़ादार थे जैसे मिर्ज़ा साहिब। यही वजह है कि इस युग में जो लिट्रेचर मिर्ज़ा साहिब के रद्द में लिखा गया इस में इस बात का कोईवर्णन नहीं मिलता कि मिर्ज़ा साहिब ने अपनी शिक्षाओं में ग़ुलामी पर रज़ामंद रहने की नसीहत की है।"

(अहमदिया तहरीक पृष्ठ 243 प्रकाशन सिंध सागर एकाडमी लाहौर)

सरांक्ष यह कि आपका हुकूमत बर्तानिया की प्रशंसा करना और उसके साथ वफ़ादारी का इज़हार दरअसल एक उसूल के अधीन था। वह यह कि

(1) इस हुकूमत ने पंजाब के मुसलमानों को सिख हुकूमत के अत्याचारों से नजात दिलाई। (2) इस ने मुल्क में अमन क़ायम किया (3) उसने मुल्क में कामिल आज़ादी प्रदान की।

जिहाद अर्थात तलवार से जंग से मना करने का एक अन्य कारण

फिर आप ने तलवार के जिहाद की मनाही का ज़िक्र करते हुए इस बात को भी स्पष्ट किया कि इस देश और इस ज़माना में इसलिए जिहाद अर्थात तलवार से जंग मना है कि जिहाद की शर्तें नहीं पाई जातीं। अत: आप अपनी पुस्तक हकीकतुल महदी में फ़रमाते हैं: فرفعت هٰذه السنّة یرفع اسبابها فی هٰذه الایّام अर्थात तलवार के साथ जिहाद के शर्ते पाई ना जाने के कारण मौजूदा दिनों में तलवार का जिहाद नहीं रहा।

और फ़रमाया ''وامرنا ان نعد للکافرین کما یعدون لنا ولا نرفع الحسام قبل ان نقتل بالحسام'' (हकीकतुल महदी,रुहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 454) और हमें यही आदेश है कि हम काफ़िरों के मुक़ाबला में इसी किस्म की तैयारी करें जैसी वे हमारे मुक़ाबला के लिए करते हैं या यह कि हम काफ़िरों से वैसा ही सुलूक करें जैसा वे हम से करते हैं। और जब तक वे हम पर तलवार ना उठाएं उस वक़्त तक हम भी उन पर तलवार ना उठाएं।

और फ़रमाया:'''وَلَاشَكَّ اَنَّ وُجُوْهَ الْجِهَادِ مَعْدُوْمَةٌ فِیْ هٰذَا الزَّمَنِ وَ هٰذِهِ الْبِلَادِ (तोहफ़ा गोलड़विया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 82) और इस में शक नहीं कि जिहाद के कारण या शर्तें इस ज़माना और इन शहरों में नहीं पाई जातीं। यही बात नवाब मौलवी सिद्दीक़ हसन ख़ान ने "तरजमान वहाबिया" पृष्ठ 20 मैं लिखी है:"जिहाद बग़ैर शरीयत की शर्तों के और बग़ैर इमाम के हरगिज़ जायज़ नहीं।"

और मौलवी ज़फ़र अली ख़ान लिखते हैं:"इस्लाम ने जब कभी जिहाद की इजाज़त दी है। विशेष हालात में दी है। जिहाद मुलक जीतने की हवस की पूर्णता नहीं है इस के लिए इमारत शर्त है। इस्लामी हुकूमत का निज़ाम शर्त है। दुश्मनों की पेशक़दमी और आरम्भ शर्त है।"

(ज़मींदार14 जून1926 ई)

और मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी लिखते हैं "एक बड़ी भारी शर्त शरीयत वाले जिहाद की यह है कि मुसलमानों में इमाम वक़्त का ख़लीफ़ा मौजूद हो मुसलमानों में ऐसी शक्ति प्राप्त जमाअत मौजूद हो जिसमें उनको कसर शौकत इस्लाम का भय ना हो फ़तह तथा ग़लबा इस्लाम का विचार ग़ालिब हो।"(अल-इक्तेसाद फ़ी मसइलिल जिहाद पृष्ठ 31)

और लिखते हैं:"इस ज़माना में शरीयत वाले जिहाद की कोई सूरत नहीं है क्योंकि इस वक़्त ना कोई मुसलमानों का इमाम इमामत की शर्तों के साथ मौजूद है और ना उनको ऐसी शौकत हासिल है जिससे वह अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त कर होने की उम्मीद कर सकें।"

(अल-इक्तेसाद पृष्ठ 42)

और ख़्वाजा हसन निज़ामी देहलवी लिखते हैं "जिहाद का मसला हमारे हाँ बच्चे-बच्चे को मालूम है। वे जानते हैं कि जब कुफ़्फ़ार मज़हबी मामलों में रोक डाल रहे हों और इमाम आदिल जिसके पास जंग तथा लड़ाई का पूरा सामान हो लड़ाई का फ़तवा दे तो जंग हर मुसलमान पर लाज़िम हो जाती है। मगर अंग्रेज़ ना हमारे मज़हबी मामलों में दख़ल देते हैं। ना और किसी काम में ऐसी ज़्यादती करते हैं जिसको ज़ुल्म से ताबीर कर सकें। ना हमारे पास जंग का सामान है। ऐसी अवस्था में हम हरगिज़ हरगिज़ किसी का कहना ना मानेंगे। और अपनी जानों को हलाकत में ना डालेंगे।"

(रिसाला शेख़ सन्नौसी पृष्ठ 17 लेखक ख़्वाजा हसन निज़ामी)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भव से बल्कि आपके जन्म से भी पहले एक अवसर जिहाद का पैदा हुआ और हज़रत सय्यद अहमद बरेलवी मुजद्दिद तेरहवीं सदी ने पंजाब के सिखों के ख़िलाफ़ जिहाद का ऐलान किया। क्योंकि जैसा कि मौलवी मसऊद अहमद नदवी लिखते हैं:"उस वक़्त पंजाब में सिक्खों का ज़ोर था। मुसलमान औरतों का मान सम्मान सुरक्षित ना रहा थी। उनका ख़ून हलाल हो चुका था। गाय की क़ुर्बानी मना थी। मस्जिदों से अस्तबल का काम लिया जा रहा था। अत: अत्याचार का एक बेपनाह सेलाब था जो पाँच दरियाओं की मुस्लिम आबादी को बहाए लिए जा रहा था। आँखें सब कुछ देखती थीं मगर काम करने की शक्तियां अपंग हो चुकी थी।"

(हिन्दुस्तान की पहली तहरीक पृष्ठ 37)

सय्यद साहिब मरहूम की शहादत और उन की हार की वजह यह लिखते हैं:" अपनी बदनसीबी का मातम किन शब्दों में किया जाए दिल में एक हूक उठती है और आँखों में ख़ून उतर आता है। जब कभी मुल्लाओं के फ़तवे और सरहद के ख़ानों की ग़द्दारी याद आती है जाहिल मुल्लाओं ने मुजाहिगीन को वहाबी कहना शुरू किया जिनके सुधार तथा भलाई और सहायता तथा समर्थन के लिए इस असहाय सय्यद ज़ादे और उसके जां

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

निसारों ने हिजरत की तकलीफें सहन कीं वे ख़ुद जान के दुश्मन हो गए। खाने में ज़हर भी दिया गया। पेशावर फ़तह हो चुका था मगर पेशावर के सरदारों की ग़द्दारी के कारण सय्यद साहिब के निर्धारित किए गए अमीरों और ख़ास लोगों का क़त्ले आम हुआ। और फिर इतनी बददिली हुई कि वह पेशावर के आसपास को छोड़कर वादी काग़ान से जुड़े राज द्वारी की वादी को चले गए...और आख़िर बाला कोट में शहीद हुए।

(हिन्दुस्तान की पहली तहरीक पृष्ठ 47)

(उनका जिहाद से उद्देश्य पंजाब के मुसलमानों को सिखों की अत्याचार पूर्ण हुकूमत से नजात और मज़हबी आज़ादी दिलाना था वह इस रंग में पूरा हो गया कि सिखों की जगह अंग्रेज़ पंजाब के हाकिम हो गए और जैसा कि मौलाना मुहम्मद जाफ़र थानेसरी लिखते हैं:"सय्यद साहिब का सरकार अंग्रेज़ी से जिहाद करने का इरादा हरगिज़ नहीं था वह इस आज़ाद हुकूमत को अपनी हुकूमत समझते थे।"

(सवानिह अहमदी कलां, पृष्ठ 139)

इसी लिए मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने लिखा "भाईओ अब तलवार का वक़्त नहीं रहा। अब बजाय तलवार के क़लम से काम लेना ज़रूरी होगा। मुसलमानों के हाथ में तलवार का आना क्योंकर संभव है जबकि उनका हाथ ही नदारद है। एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का जानी दुश्मन है। शीया सुन्नी को और सुन्नी शीया को अहले हदीस अहले तक़लीद को इसी तरह दूसरे क़यास लो हर फ़िर्क़ा दूसरे फ़िर्क़ा को इसी निगाह से देख रहा है।" (इशाअतुस्सुन्ना भाग 6 नम्बर 12 पृष्ठ 365)

अत: आप ने जिहाद की शर्तों के न होने की वजह से शरीयत इस्लामीया के अनुसार शरीयत वाले तलवार के जिहाद को मना क़रार दिया था।

तीसरी वजह आपने तलवार के जिहाद से मना करने की यह वर्णन फ़रमाई कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मसीह मौऊद के बारे में फ़रमाया है कि वह ऐसे युग में ज़ाहिर होगा जबकि मज़हबी आज़ादी होगी और मज़हब के लिए जंग और लड़ाई की ज़रूरत ना होगी। अत: हुज़ूर इसी रिसाला "गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद" में फ़रमाते हैं

"तेरह सौ वर्ष हुए कि मसीह मौऊद की शान में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुंह से कलिमा "यज़ाउल हर्ब" जारी हो चुका है जिसके यह अर्थ हैं कि मसीह मौऊद जब आएगा तो लड़ाईयों का ख़ात्मा कर देगा। और इसी की तरफ़ इशारा इस कुरआन के आयत का है। "हत्ता तज़उल हर्ब औज़ारहा" अर्थात उस वक़्त तक लड़ाई करो जब तक कि मसीह का वक़्त आ जाए।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 8)

और फ़रमाते हैं :"जबकि इस ज़माना में कोई आदमी मुसलमानों को मज़हब के लिए क़तल नहीं करता तो वह किस आदेश से न किए गए गुनाह के लिए लोगों को क़तल करते हैं।"

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 13)

मानो आपका जिहाद को मुलतवी करना अर्थात धार्मिक जिहाद का मना करने का फ़तवा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के पालन में है ख़ुद अपनी तरफ़ से नहीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान का यह मतलब था कि मसीह मौऊद के युग में मुकम्मल मज़हबी आज़ादी पाए जाने के कारण से धार्मिक जंग की ज़रूरत ना होगी।

इस रिसाला के प्रकाशन के कुछ दिन बाद हज़रत अकदस ने फ़तवा मुमानअत धार्मिक जिहाद का नज़म में ज़िक्र किया है जिसके आरंम्भिक शेर में से ये चार शेअर भी हैं

अब छोड़ दो जिहाद का ए दोस्तो ख़्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
अब आ गया मसीह जो दीं का इमाम है
दीं के तमाम जंगों का अब इख़ततताम है
क्यों भूलते हो तुम यज़ाउल हर्ब की ख़बर
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोल कर
फ़र्मा चुका है सय्यद कौनैन मुस्तफ़ा
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इलतिवा

इस नज़म में हज़रत अक़दस अलैहिस्सलाम ने जिहाद के मुलतवी होने का फ़तवा देते हुए ऊपर वर्णन किए गए तीनों कारणों का निहायत उत्तम तरीका में ज़िक्र फ़रमाया है।

(तोहफ़ा गोलड़विया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 77 से 80)

जिहाद की किस्में

फिर आपने इस बात को भी स्पष्ट रूप से फ़रमाया है कि जिहाद सिर्फ तलवार से जंग करना ही नहीं बल्कि जिहाद के अर्थों में व्यापकता पाई जाती है। क़ुरआन मजीद का कुफ़्फ़ार तक पहुंचाना और तब्लीग़ हक़ और नसीहत करना भी जिहाद है बल्कि जिहाद कबीर है। अत: अल्लाह तआला फ़रमाता है:

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا (अल-फ़ुर्कान 53)

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद इस आयत की तफ़सीर में लिखते हैं : "इस में जिहाद में तलवार का जिहाद तो मुराद नहीं हो सकता। यक़ीनन जिहाद कबीर हक़ की इस्तिक़ामत और इस की राह में समस्त मुसीबतें और मशक़्क़तें सहन कर लेने का नाम जिहाद है।"

(मसला ख़िलाफ़त तथा जज़ीरा अरब पृष्ठ 109)

और मौलवी ज़फ़र अली ख़ां इस आयत के बारे में लिखते हैं:"इस आयत में "जाहिद्हुम" से अभिप्राय यह है कि काफ़िरों को नसीहत और उन्हें दावत तथा तब्लीग़ कर के समझाना। इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी ने अपनी तफ़सीर में यूं ही रोशनी डाली है।"

(ज़मींदार 25 जून 1931 ई)

और मौलाना हैदर ज़मान सिद्दीक़ी लिखते हैं "इसी तरह हदीसों में जाबिर हुकमरान के आगे सच्ची बात कहने को बड़ा जिहाद कहा गया है اِنَّ مِنْ اَعْظَمِ الْجِهَادِ كَلِمَةُ حَقٍّ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ (अबू दाऊद तथा तिरमज़ी) अत: धर्म के उसूलों का प्रकाशन तथा धार्मिक मदरसों की स्थापना और हर वह काम जो धर्म की स्थापना के उद्देश्य से किया जाए

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए
अत: हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

जिहाद की हक़ीक़त में शामिल है।"

(इस्लाम का नज़रिया जिहाद किताब मंज़िल लाहौर पृष्ठ 128-130)

फिर हदीस में आता है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जंग तबूक से वापस तशरीफ़ लाए तो आपने फ़रमाया "رَجَعْنَا مِنَ الْجِهَادِ الْأَصْغَرِ إِلَى الْجِهَادِ الْأَكْبَرِ" (बीहक़ी)मानो आपने तलवार के जिहाद को जिहाद असग़र क़रार दिया और तज़किया नफ़्स के जिहाद को जिहाद अकबर क़रार दिया। यही वजह है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तलवार के जिहाद की शर्तों के ना पाए जाने की वजह से फ़रमाया

"देखो में एक आदेश लेकर आप लोगों के पास आया हूँ वह यह है कि अब से तलवार के जिहाद का ख़ात्मा है मगर अपने नफ़्सों के पाक करने का जिहाद बाक़ी है। और यह बात मैंने अपनी तरफ़ से नहीं कही बल्कि ख़ुदा का यही इरादा है। सही बुख़ारी की इस हदीस को सोचो जहां मसीह मौऊद की तारीफ़ में लिखा है कि "यज़उल हर्ब" अर्थात मसीह जब आएगा तो धार्मिक जंगों का ख़ात्मा कर देगा।

(गवर्नमेंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 15)

मना करने का फ़तवा वक़्ती है

आप ने इस पेशगोई के अनुसार जो क़ुरआन और हदीस में पाई जाती थी हमेशा के लिए तलवार के साथ जिहाद को स्थगित नहीं किया बल्कि अपने युग में तलवार के जिहाद की शर्तों का ना पाए जाने की वजह से उस ज़माना तक मंसूख़ या स्थगित किया जब तक कि उसकी शर्ते ना पाई जाएं और जिहाद अकबर और जिहाद कबीर पर अनुकरण करने के लिए बार बार ज़ोर दिया। अत: आप फ़रमाते हैं

" इस ज़माना में जिहाद रुहानी सूरत से रंग पकड़ गया है और इस ज़माना में जिहाद यही है कि इस्लाम की बात को बुलंद करने में कोशिश करें। मुख़ालिफ़ों के इल्ज़ामात का जवाब दें। सुदृढ़ धर्म इस्लाम की खूबियां दुनिया में फैलाएं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई दुनिया पर ज़ाहिर करें यही जिहाद है जब तक कि ख़ुदा तआला कोई दूसरी सूरत दुनिया में ज़ाहिर ना करे।"

(मकतूब हज़रत मसीह मौऊद बनाम मीर नासिर नवाब साहिब मुंदरजा रिसाला दुरूद शरीफ़ पृष्ठ 113)

शब्द "जब तक कि ख़ुदा तआला कोई दूसरी सूरत दुनिया में ज़ाहिर ना करे"और मिसरा "ईसा मसीह जंगों का कर देगा इलतिवा" साफ़ ज़ाहिर कर रहे हैं कि आपको तलवार के जिहाद को मना करने का फ़तवा वक़्ती और सिर्फ उस वक़्त तक के लिए है जब तक कि तलवार से जिहाद की शर्तें ना पाई जाएं। इसी तरह आप पादरी इमादुद्दीन को मसला जिहाद पर एतराज़ का जवाब देते हुए फ़रमाते हैं कि:

"इस आलोचक ने जिहाद इस्लाम का ज़िक्र किया है और गुमान करता है कि क़ुरआन बिना लिहाज़ किसी शर्त के जिहाद पर भड़काता है अत: इस से बढ़कर और कोई झूठ और इफ़्तिरा नहीं अगर कोई सोचने वाला हो। अत: जानना चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ यूँ ही लड़ाई के लिए आदेश नहीं फ़रमाता बल्कि सिर्फ उन लोगों के साथ लड़ने के लिए आदेश फ़रमाता है जो ख़ुदा तआला के बंदों को ईमान लाने से रोकें और इस बात से रोकें कि वे ख़ुदा तआला के आदेशों पर अनुकरण करें और इस की इबादत करें। और उन लोगों के साथ लड़ने के लिए आदेश फ़रमाता है जो मुसलमानों से बेवजह लड़ते हैं और मोमिनों को उनके घरों और वतनों से निकालते हैं और अल्लाह की सृष्टि को जबरन अपने धर्म में दाख़िल करते हैं और इस्लाम धर्म को नाबूद करना चाहते हैं और लोगों को मुसलमान होने से रोकते हैं। ये वे लोग हैं जिन पर ख़ुदा तआला का ग़ज़ब है। وَوَجَبَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَنْ يُّحَارِبُوهُمْ إِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا और मोमिनों पर वाजिब है जवान से लड़ें अगर वे रुक न जाए।"

(नूरुल हक़ हिस्सा अव्वल ,रुहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 62)

आपकी इस तहरीर से साफ़ स्पष्ट है कि आपके नज़दीक जब तलवार के साथ जिहाद करने की शर्तें पाई जाएं उस वक़्त मोमिनों पर तलवार के साथ जिहाद फ़र्ज़ होगा।

इस्लाम ने जहां सुधार तथा नफ़्स की पवित्रता को जिहाद अकबर और नसीहत और तब्लीग़ को जिहाद कबीर क़रार देकर उन्हें स्थायी और अनिवार्य क़रार दिया है वहां उसने तलवार के साथ जिहाद को जिहाद असग़र और वक़्ती क़रार देकर शर्तों के साथ कर दिया है। अत: जहां उसकी शर्तें पाई जाएँगी वहां तलवार के साथ जिहाद वाजिब होगा और जहां शर्तें न होंगी वहां नहीं होगा। चूँकि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माना में हिन्दुस्तान में तलवार के साथ जिहाद की शर्तें नहीं पाई जाती थीं इसलिए आपने उसकी मुख़ालिफ़त का फ़तवा दिया और समस्त बड़े बड़े उल्मा ने अपने कर्म और अपने क़लम से जैसा कि ऊपर साबित किया जा चुका है। आपकी बात का समर्थन किया। लेकिन1947 ई में हिन्दुस्तान के बंटवारा के बाद से हालात तबदील हो गए। पूर्वी पंजाब में मुसलमानों को ख़त्म कर देने के लिए उन पर ग़ैर मुस्लिमों का हमला एक सोची समझी स्कीम के अधीन हुआ अत: जबकि दुश्मन ख़ुद हमला करने वाला हुआ और इस का उद्देश्य मुसलमानों की हस्ती को मिटाना और उनके मज़हब को तबाह करना है तो ऐसे ज़ालिम दुश्मनों के मुक़ाबला में प्रतिरक्षात्मक जंग इस्लाम के अनुसार ठीक जिहाद है।

इस्लाम की लड़ाईयां तीन किस्म से बाहर नहीं (1) प्रतिरक्षात्मक तौर पर अर्थात अपनी हिफ़ाज़त के लिए (2) बतौर सज़ा अर्थात ख़ून के बदला में ख़ून (3) बतौर आज़ादी क़ायम करने अर्थात लड़ने वालों की क़ुव्वत तोड़ने के जो मुसलमान होने पर क़तल करते थे। और उन तीनों किस्मों पर जिहाद के शाब्दिक अर्थों को समक्ष रखते हुए शब्द जिहाद का प्रयोग जायज़ है। लेकिन इस्लाम इस बात का सख़्त विरोधी है कि किसी आदमी को जबर और क़तल की धमकी से धर्म में दाख़िल किया जाए या केवल देश जीतने के लिए और देशों को बढ़ाने के लिए अत्याचार पूर्ण हमला किया जाए।

☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

जिहाद की हक़ीक़त क़ुरआन मजीद की आयतों की रोशनी में

(नसीर अहमद आरिफ़ , मुरब्बी सिलसिला , नज़ारत इस्लाह वो इरशाद मर्कज़िया कादियान

इस्लाम धर्म एक पूर्ण धर्म है और क़ुरआन करीम एक मुकम्मल ज़ाबित हयात है जो इन्सानी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए इन्सान की सम्पूर्ण रहनुमाई करता है और इस को ज़िन्दगी गुज़ारने के समस्त उसूल बताता है और इन्सानी ज़िन्दगी का मक़सद क्या है उसकी राहनुमाई करता है चाहे वह रुहानी काम हों या जिस्मानी काम। क़ुरआन मजीद में जिहाद के किस्मों और इस की जो तफ़सीर वर्णन की गई है विनीत उस को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश करेगा।

स्पष्ट हो कि "जिहाद" का शब्द "जुहद" से निकला है जो अरबी भाषा का एक धातु है और उसके अर्थ हैं कठिनाई बर्दाश्त करना। और जिहाद के अर्थ हैं किसी काम में पूरी कोशिश करना और किसी भी किस्म की कमी ना रहने देना। (ताजुल उरूस)

आम तौर पर जिहाद के अर्थ क़तल और लड़ाई के लिए जाते हैं परन्तु यह अर्थ ग़लत हैं शब्दकोष की दृष्टि से इसके अर्थ मेहनत और मुकम्मल कोशिश के हैं।

जब हम क़ुरआन मजीद और हदीसों का अध्ययन करते हैं तो हमें जिहाद की चार बड़ी किस्मों का पता चलता हैं,जो निम्नलिखित हैं। विनीत इन किस्मों का क़ुरआन मजीद की आयतों की दृष्टि से संक्षिप्त वर्णन करेगा।

(1)जिहाद बिन्नफस अर्थात नफ़्स को हानि पहुंचाने वाली हर चीज़ के ख़िलाफ़ जिहाद करना और अपने नफ़्स को हर शैतानी काम से महफ़ूज़ रखना (2)जिहाद बिल-कुरआन अर्थात क़ुरआन मजीद के माध्यम से इस्लाम की तब्लीग़ करना और क़ुरआन मजीद की वास्तविक और ख़ूबसूरत और अमन वाली शिक्षा को फैलाना(3)जिहाद बिल-माल अर्थात अल्लाह तआला के रास्ता में माल का ख़र्च करना और धर्म की ज़रूरतों के लिए बढ़ चढ़ कर माली क़ुर्बानी करना(4)तलवार का जिहाद अर्थात वे जंगें लड़ना जो केवल प्रतिरक्षा के लिए हों

जिहाद बिन्नफस

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا (अन्कबूत 70) अनुवाद और वे लोग जो हमसे मिलने की कोशिश करते हैं। हम उनको ज़रूर अपने रस्तों की तरफ़ आने की तौफ़ीक़ बख़्शेंगे और नि:सन्देह अल्लाह मुहसिनों के साथ है।

इस से अभिप्राय यह है कि जो लोग ख़ुदा तआला से मुहब्बत को इंतिहा तक पहुंचा देते हैं और ख़ुदा का क़ुरब हासिल करने की भरपूर कोशिश में लगे रहते हैं तो ख़ुदा तआला उनको सफलता और अपना क़ुरब प्रदान करता है और उनकी कोशिश व्यर्थ नहीं जाती बल्कि उसके नतीजा में वे दुनियावी मक़सदों में भी कामयाब तथा सफल होते हैं और ख़ुदा तआला के क़ुरब के रास्ते भी उन पर खुलते चले जाते हैं ओर वे नेकियों में तरिक्कयों का उच्च और बुलंद स्थान हासिल कर लेते हैं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक जंग से वापसी के मौक़ा पर फ़रमाया: हम जिहाद असग़र से लौटकर जिहाद अकबर की तरफ़ आए हैं (और जिहाद अकबर बंदा का अपनी इच्छाओं के ख़िलाफ़ जिहाद है)

(कंज़ुल् अम्माल ,किताबुल जिहाद फ़िल-जिहाद अकबर मिनल अअमाल)

इस हदीस से स्पष्ट होता है कि जिहाद बिन्नफस सबसे बड़ा जिहाद है। अत: जो लोग ख़ुदा तआला से मुहब्बत और विसाल की चेष्टा करते हैं उन पर नेकियों के रास्ते खुलते चले जाते हैं मगर उस के लिए शर्त यह है कि वे ख़ुदा तआला के बताए हुए स्तरों पर पूरे उतरें और किसी भी इबतिला से ना घबराएँ और ना ही परीक्षाओं पर निराशा को प्रकट करें बल्कि आगे से आगे बढ़ते चले जाएं। अत: आज जमाअत अहमदिया भी इस जिहाद में भरपूर हिस्सा ले रही है और हर मैदान में चाहे वे नेकियों का मैदान हो ,चाहे वे इबतिलाओं का मैदान हो दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ती चली जा रही है और ख़ुदा तआला के क़ुरब, प्यार और मुहब्बत के नज़ारों को देख रही है अगर दुश्मन उन पर एक दरवाज़ा बंद करता है तो ख़ुदा तआला सौ दरवाज़े उन पर खोल देता है और वे अपनी इन नेकियों की वजह से मुहब्बत इलाही में तरक़्क़ी की राहों पर दिन प्रतिदिन आगे बढ़ते चले जा रहे हैं और हर मैदान में दूसरे मुसलमानों से बहुत आगे हैं। इस बात का स्वीकारोक्ति ख़ुद ग़ैर अज़ जमाअत भी कर रहे हैं:

(1)अदरणीय शेख़ मुहम्मद अकरम साहिब एम ए लिखते हैं

"इन (मुसलमानों)के मुक़ाबले में अहमदिया जमाअत में ग़ैर मामूली मुस्तइद्दी , जोश , ख़ुद पर भरोसा और बाक़ायदगी है। वे समझते हैं कि समस्त दुनिया के रुहानी बीमारियों का इलाज उनके पास है।"

(मौजे कौसर, पृष्ठ 192)

(2)अदरणीय मक़बूल अल-रहीम मुफ़्ती साहिब लिखते हैं :"जमाअत अहमदिया के अंदर योग्य, विशेषताओं वाले और मेहनती लोग होने का एक कारण बल्कि प्रमुख कारण यह है कि उन्होंने पिछली एक सदी के दौरान हर स्तर पर हर किस्म के झगड़ों और मतभेदों से किनारा करने का रास्ता धारण कर के अपनी जमाअत और जमाअत के लोगों का सुधार तथा सफलता के लिए मंसूबा बंदी के साथ कोशिश तथा मेहनत की है।"

(दैनिक मशरिक़,24फरवरी1994)

जिहाद

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا(अल-फ़ुरकान 53)अनुवाद: अत: तो काफ़िरों की बात ना मान और इसी (अर्थात क़ुरआन के माध्यम से उनसे बड़ा जिहाद कर

इस कुरआन की आयत से मालूम होता है कि अल्लाह तआला मोमिनीन को यह फ़र्मा रहा है कि तुम काफ़िरों की बातें ना मानो बल्कि क़ुरआन करीम के माध्यम से जिहाद करो और यह जिहाद तब्लीग़ इस्लाम का जिहाद है। जो दूसरे नंबर का सबसे बड़ा जिहाद है और यह जिहाद हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है लेकिन आजकल मुसलमान इस जिहाद से कोसों दूर हैं। यह ख़ुदा तआला का जमाअत अहमदिया पर महान उपकार है कि यह काम अर्थात जिहाद अकबर उसने आज जमाअत अहमदिया के सपुर्द कर दिया है और जमाअत अहमदिया इस जिहाद में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से एक विशेष स्थान रखती है और उस के लिए बस्ती बस्ती जाकर लोगों को इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से परिचित करवा रही है। क़ुरआन मजीद की बरकतों और फ़ज़ीलतों को बता रही है। उसकी वास्तविक ख़ूबसूरत और अमन वाली शिक्षा से परिचित करवा रही है और क़ुरआन मजीद की महान बरकतें बता कर उनको इस्लाम से जोड़ रही है इस बात को दूसरे भी स्वीकार कर रहे हैं:

(1)मौलाना ज़फ़र अली ख़ान साहिब ऐडीटर अख़बार ज़मींदार लाहौर लिखते हैं

"घर बैठ कर अहमदियों को बुरा-भला कह लेना बहुत आसान है लेकिन इस से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि यही एक जमाअत है जिसने अपने मुबल्लग़ीन इंग्लिस्तान में और अन्य यूरोपीयन देशों में भेज रखे हैं।" (अख़बार ज़मींदार ,लाहौर, दिसम्बर1926 ई)

(2)जनाब अब्दुल हक़ साहिब अपने निबन्ध "उलमाए इस्लाम से गुज़ारिश" में लिखते हैं

"कादियानी टैलीविज़न पाकिस्तान के घर-घर में दाख़िल हो चुका है क़ुरआन मजीद की तिलावत तथा तफ़सीर, दर्स हदीस , हमद तथा नात और समस्त क़ौमों के क़ादियानियों को विशेष रूप से अरबों को बार-बार पेश करके क़ादियानी हमारी नौजवान नस्ल के ज़हन पर पूरी तरह छा रहे हैं।" (साप्ताहिक अल्इत्तसाम,24 जनवरी1997 ई)

(3)मौलाना मन्ज़ूर अहमद चुनौटी साहिब ने एक इन्ट्रविय़ू में कहा: "रूसी ज़बान में क़ादियानी जमाअत ने क़ुरआन करीम का अनुवाद करवा कर पूरे रूस में बांटा है कम से कम सौ ज़बानों में क़ादियानियों ने अनुवाद प्रकाशित करवाए हैं जो पूरी दुनिया में बांटे जाते हैं।"

(साप्ताहिक वजूद कराची 2000 ई पृष्ठ 31)

(4)क़ाज़ी मुहम्मद असलम सैफ़ साहिब फ़िरोज़पुरी निबन्ध "दीनी जमाअतों के लिए लम्हा फ़िक्रिया" में लिखते हैं : क़ादियानियों का बजट करोड़ों रुपए पर आधारित होता है। तब्लीग़ के नाम पर दुनिया-भर में वे अपने जाल फैला चुके हैं। उनके मुबल्लग़ीन दूर के देशों की ख़ाक छान रहे हैं। बीवी, बच्चों और घर बार से दूर बहुत थोड़े पर धैर्य कर के अफ़्रीक़ा के तपते सेहराओं में ,यूरोप के ठंडे सब्ज़ा वाले इलाक़ों में , आस्ट्रेलिया, कैनेडा और अमरीका में क़ादियानियत की तब्लीग़ के लिए मारे-मारे फिरते हैं।

(साप्ताहिक अहले हदीस, लाहौर,11 सितम्बर 1992 पृष्ठ 11-12)

अत: यह वह महान जिहाद कबीर है जिसे आज जमाअत अहमदिया सरअंजाम दे रही है। जिसका ज़िक्र मुख़ालिफ़ीन अहमदियत निहायत फ़िक्र वाले शब्दों में करते हैं मगर आज उन्हें इस बात की तौफ़ीक़ नहीं कि वे इस जिहाद को अंजाम दे सकें। वे बिना कारण अहमदियों पर आरोप लगाते हैं कि अहमदी जिहाद के मानने वाले नहीं हालांकि अल्लाह तआला ने आज क़ुरआन मजीद के माध्यम से जिहाद करने वाले अहमदियों को हर मैदान में फ़तह और नुसरत प्रदान फ़रमाई है और बावजूद इंतिहाई विरोध के वे दुनिया के दौर दराज़ देशों में जाकर इस जिहाद को सरअंजाम दे रहे हैं और वे लोग जो हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को गालियां देते थे इस तब्लीग़ के नतीजा में वे आप(स) पर दरूद और सलाम भेजने वाले बन गए हैं

जिहाद बिल-माल

अल्लाह तआला की राह में धर्म की इशाअत के लिए माल ख़र्च करने को भी जिहाद कहा गया है। अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है:وَجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ (अत्तौबा 41) अनुवाद: और अल्लाह तआला की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करो

अल्लाह के फ़ज़्ल से आज जमाअत अहमदिया इस जिहाद में भी विशेष और उच्च स्थान रखती है और हर दिन जो जमाअत अहमदिया पर चढ़ता है इस जिहाद की बरकत की बदौलत नई से नई तरक्कियों के दरवाज़े जमाअत पर खुलते चले जा रहे हैं। बेशक जमाअत के लोगों पर परीक्षाओं और तूफ़ानों का युग है मगर वे अपनी माली और जानी क़ुर्बानियों के माध्यम से ऐसा नमूना प्रस्तुत कर रहे हैं कि जिसका उदाहरण मिलना मुश्किल ही नहीं बल्कि असंभव है और जमाअत के बाहर के लोग ,जमाअत की इस माली क़ुर्बानी को देखकर हैरत में हैं। इस सम्बन्ध में कुछ ग़ैरों की प्रतिक्रियाएं नीचे लिखी हैं:

(1) आदरणीय हाफ़िज़ अब्दुल वहीद साहिब अपने सम्पादकीय में लिखते हैं: "एक समीक्षा के अनुसार दुनिया में मौजूद हर कादियानी अपनी मासिक आमदनी का दस प्रतिशत स्वैच्छिक तौर पर अपने मज़हब की तब्लीग़ पर खर्च करता है। किसी हंगामी ज़रूरत पर ख़र्च करना इसके इलावा है। इन्हीं फ़ंडज़ की बदौलत इस वक़्त एक स्थायी TV और रेडियो स्टेशन क़ायम किया जा चुका है जिस से चौबीस घंटे क़ादियानियत का तब्लीग़ी मिशन जारी रहता है।"

(सम्पादकीय अल्इत्साम,11 फरवरी 2000 ई)

(2)अब्दुर्रहीम अशर्फ़ साहिब लिखते हैं "इन(अर्थात जमाअत अहमदिया)के कुछ दूसरे देशों की जमाअतों और लोगों ने करोड़ों रूपयों की जायदाद सदर अन्जुमन अहमदिया रब्वा और सदर अंजुमन अहमदिया कादियान के नाम वक़्फ़ कर रखी हैं।"

(साप्ताहिक अलमुनीर 2 मार्च 1956 ई)

(3)आदरणीय मौलवी मन्ज़ूर अहमद साहिब चिनौटी अपने एक इंटरव्यू में कहते हैं : "हर कादियानी अपनी आमदनी का दसवाँ हिस्सा अपने मज़हब के प्रचार तथा प्रसार के लिए कादियानी जमाअत को देता है, हज़ारों लोग अपनी जायदाद के दसवें हिस्सा के लिए वसीयत कर चुके हैं ....पाँच लाख रुपए प्रति घंटा के हिसाब से जमाअत ने TV लिया हुआ है। 24 घंटे TV चैनल चलता है। हमारे पास इतने संसाधन नहीं हैं।

(साप्ताहिक वजूद कराची ,28 नवम्बर2000 ई)

अत: आज ख़ुदा तआला ने जमाअत अहमदिया को ऐसे मुख़लसीन प्रदान किए हैं जिन्होंने क़ुर्बानीयों के उदाहरणों को क़ायम कर दिया। हर नया दिन नई शान के साथ माली क़ुर्बानी करने वालों का इतिहास लिख रहा है और फिर ये मुख़लसीन केवल और केवल ख़ुदा तआला के आदेश पर चलते हुए अल्लाह तआला का फ़ज़्ल समझ कर माली जिहाद करते हैं और कोई आदमी जमाअत पर एहसान समझते हुए क़ुर्बानी नहीं करता बल्कि सिर्फ यह मक़सद होता है कि अल्लाह तआला का पैग़ाम दुनिया तक पहुंचे। बेशक अहमदियत के विरोधियों ने जमाअत अहमदिया को नाकाम तथा असफल करने के लिए हर संभव कोशिश की, उनकी जायदादें तबाह की गईं, माल लूटे गए मगर हर परीक्षा में जमाअत साबित-क़दम रही और अपनी माली क़ुर्बानियों के स्तर को गिरने नहीं दिया इन्ही माली क़ुर्बानीयों की वजह से इस्लाम की शिक्षा दुनिया के कोने कोने में पहुंच रही है और आज ख़ुदा के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया के 212 देशों में ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह का झंडा गाड़ चुकी है और यह सिलसिला निरन्तर जारी है

तलवार का जिहाद

जिहाद की इस चौथी किस्म का नाम तलवार का जिहाद है अर्थात प्रतिरक्षा की जंग अर्थात दुश्मन जब धर्म को तबाह तथा बर्बाद करने के लिए धर्म पर हमला करे तो उस समय दुश्मन से प्रतिरक्षा का जंग करने को तलवार का जिहाद कहते हैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे जिहाद असग़र क़रार दिया है

अल्लाह तआला क़ुरआन मजीद में फ़रमाता है

اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُ ۙ○ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ اِلَّاۤ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ○

(अल-हज्ज 40-41) अनुवाद : और उन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ क़िताल किया जा रहा है (क़तल की इजाज़त दी जाती है क्योंकि उन पर ज़ुल्म किए गए और नि:सन्देह अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। (अर्थात) वे लोग जिन्हें उनके घरों से नाहक़ निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है। और अगर अल्लाह

की तरफ़ से लोगों का दिफ़ा उन में से कुछ को कुछ दूसरों से भिड़ा कर ना किया जाता तो राहिब ख़ाने नष्ट कर दिए जाते और गिरजे भी और यहूद के उपासना स्थल भी और मस्जिदें भी जिन में बहुत अधिक अल्लाह का नाम लिया जाता है। और नि:सन्देह अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो उस की मदद करता है। नि:सन्देह अल्लाह बहुत ताक़तवर (और)पूर्ण ग़लबा वाला है।

बेशक इस्लाम अमन वाला मज़हब है और आक्रमण और हमला करने की इजाज़त नहीं देता बल्कि सिर्फ अपनी रक्षा की इजाज़त देता है और वह भी सिर्फ इस अवस्था में जबकि दुश्मन मुसलमानों पर हमला करने में पहल करे। यह सिर्फ़ दावा ही नहीं बल्कि मुसलमानों ने ऐसा ही किया और हरगिज़ जंग इत्यादि में पहल नहीं की। ऊपर वर्णित आयत में मुसलमानों को अल्लाह तआला ने अपने प्रतिरक्षा की इजाज़त दी तो तभी मुसलमानों ने केवल अपनी प्रतिरक्षा के लिए लड़ाईयां लड़ीं, कुछ इस्लाम के उल्मा ने प्रतिरक्षात्मक जंग की कुछ शर्तों का वर्णन भी किया है जिनके बिना जिहाद जायज़ नहीं।

(1)मुकर्रम मौलाना ज़फ़र अली ख़ान साहिब लिखते हैं(1)इमारत।(2) इस्लामी निज़ाम हुकूमत (3)दुश्मनों की पेशक़दमी तथा आरम्भ।

(अख़बार ज़मींदार ,14 जून1934 ई)

(2)मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी साहिब लिखते हैं:(1)मुसलमानों में समय का इमाम ख़लीफ़ा मौजूद हो।(2)मुसलमानों में ऐसी ताकत वाली जमाअत हो मौजूद हो जिस में उनको इस्लाम की शौकत के समाप्त होने का भय ना हो।

(अल-इकतिसाद फ़ी मसलुल जिहाद, पृष्ठ 51-52)

(3) मौलवी नज़ीर हुसैन साहिब देहलवी लिखते हैं : जिहाद की कई शर्तें हैं जब तक वे पाई ना जाएं जिहाद ना होगा।

(फतावा नज़ीरया, भाग 3 किताबुल इमारत वल-जिहाद, पृष्ठ 282)

उल्मा की इन तहरीरों से पता चलता है कि उनके निकट तलवार के जिहाद के लिए पाँच शर्तों का पूरा होना लाज़िमी है उनमें से किसी एक के भी ना होने पर धार्मिक क़िताल नहीं हो सकता और वे शर्तें निम्नलिखित हैं।

(1)इमाम वक़्त का होना (2)इस्लामी निज़ाम हुकूमत का होना(3) हथियार इत्यादि जो मुक़ाबला के लिए ज़रूरी हों (4)कोई देश अपना हो या इलाक़ा हो (5) दुश्मन की पेशक़दमी और आरम्भ हो।

आज के मुसलमान और उनके उल्मा जो जिहाद का नारा लगाते हैं और मासूम इन्सानों को क़तल करते हैं या करवाते हैं इस का इस जिहाद से दूर का भी सम्बन्ध नहीं जिसे क़ुरआन मजीद वर्णन करता है अगर यह कुरआन का जिहाद होता तो अल्लाह तआला ज़रूर उनको विजय प्रदान करता और ग़लबा प्रदान फ़रमाता लेकिन इतिहास गवाह है कि उनको हर मैदान में शिकस्त ही मिली और वह असफल तथा नाकाम हुए।

अत: यह बात समझने की ज़रूरत है कि इस्लाम की अमन वाली शिक्षा के बावजूद मुसलमानों में जिहाद का ग़लत अभिप्राय कहाँ से आ गया तो यह भी इस्लाम के दुश्मनों का ही षड्यंत्र था। दुश्मनों ने देखा कि इस्लाम तरक़्क़ी कर रहा है और वे उस का मुक़ाबला करने में असफल हैं और दूसरी तरफ़ वे उसे बर्बाद और बदनाम भी करना चाहते थे ,अत: उन्होंने इस्लाम में शामिल हो कर ग़लत अक़ीदे को फैलाना शुरू कर दिया और इस्लाम में बहुत सारी ग़लत-फ़हमियाँ पैदा कर दीं और मुसलमान उनकी इन फैलाई हुई ग़लत-फ़हमियों का शिकार हो गए। इन ग़लत-फ़हमियों को दूर करने के लिए ही अल्लाह तआला ने आज हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी को मसीह मौऊद और इमाम महदी बनाकर भेजा और आपने जिहाद की हक़ीक़ी तफ़सीर वर्णन कर के इन ग़लत-फ़हमियों को दूर किया और जिहाद के स्थगित होने का ऐलान किया और यह स्थगित होना आपने हरगिज़ अपनी तरफ़ से नहीं किया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार कि मसीह मौऊद और इमाम महदी के ज़माना में मज़हबी जंगों का इलतिवा होगा ,फ़रमाया "यज़उल हर्ब" वह जंग को स्थगित कर देगा।

(बुख़ारी, किताबुल अम्बिया,बाब नुज़ूल ईसा इब्न मर्यम)

अत: जमाअत अहमदिया के संस्थापक मसीह मौऊद और महदी होने के मुद्दई थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोई के अनुसार क़िताल की शर्तें मौजूद ना होने की वजह से इस के स्थगित होने का ऐलान फ़रमाया। आप ने फ़रमाया

अब छोड़ दो जिहाद का ऐ दोस्तो ख़्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
क्यों भूलते हो तुम यज़उल हर्ब की ख़बर
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोल कर

(रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 17 तोहफ़ा गोल्ड़विया, पृष्ठ 77-78)

आप फ़रमाते हैं : "इस बात में कोई शक नहीं कि इस ज़माना में और इस मुल्क में जिहाद की शर्तें मफ़क़ूद हैं अमन और आफ़ियत के दौर में जिहाद नहीं हो सकता।"

(रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 17 तोहफ़ा गोलड़विया, पृष्ठ 82 अरबी इबारत से अनुवाद)

आप यह भी फ़रमाया कि :"मोमिनों पर वाजिब है जवान से लड़ें अगर वे रुक न जाए।"

(रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 8 नूरुल हक़, हिस्सा अव्वल, पृष्ठ 62)

बेशक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने तलवार के जिहाद के इलतिवा का ऐलान फ़रमाया मगर साथ यह भी फ़र्मा दिया कि जब जिहाद की शर्तें मौजूद होंगी तो यह जिहाद भी होगा। आपने स्पष्ट रंग में फ़रमाया कि "हम (अहले इस्लाम को)यह भी आदेश है कि दुश्मन जिस तरह हमारे ख़िलाफ़ तैयारी करता है हम भी उसके ख़िलाफ़ इसी तरह तैयारी करें।"

(रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 14 हकीकतुल महदी, पृष्ठ 454)

अत: प्रिय पाठको !क़ुरआन मजीद के अध्ययन से हमें मालूम होता है कि सबसे प्रथम स्तर का जिहाद वह है जो इन्सान अपने नफ़्स के ख़िलाफ़ करता है और ख़ुद को गुनाहों और ख़राबियों और बुराइयों से बचाता है और नेक कामों की वजह से रूहानियत में तरक़्क़ी कर के ख़ुद को पवित्र और आचरण वाला इन्सान बना लेता है तो उस के बाद उसे दूसरे स्तर का जिहाद करने का आदेश दिया जाता है अर्थात क़ुरआन मजीद की शिक्षाओं को दूसरों तक पहुंचाए और प्यार तथा मुहब्बत और तर्कों के माध्यम से इस धार्मिक शिक्षा से लोगों को परिचित करवाए और तीसरे दर्जा का जिहाद माल के द्वारा है अर्थात ख़ुदा तआला की राह में धार्मिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए माली क़ुर्बानी करना और इस में बढ़ चढ़ कर लेना। और चौथा जिहाद, जो जिहाद असग़र कहलाता है सिर्फ और सिर्फ उसे तब करने की इजाज़त है जब इस पर ज़ुलम किया जाए और उसे रब्बुनल्लाह कहने से रोका जाए ,जब वह यह जिहाद करता है तो ख़ुदा तआला भी इसकी मदद तथा सहायता के लिए आ जाता है।

अत: आज जमाअत अहमदिया किसी भी जिहाद के मैदान में पीछे नहीं बल्कि इतनी आगे है कि कोई दूसरा उसकी धूल को भी नहीं पहुंच सकता। चाहे वह इस्लाह नफ़्स का जिहाद हो ,चाहे वह दावत क़ुरआन का जिहाद हो, चाहे वह माली जिहाद हो हर मैदान में दुश्मन की मुख़ालिफ़ाना कोशिशों के बावजूद जमाअत अहमदिया हर मैदान में कामयाबियों के झंडे गाढ़ रही है और ख़ुद दुश्मन भी इस बात को स्वीकार करते हैं।

अत: अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया को जिहाद के हर मैदान में बढ़ाता चला जाए। आमीन

☆ ☆ ☆

जिहाद का वास्तविक अभिप्राय

आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदर्श की रोशनी में

(फ़लाहुद्दीन क़मर, मुरब्बी सिलसिला, नज़ारत उल्या, जुनूबी हिन्द)

इस्लाम धर्म एक कामिल और सम्पूर्ण धर्म है इसी तरह इस्लाम धर्म का रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी कामिल रसूल और शरीयत इस्लाम एक सम्पूर्ण शरीयत है और एक ऐसी पूर्ण जीवन शैली है कि जो ज़िन्दगी के हर मैदान में इन्सान का मार्ग दर्शन करती है। इन्सान को इस के जन्म के उद्देश्य से सुचित करता है और इस को उसूल ज़िन्दगी सिखाता है। और सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी मुबारक सुन्नत और हदीसों का एक ऐसा महान ख़ज़ाना उम्मत मुस्लिमा के लिए छोड़ा है जो क़यामत तक उम्मत के लिए मार्ग दर्शन और प्यासी रूहों की तृप्ति का कारण है। इस्लाम धर्म जहां ज़िन्दगी के अन्य विभागों के नियमों से परिचित करवाता है, वहां अगर किसी वक़्त इस्लाम दुश्मनों की तरफ से ज़बरदस्ती जंग थोप दी जाए तो अपनी प्रतिरक्षा करने के हालात तथा नियम भी बताता है और इस की तस्वीर हमें हमारे प्यारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकत वाली ज़िन्दगी में नज़र आती है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में मोमिनों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا

(सूरत अल-हज आयत 22) अनुवाद नि:सन्देह तुम्हारे लिए हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही बेहतरीन नमूना हैं जो तुम में से अल्लाह और आख़िरत की दिन की उम्मीद रखता है और बहुत अधिक अल्लाह तआला को याद करता है

वर्तमान समय में इस्लाम के मुख़ालिफ़ीन की तरफ से विभिन्न आरोपों के माध्यमों से इस्लाम को निशाना बनाया जाता है। इन में से एक बड़ा आरोप यह है कि जिहाद को लेकर इस्लाम जैसे शान्ति पूर्ण मज़हब को दहशतगर्दी से जोड़ा जाता है। इस्लाम के शत्रु दुनिया के सामने यह तस्वीर प्रस्तुत करते हैं कि नऊज़-बिल्लाह इस्लाम दहशतगर्दी का आदेश देता है और ज़बरदस्ती लोगों को मुसलमान बनाना जायज़ क़रार देता है और कुछ अपनी अंधी शत्रुता के जोश में यहां तक कह देते हैं कि नऊज़ बिल्लाह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तलवार के माध्यम से इस्लाम को फैलाया है। और इन आरोपों की सबसे बड़ी वजह एक तो इस्लाम से शत्रुओं की अंधी शत्रुता है और दूसरे मुसलमान उल्मा की जिहाद की ग़लत व्याख्याए हैं जबकि हक़ीक़त इस के बिलकुल विपरीत है। आज हम रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बरकतों वाली ज़िन्दगी और आप के बरकतों वाले नमूना से जिहाद को समझने की कोशिश करेंगे ताकि जिहाद का हक़ीक़ी अभिप्राय समझ में आ सके।

अत: स्पष्ट हो कि जिहाद "जहद" पर आधारित है और "जहद" के अर्थ हैं मेहनत बर्दाश्त करना और जिहाद के अर्थ हैं किसी काम के करने में पूरी तरह कोशिश करना और किसी प्रकार की कमी ना करना।

(ताजुल उरूस)

अत: क़ुरआन करीम और हदीस में जिहाद की बहुत सी किस्मों वर्णन हुई हैं लेकिन मोटे तौर पर तीन क़िस्में वर्णन की जाती हैं और हक़ीक़त में वही अस्लुलउसूल हैं और जो कि नीचे लिखी हैं

(प्रथम)जिहाद अकबर अर्थात जिहाद बिन्नफस

(द्वितीय)जिहाद कबीर अर्थात कुरआन के साथ जिहाद

(तृतीय)जिहाद असग़र अर्थात तलवार से जिहाद

प्रथम जिहाद अकबर अर्थात जिहाद बिन्नफस

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की 63 वर्ष की बरकत वाली ज़िन्दगी के जिहाद अकबर का सिलसिला मक्का मुकर्रमा में ग़ारे हिरा के अन्धेरों से लेकर मदीना मुनव्वरा की शाहाना विजयों तक फैला हुआ है। आपकी ज़िन्दगी का हर लम्हा जिहाद अकबर अर्थात नफ़्स के जिहाद में व्यतीत हुआ। अत: आप ने नेकी तथा पवित्रता, तक़्वा तथा संयम, भाईचारा तथा मुहब्बत और सच्चाई तथा अमानत के वे उच्च नमूने क़ायम फ़रमाए कि दुश्मन भी आपको सिद्दीक तथा अमीन कहे बिना ना रह सके।

अत: हदीस में आता है कि आप ने दावा नुबूव्वत फ़रमाया तो मक्का वालों की तरफ़ से आप और आपके मानने वालों पर अत्याचारों का सिलसिला शुरू हो गया जो दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया जो आप के पड़ोस में रहते थे उन का रोज़ का काम था कि आपके घर में पत्थर फेंकते और दरवाज़ों पर कांटे डाल देते। एक बार आप काबा के पास नमाज़ पढ़ रहे थे कि उक़बा बिन अबी मईत ने आपके गले में कपड़ा डाल कर इतना दबाया कि आपका दम घुटने लगा जब हज़रत अबूबकर रज़ि को ज्ञान हुआ तो वह दौड़े हुए आए और आप को इस बुरी किस्मत वाले के शर से बचा या और एक बार आप नमाज़ पढ़ रहे थे और जब आप सजदा में गए तो किसी ने आप के ऊपर ऊंटनी की ओझड़ी लाकर रख दी और इस के बोझ से इस वक़्त आप सिर ना उठा सके जब तक कि कुछ लोगों ने पहुंच कर इस ओझड़ी को आपकी पीठ से न उठाया।

(सही बुख़ारी, किताबुस्सलात)

इन समस्त किस्म की ज़ालिमाना कार्यवाईयों के बावजूद सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्षमा और दया का जिहाद करते हुए हमेशा बुराई का जवाब नेकी, दुआ और सिला रहमी से देते रहे क्योंकि यही वह महान जिहाद था जिस के लिए आप को मबऊस किया गया था। अत: रिवायत में आता है कि

عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم انہ من بعض غزواتہ فقال رجعنا من الجہاد الاصغر الی الجہاد الاکبر قال وھی مجاھدۃ النفس

(कन्ज़ुल उमाल, किताबुल जिहाद फ़ी जिहाद अल अकबर मिनल अइमाल, भाग 4 हदीस 11260 प्रकाशन मकतबा अलत्तुरास अस्सलामी हलब)

अनुवाद: एक बार सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम एक जंग से वापस लौट रहे थे तो आपने फ़रमाया कि हम सबसे छोटे जिहाद अर्थात जंग से वापस आ रहे हैं और सबसे बड़े जिहाद, जिहाद अकबर अर्थात नफ़्स के जिहाद की तरफ़ जा रहे हैं।

एक और रिवायत में आता है आप ने फ़रमाया कि

المجاھد من جاھد نفسہ فی طاعۃ اللہ

(मिशकातुल किताब अल-ईमान)

अर्थात मुजाहिद वह है जो अल्लाह तआला की आज्ञाकारी में अपने नफ़्स को कठिनाई में डालता है।

अत: सबसे बड़ा जिहाद सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ने जिहाद बिन्नफस को क़रार दिया है और आप का व्यवहारिक नमूना इस बात पर गवाह कि आप अन्तिम सांस तक इस जिहाद पर क़ायम रहे। जैसे हदीस में आता है हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि सय्यदना हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात को उठ कर नमाज़ पढ़ते। यहां

तक कि आपके मुबारक पांव सूज जाते। एक बार मैंने आप से निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल आप क्यों इतनी तकलीफ़ उठाते हैं जबकि अल्लाह तआला ने आपके अगले पिछले सब क़सूर माफ़ फ़र्मा दिए हैं। इस पर सय्यदना हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या मैं यह ना चाहूँ कि अपने रब के इस फ़ज़ल तथा एहसान पर इस का शुक्रगुज़ार बंदा न बनूं।

(सही बुख़ारी, किताबुल तफ़सीर सूर अल फ़तह)

फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जिहाद अकबर को और व्यापक करते हुए फ़रमाया कि

عن انس رضی اللہ عنہ ان البنی صلی اللہ علیہ وسلم قال جاھد والمشرکین باموالکم وانفسکم والسنتکم

(अबू दाऊद, किताबुल जिहाद पृष्ठ 339)

अर्थात हज़रत अनस रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुशरिकों से अपने माल ,अपनी जानों और अपनी ज़बानों के माध्यम से जिहाद करो।

सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिहाद अकबर के अन्तर्गत तीन और जिहाद शामिल फ़र्मा दिए हैं। आप ने फ़रमाया कि जैसे जिहाद बिन्नफस ज़रूरी है इसी तरह माल का जिहाद और ज़बान का जिहाद भी फ़र्ज़ है। अत: उस के उदाहरण भी हमें हदीसों से मिलते हैं कि कैसे आप के मानने वालों ने आपके एक इशारा में अपना सब कुछ अल्लाह तआला की राह में क़ुर्बान कर दिया। हदीस में है कि हज़रत ज़ैद रज़ि अपने वालिद असलम रज़ि से रिवायत करते हैं कि मैंने उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि को फ़रमाते हुए सुना कि एक बार आप ने हमें किसी जंगी ज़रूरत के लिए ख़ुदा की राह में माल ख़र्च करने की तहरीक फ़रमाई। इन दिनों मेरे पास काफ़ी माल था। मैंने अपने दिल में कहा कि अगर मैं अबूबकर से ज़्यादा सवाब कमा सकता हूँ तो आज अवसर है मैं आधा माल हुज़ूर की ख़िदमत में लेकर पेश हुआ। हुज़ूर ने मुझ से पछा कि उम्र रज़ि कितना माल लाए हो। और कितना बाल बच्चों के लिए छोड़ आए हो। मैंने निवेदन किया कि हुज़ूर आधा माल लाया हूँ और आधा छोड़ आया हूँ। और हज़रत अबूबकर जो कुछ उन के पास था सब लेकर आ गए। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अबूबकर रज़ि से पूछा कि अबूबकर रज़ि कितना माल लाए हो और कितना घर वालों के लिए छोड़ आए हो। अबूबकर रज़ि ने निवेदन किया कि हुज़ूर जो कुछ मेरे पास था सब कुछ लेकर आया हूँ और बाल बच्चों के लिए अल्लाह और उस का रसूल छोड़ आया हूँ। अर्थात ख़ुदा तआला पर भरोसा है। हज़रत उमर सुनकर अपने आप से कहने लगे कि मैं अबू बकर से कभी नहीं जीत सकता।

(तिरमिज़ी अबवाबुल मनाकिब फ़ी मनाक़िब अबी बक्र अमर)

सय्यदना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने मानने वालों से जहां एक तरफ़ धार्मिक तथा क़ौमी ज़रूरतों के सम्मुख आरिज़ी तहरीकों के माध्यम से माली क़ुर्बानी की तहरीक फ़रमाई, वहां दूसरी तरफ़ गरीबों,यतीमों और अनाथों और क़ौमी भलाई के लिए स्थायी तौर पर ज़कात के रूप में माली जिहाद को क़ायम फ़रमाया और सहाबा किराम इस माली जिहाद में ज़ौक़ शौक़ के साथ हिस्सा लेते थे।

फिर आप ने जिहाद के अर्थों को और व्यापक करते हुए फ़रमाया कि

عن ابی سعید خدری رضی اللہ عنہ عن البنی صلی اللہ علیہ وسلم قال:افضل الجھاد کلمۃ عدل عند سلطان جائر

(तिरमिज़ी किताबुल फ़ितन) हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि वर्णन करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो ने फ़रमाया कि बेहतरीन जिहाद ज़ालिम बादशादा के सामने हक़ और इन्साफ़ की बात कहना है।

फिर एक और हदीस में रसूल करीम ने फ़रमाया कि

عن عائشۃ رضی اللہ عنہا انہا قالت یارسول اللہ نری الجھاد افضل العمل افلا نجاھد قال لکن افضل الجھاد حج مبرور

(सही बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस नम्बर 2794)

अर्थात हज़रत आयशा रज़ि ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि से पूछा कि हे रसूलुल्लाह हम समझते हैं कि जिहाद अफ़ज़ल कर्मों में से है। फिर हम औरतें क्यों ना जिहाद करें?आप ने फ़रमाया लेकिन अफ़ज़ल जिहाद हज मबरूर है

इन समस्त रिवायतों से स्पष्ट होता है कि रसूल करीम ने जिहाद को ज़िन्दगी के हर विभाग से सम्बन्धित किया है

द्वितीय जिहाद कबीर अर्थात कुरआन के साथ जिहाद

अब में जिहाद की दूसरी किस्म की तरफ़ आता हूँ जिसको जिहाद कबीर कहा जाता है अर्थात जिहाद बिल्कुरआन अर्थात क़ुरआन करीम के माध्यम से पूरी दुनिया में इस्लाम की तब्लीग़ करना। अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि

جَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا

(अलफ़ुर्कान :अलिफ 53)अर्थात तू क़ुरआन करीम की शिक्षाओं को दूसरों तक प्यार मुहब्बत और दलीलों और तर्कों से पहुंचा। अत: हदीसों और तारीख़ की रिवायतों से पता चलता है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुबह तथा शाम इसी जिहाद को करने में गुज़रती थी। अल्लाह तआला ने आप को क़ुरआन करीम की शरीयत प्रदान की थी जो दलीलों तथा प्रमाणों का एक ऐसा विशाल सागर है जिसकी चुम्बकीय कशिश से दुश्मन भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते थे। अत: यही वजह थी कि कुफ़्फ़ार ने पूरे मक्का में यह अफ़्वाह फैला दी थी कि नऊज़ुबिल्लाह मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम)जादूगर है और जो उस की बातें सुनता है इस पर जादू असर कर जाता है। अत: हज़रत उम्र इब्न ख़ित्ताब जो उस वक़्त इस्लाम के शत्रुओं में से थे सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इसी जिहाद बिल- कुरआन के नतीजा में इस्लाम की आग़ोश में आ गए और कुछ साल के अन्दर अन्दर मुमिनों की यह छोटी सी जमाअत देखते ही देखते एक बड़ी संख्या में तबदील हो गई।

तृतीय -जिहाद असग़र अर्थात तलवार का जिहाद

अब मैं अपने विषय के आख़िरी और सब अहम हिस्सा की तरफ़ आता हूँ। जिहाद की तीसरी क़िस्म जिहाद असग़र है अर्थात तलवार का जिहाद। इस से इस्लाम के शत्रु दुनिया के सामने यह छवि प्रस्तुत करते हैं कि नऊज़ुबिल्लाह इस्लाम तलवार के माध्यम से फैला है और यही वह जिहाद है जिसकी ग़लत व्याख्याएं करके आज के ज़माना में तथाकथित मुसलमान उल्मा मासूम इन्सानों का नाहक़ ख़ून बहा रहै हैं। हक़ीक़त में यही वे लोग हैं जिनकी वजह से इस्लाम जैसे ख़ूबसूरत और अमन वाले मज़हब को दहशतगर्दी के साथ जोड़ा गया है।

आईए आज हम तलवार के जिहाद को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जीवन के आलोक में देखते हैं कि आपने तलवार के जिहाद की क्या व्याख्या फ़रमाई है और किन अवस्थाओं में यह अनिवार्य होता है और जब कभी ऐसे हालात आएं तो आप ने उसके क्या नियम वर्णन फ़रमाए और उम्मत मुस्लिमा के लिए क्या नमूना पेश किया है

अत: स्पष्ट हो कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना तो इस मामला में अनुपमीय है। आपने अपनी सारी ज़िन्दगी ज़ुल्म का मुक़ाबला ज़ुल्म से करने का आदेश नहीं दिया जबकि आप पर और आपके सहाबा किराम पर कुफ़्फ़ार मक्का की तरफ़ से आए दिन नए से नए ज़ुलम तथा अत्याचार किए जाते थे लेकिन आपने हमेशा क्षमा का आदेश दिया। अत: तारीख़ में आता है कि मक्का में मज़लूमियत के दिनों में आपके एक सहाबी हज़रत अब्दुर रहमान बिन औफ़ रज़ि और कुछ

दूसरे सहाबा ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल जब हम मुसलमान ना थे तो सम्मान्नीय थे और कोई हमारी तरफ़ आँख उठा कर भी नहीं देख सकता था अब यह कुफ़्फ़ार हमें बुज़दिल और कमज़ोर समझने लगे हैं। हमें इजाज़त दें कि हम उनका मुक़ाबला करें और उन्हें सबक़ सिखाएँ। लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जवाब में फ़रमाया

انی امرت بالعفو فلا تقاتلوا

(सुनन निसाई तल्ख़ीस अल-सहीह, भाग 1, पृष्ठ 152)

अर्थात मुझे अल्लाह तआला की तरफ़ से माफ़ करने का आदेश है। अत: मैं तुमको लड़ने की इजाज़त नहीं दे सकता

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने निरन्तर तेरह साल तक ज़ालिमों के ज़ुल्म का मुक़ाबला सब्र तथा दुआ से किया और उनके ज़ुल्मों की वजह से आप को मक्का से मदीना हिजरत करनी पड़ी मगर मक्का के इस्लाम दुश्मनों ने वहां भी आपका पीछा ना छोड़ा और आपको तबाह तथा बर्बाद करने की हर सम्भव कोशिश की। अत: पंद्रह साल निरन्तर ज़ुलम सहने के बाद अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इजाज़त दी कि अब तुम उनका मुक़ाबला कर सकते हो क्योंकि अब ज़ुल्मों की हद हो गई है।

अत: अल्लाह तआला क़ुरआन करीम में फ़रमाता है कि

أُذِنَ لِلَّذِينَ يُقَاتَلُونَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوا ۚ وَإِنَّ اللَّهَ عَلَىٰ نَصْرِهِمْ لَقَدِيرٌ ۝ الَّذِينَ أُخْرِجُوا مِن دِيَارِهِم بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّا أَن يَقُولُوا رَبُّنَا اللَّهُ ۗ وَلَوْلَا دَفْعُ اللَّهِ النَّاسَ بَعْضَهُم بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَصَلَوَاتٌ وَمَسَاجِدُ يُذْكَرُ فِيهَا اسْمُ اللَّهِ كَثِيرًا ۗ وَلَيَنصُرَنَّ اللَّهُ مَن يَنصُرُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَقَوِيٌّ عَزِيزٌ

(सूरत हज्ज:40-41)

अनुवाद:उन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ क़िताल किया जा रहा है ,क़िताल की इजाज़त दी जाती है क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए। वे लोग जिन्हें नाहक़ उनके घरों से निकाल दिया गया है सिर्फ यह कहने पर कि हमारा रब अल्लाह है, और अगर अल्लाह लोगों को एक दूसरे से ना हटाता तो कलीसे और मदरसे और इबादत ख़ाने और मस्जिदें ढा दी जातीं जिनमें अल्लाह का नाम प्रचुरता से लिया जाता है, और अल्लाह ज़रूर उस की मदद करेगा जो अल्लाह की मदद करेगा, बे-शक अल्लाह ज़बरदस्त ग़ालिब है

कुरआन की इस आयत से बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि तलवार के जिहाद की इजाज़त किन हालतों में दी गई है। जब किसी क़ौम पर ज़ुलम की इंतिहा हो जाए और उन से नाहक़ क़िताल करते हुए जंग उन पर मुसल्लत की जाए और उन को ख़ुदा का नाम लेने की वजह से उन के घरों से निकाला जाए तब जाकर अल्लाह तआला ने अपनी प्रतिरक्षा करने के लिए तलवार उठाने की इजाज़त दी है और हमारे आक़ा तथा मौला हज़रत मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी उन्ही शर्तों के अधीन प्रतिरक्षात्मक जंगें की हैं और इस में भी आप ने ऐसा नमूना क़ायम फ़रमाया कि जिसका लेश मात्र भी अरब की अन्य जंगों में नहीं मिलता। अरब के जंग लड़ने वाले लोग जो थोड़ी थोड़ी सी बात पर सदियों तक लड़ते रहते थे और जंग के दौरान मक़्तूलीन का मुसला (नाक कान काटना) करना और औरतों, बच्चों और बूढ़ों को क़तल करने में भी पीछे नहीं हटने थे। लेकिन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना बेनज़ीर था। हदीस में आता है कि

اغدوبسم الله وقاتلوا فی سبیل الله و لا تغلّوا ولا تغدرواولا تمثلوا ولا تقتلواولیداًولا امراۃ ولا تقتلوا اصحاب الصوامع ولا تقتلوا شیحا فانیا ولا طفلًاولا صغیرًا ولا امراۃوصلحواواحسنوا ان اللہ یحب المحسنین

(सही मुस्लिम, अबू दाऊद 3) अनुवाद: हे मुसलमानों अल्लाह का नाम लेकर निकलो और धर्म की सुरक्षा की नीयत से जिहाद करो लेकिन ख़बरदार माल ग़नीमत में बद दियानती मत करना। किसी क़ौम से धोखा मत देना और ना दुश्मनों के मक़्तूलीन का मुसला करना और ना बच्चों और औरतों और मज़हबी इबादत-गाहों के लोगों को क़तल करना और ना बहुत ही बूढ़ों को क़तल करना और मुल्क में सुधार करना और लोगों के साथ एहसान का मामला करना क्योंकि ख़ुदा तआला एहसान करने वालों को पसन्द करता है

आज के जो तथाकथित मुल्ला जिहाद जिहाद का नारा लगा कर के मासूम इन्सानों को क़तल करते और करवाते हैं, यह इंतिहाई नफ़रत और घृणा योग्य है और इस का इस्लाम और बानी इस्लाम और क़ुरआन से दूर का भी कोई सम्बन्ध नहीं। हमारे प्यारे आक़ा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आज से लगभग 1400 साल पहले फ़रमाया था कि मुसलमानों पर एक ज़माना ऐसा आएगा कि इन में व्यवहारात्मक और आस्था के तौर पर बिगाड़ पैदा हो जाएगी बहुत अधिक मतभेद होंगे। ऐसे फ़ितने वाले ज़माना में अल्लाह तआला मुसलमानों के सुधार के लिए इमाम आख़िरुज़ज़मान हज़रत इमाम महदी अलैहिस्सलाम को मबऊस फ़रमाएगा जो मुसलमानों का व्यवहारात्मक सुधार के साथ साथ एतिक़ादी सुधार भी फ़रमाएगा और इस के आने से जंग मौक़ूफ़ हो जाएगी। अत: फ़रमाया: (वह जंग को मौक़ूफ़ कर देगा)

(सही बुख़ारी किताबुल अनबिया बाब नुज़ूल ईसा इब्न मरियम)

दरअसल इस पेशगोई में यह इशारा था कि इमाम महदी के दौर में जिहाद की शर्तें पूरी नहीं होंगी तथा वह युग दलील तथा तर्कों और क़लमी जिहाद का ज़माना होगा। अत: इसीलिए अल्लाह तआला ने इस ज़माना में इस किस्म के ग़लत अक़ीदों की इस्लाह के लिए हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी अलैहिस्सलाम को इमाम महदी बनाकर भेजा और उन्होंने ऐलान फ़रमाया कि

अब छोड़ दो जिहाद का ए दोस्तो ख़्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
क्यों भूलते हो तुम यज़उल हर्ब की ख़बर
क्या यह नहीं बुख़ारी में देखो तो खोल कर
फ़र्मा चुका है सय्यद कौनैन मुस्तफ़ा
ईसा मसीह जंगों का कर देगा इल्तिवा
यह हुक्म सुनकर भी जो लड़ाई को जाएगा
वह काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा
इक मोजिज़ा के तौर से यह पेशगोई है
काफ़ी है सोचने को अगर अहल कोई है

(तोहफ़ा गोलड़िवया,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 17 पृष्ठ 77)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी तरह फ़रमाते हैं कि "आज से इन्सानी जिहाद जो तलवार से किया जाता था ख़ुदा के आदेश के साथ बंद किया गया। अब इस के बाद जो आदमी काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम ग़ाज़ी रखता है वह उस रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी करता है जिसने आज से तेराह सौ बरस पहले फ़र्मा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर समस्त तलवार के जिहाद ख़त्म हो जाएंगे अत: अब मेरे ज़हूर के बाद तलवार का कोई जिहाद नहीं हमारी तरफ़ से शान्ति और मैत्री का सफ़ैद झंडा बुलंद किया गया है।"

(ख़ुत्बा इलहामिया ,ख़ज़ाइन, भाग16 पृष्ठ 28)

अल्लाह तआला हम सब को जिहाद के हक़ीक़ी मफ़हूम को समझते हुए इस पर अनुकरण करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आमीन

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

जिहाद के ग़लत नज़रिया के बुरे नतीजे और इस का हल

(मुहम्मद शरीफ़ कौसर , उस्ताज़ जामिआ अहमदिया कादियान)

सय्यदना हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक मज़हब की बुनियाद रखी, जिसका नाम अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में "इस्लाम"और इस में शामिल होने वालों का नाम मुसलमान रखा। जैसा कि फ़रमाया اِنَّ الدِّیۡنَ عِنۡدَ اللّٰہِ الۡاِسۡلَامُ (आले इम्रान 19) नि:सन्देह धर्म अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है। هُوَ سَمّٰكُمُ الۡمُسۡلِمِيۡنَ (अल-हज 79) नि:सन्देह अल्लाह ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा है

इस्लाम से अभिप्राय

इस्लाम अरबी ज़बान का शब्द है जो "सलेम" से बना है "सलेम" का अर्थ है अमन तथा सलामती। इस्लाम के संस्थापक सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "अस्सलामो मिनल इस्लाम" अमन और सलामती इस्लाम से ही है। अल्लाह तआला समस्त लोगों को फ़रमाता है وَاللّٰهُ يَدۡعُوۡۤا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ (यूनुस 26)और अल्लाह सलामती के घर की तरफ़ बुलाता है। इस्लाम के एक अन्य अर्थ यह हैं कि अल्लाह तआला की तरफ़ से नाज़िल किए गए आदेशों की पूर्ण तौर पर आज्ञापालन की जाए।

इस्लाम एक ऐसा मज़हब है जो अपने मानने वाले हर मुसलमान को दुनिया के हर इन्सान से मुहब्बत और प्यार और भलाई की शिक्षा देता है। चाहे उस का सम्बन्ध किसी मज़हब तथा अक़ीदा और जगह से हो। एक मुसलमान दिन में पाँच वक़्त नमाज़ अदा करता है और हर नमाज़ के अन्त में पर दाएं तरफ़ रख कर के अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह कहता है फिर बाएं तरफ़ रख कर के यही शब्द दोहराता है इस का अर्थ ही यह है कि हे मेरे दाएं तरफ़ वालो (चाहे कोई भी हो तुम पर अल्लाह की सलामती और रहमत हो। फिर इसी तरह की दुआ बाएं तरफ़ वालों के लिए भी मांगता है। जिस किसी से वह मिलता है उसे "अस्सलामु अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहो" कहता है। अर्थात तुझ पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत तथा बरकत हो। अत: इस्लाम और मुसलमान का नाम ही इस हक़ीक़त की तरफ इशारा करता है कि यह धर्म अपने अनुयायियों को यह शिक्षा दे रहा है कि वह दुनिया के इन्सानों के लिए जहां तक उन के बस में है अमन तथा सलामती और शान्ति प्रदान करें।

इस्लाम के संस्थापक समस्त संसारों के लिए रहमत

अल्लाह तआला ने इस्लाम के संस्थापक सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को समस्त जहानों के लिए रहमत बना कर भेजा है जैसा कि क़ुरआन मजीद में ज़िक्र है

وَمَاۤ اَرۡسَلۡنٰكَ اِلَّا رَحۡمَةً لِّلۡعٰلَمِيۡنَ (108)

अर्थात हे मुहम्मद(सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) हम ने तुझे समस्त जहानों के लिए रहमत के तौर पर भेजा है। इस में सिर्फ मुसलमानों,या अरबों का ज़िक्र नहीं बल्कि आपका वजूद समस्त संसारों के लिए रहमत है। इसीलिए हर वह मुसलमान जो सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ मंसूब होता है उसे भी अपने रसूल के आदर्श पर चलते हुए ख़ुदा की सृष्टि के लिए ज़हमत बनने से अपने आपको हर पहलू से बचाना होगा।

हर इन्सान से मुहब्बत क्यों

यहां एक सवाल पैदा होता है कि हर इन्सान से मुहब्बत तथा हमदर्दी क्यों की जाए? इसका जवाब सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस से मिलता है। जिस में आप फ़रमाते हैं

اَلۡخَلۡقُ عِيَالُ اللّٰهِ فَاَحَبُّ الۡخَلۡقِ اِلَى اللّٰهِ مَنۡ اَحۡسَنَ اِلٰى عِيَالِهٖ

(मिश्कात किताबुल आदाब अर्थात सारी मख़लूक़ अल्लाह का अयाल (ख़ानदान) है। अत: मख़लूक़ में से उसे सबसे प्यारा वह है जो उसके अयाल से सबसे ज़्यादा अच्छा सुलूक करे।

क़ुरआन मजीद की आयतों और हदीस से वाज़िह होता है कि दुनिया के समस्त धर्म तथा आस्थाऐं विचार धाराएं तथा इलाकों और क्षेत्रों के लोग अल्लाह का अयाल तथा ख़ानदान हैं। जैसे इन्सान अपने ख़ानदान के लोगों से मुहब्बत करता है इसी तरह उसे दुनिया के समस्त लोगों को अपना ख़ानदान समझ कर उनसे मुहब्बत हुस्ने सुलूक करना है। ऐसा करने से ही हम अल्लाह के महबूब और प्यारे बन सकते हैं उस के बिना संभव ही नहीं क्योंकि जिस अल्लाह पर हर मुसलमान ईमान रखता है व "रब्बुल आलमीन" और "आस्सलामो" अर्थात सलामती देने वाला है। अत: इन गुणों वाले ख़ुदा की तरफ़ मंसूब होने का तक़ाज़ा और ज़िम्मेदारी है कि वह अपने क्षेत्र और माहौल में अपने सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार रबूबियत और गुण "अस्सलाम" का हक़ीक़ी प्रतिद्युत्तक बने वर्ना वह ख़ुदा की तरफ़ मंसूब होने का हक़ खो बैठेगा।

रहमतुल-लिल-आलमीन ने जंगें क्यों लड़ीं

इसका जवाब यह है कि सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्र जब 40 साल की हुई तो अल्लाह की तरफ़ से आप पर वह्य का आरम्भ शुरू हुआ जिसकी रोशनी आप ने मक्का वालों को यह कहा कि मुझे अल्लाह ने रसूल और पैग़ंबर बना कर भेजा है अत: तुम एक अल्लाह की इबादत करो और गुनाहों और बुराईयों और ज़ुल्मों से भरी ज़िन्दगी से तौबा करो। अरबी भाषा का एक उदाहरण है लल् मतरे मुहिब्बो वकारहू कि बारिश को पसन्द करने वाले भी होते हैं और नापसन्द करने वाले भी होते हैं। ज़ाहरी बारिश की तरह रुहानी बारिश को भी कुछ लोगों ने पसन्द करना शुरू किया और कुछ ने ना-पसन्द करना शुरू किया। पसन्द करने वाले और मानने वालों ने नर्मी और हुस्न अख़लाक़ और मुहब्बत का रास्ता धारण किया और नापसन्द करने वाले मुख़ालिफ़ीन ने घृणा तथा नफरत और कष्ट पहुंचाने का तरीक़ा धारण किया और दिन प्रतिदिन यह दूरी बढ़ती चली गई। मक्का के विरोधी यह समझते थे कि हम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस के मानने वालों को ताक़त तथा ज़ोर के प्रयोग से संसार से मिटा देंगे। दूसरी तरफ़ मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कहना यह था कि हम मुहब्बत और दलीलों की ज़बान से तुमको इस्लाम की सच्चाई समझाते चले जाऐंगे हम तुम्हें मजबूर भी नहीं करते कि इस्लाम क़बूल करो क्योंकि क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला का फ़रमान है

لَاۤ اِكۡرَاهَ فِى الدِّيۡنِ (अल-बक़र:257)

कि धर्म के मामला में कोई जबरदस्ती नहीं। इसी तरह यह भी इरशाद है कि

وَقُلِ الۡحَقُّ مِنۡ رَّبِّكُمۡ ۟ فَمَنۡ شَآءَ فَلۡيُؤۡمِنۡ وَّمَنۡ شَآءَ فَلۡيَكۡفُرۡ

(अलकहफ़ 30) अर्थात तू कह दे कि हक़ वही है जो तुम्हारे रब की तरफ़ से हो अत: जो चाहे ईमान ले आए और जो चाहे इनकार कर दे

एक दिन नहीं एक महीना नहीं एक साल भी नहीं बल्कि निरन्तर तेरह साल सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के अस्हाब मुख़ालिफ़ीन के हाथों, कष्ट, दुख और तकलीफ़ें सहते रहे।

कुछ उनमें से शहीद भी हुए आप ने जवाब में हिंसा का रास्ता इख़्तियार नहीं किया। किसी पत्थर मारने वाले को पत्थर नहीं मारा। किसी गाली देने वाले को गाली नहीं दी। और ऐसी बात भी ना थी कि यह नरमी किसी बुज़दिली की वजह से थी बल्कि इन्सानियत और इन्सानों की मुहब्बत की वजह से थी। और इस ख़्याल से थी कि उनकी तरफ़ से कष्ट उनकी नासमझी की वजह से हैं। वरना हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी अल्लाह अन्हो जो मक्का के रईसों में से थे,उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह जब हम मुसलमान नहीं थे तो हम सम्मान्नीय और रौब वाले थे। किसी की हिम्मत ना थी कि हमारी तरफ़ आँख उठा कर देखे जब से मुसलमान हुए हैं मक्का के मुख़ालिफ़ीन इस्लाम हमें कमज़ोर तथा हीन समझने लगे हैं।आप हमें मुक़ाबला की इजाज़त दें। इन्सानों से बेहद प्यार करने वाले रहमतुलिल आलमीन ने जवाब दिया اِنِّی اُمِرْتُ بِالْعَفْوِ(निसाई) कि मुझे क्षमा और माफ करने का आदेश दिया गया है इसलिए मैं तुम्हें मुक़ाबला की इजाज़त नहीं दे सकता

सार यह है कि 13 साल मक्का के मुख़ालिफ़ीन इस्लाम के हाथों निरन्तर ज़ुल्म सहने के बाद आप ने सोचा कि यह ना तो इस्लाम समझ रहे हैं और ना इस्लाम क़बूल करने वालों को आज़ादी से जीने दे रहे हैं तो अब दो ही रास्ते हैं या तो उनके साथ लड़ाई की जाए या फिर अपने वतन को ख़ैर कह कर कहीं और हिजरत कर ली जाए। आप अपनी रहमत की भावना के अधीन किसी इन्सान का भी ख़ून बहाना नहीं चाहते थे दिनांक 28 सफ़र 1 हिजरी अर्थात 11 सितम्बर 622 ई को मक्का से तीन सौ किलो मीटर दूर यसरब (मदीना मुनव्वरा) की तरफ़ हिजरत कर गए।

चाहिए तो यह था कि मुख़ालिफ़ीन हुज़ूर और मुसलमानों के हिज्रत करने के बाद उनका पीछा छोड़ देते लेकिन अफ़सोस और बहुत अफ़्सोस कि ऐसा ना हुआ बल्कि उन्होंने मदीना पर हमला कर के मुसलमानों को तबाह तथा बर्बाद करने की तैयारियां शुरू कर दीं और मुल्क सीरिया की तरफ़ तिजारती क़ाफ़िला भेजा ताकि उसकी आय से जंगी हथियार तथा सामान ख़रीदा जा सके। अत: मक्का वालों ने एक हज़ार जंग लड़ने वालों पर आधारित लश्कर जो हर तरह के जंगी हथियार सामान से लैस था मदीना पर हमला के लिए रवाना किया। मक्का के कुफ़्फ़ार का इरादा था कि मदीना पर अचानक हमला कर के मुसलमानों को तबाह तथा बर्बाद कर दिया जाए और एक भी ऐसा आदमी ना बचे जो इस्लाम की तरफ़ मंसूब होता हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इसी घटना का ज़िक्र करते हुए लिखते हैं कि

(मक्का में) ''उन्होंने दर्दनाक तरीक़ों से अक्सर मुसलमानों को हलाक किया और एक ज़माना तक जो तेरह वर्ष की मुद्दत थी उनकी तरफ़ से यही कार्रवाई रही और निहायत बेरहमी की तर्ज़ से ख़ुदा के वफ़ादार बंदे और मानव जाति के गर्व इन शरारत पहुंचाने वाले दरिंदों की तलवारों से टुकड़े टुकड़े किए गए और यतीम बच्चे और असहाय और मिस्कीन औरतें रास्तों और गलियों में ज़िबह किए गए। इस पर भी ख़ुदा तआला की तरफ़ से क़तई तौर पर यह ताकीद थी कि बुराई का हरगिज़ मुक़ाबला ना करो। अत: इन सम्मान्नीय रास्तबाज़ों ने ऐसा ही किया उनके ख़ूनों से गलियां लाए हो गईं पर उन्होंने दम ना मारा।वे क़ुर्बानियों की तरह ज़िबह किए गए पर उन्होंने आह ना की। ख़ुदा के पाक और मुक़द्दस रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जिस पर ज़मीन और आसमान से बेशुमार सलाम हैं, कई बार पत्थर मार मार कर ख़ून से भर दिया गया मगर इस सिदक़ और दृढ़ता के पहाड़ ने इन समस्त कष्टों को खुले दिल और मुहब्बत से बर्दाश्त किया और उन साबर और विनम्रत आदतों से मुख़ालिफ़ों की शोख़ी दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और उन्होंने इस मुक़द्दस जमाअत को अपना एक शिकार समझ लिया तब इस ख़ुदा ने जो नहीं चाहता कि ज़मीन पर ज़ुल्म और बेरहमी हद से गुज़र जाए अपने मज़लूम बंदों को याद किया और उसका ग़ज़ब बुरों पर भड़का और उसने अपने पवित्र कलाम क़ुरआन शरीफ़ के माध्यम से अपने मज़लूम बंदों को सूचना दी कि जो कुछ तुम्हारे साथ हो रहा है मैं सब कुछ देख रहा हूँ। मैं तुम्हें आज से मुक़ाबला की इजाज़त देता हूँ और मैं ख़ुदाए क़ादिर हों,ज़ालिमों को सज़ा दिए नहीं छोड़ूँगा।यह आदेश था जिसका दूसरे शब्दों में जिहाद नाम रखा गया। और इस आदेश की असल इबारत जो क़ुरआन शरीफ़ में अब तक मौजूद है यह है।

اُذِنَ لِلَّذِیْنَ یُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰی نَصْرِهِمْ لَقَدِیْرُ ۙ○ الَّذِیْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِیَارِهِمْ بِغَیْرِ حَقٍّ

(सूरत अल-हज:40-41)

(गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 5)

(अनुवाद उन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ क़िताल किया जा रहा है (क़िताल अर्थात तलवार के जिहाद की इजाज़त दी जाती है। क्योंकि उन पर ज़ुलम किए गए। और नि:सन्देह अल्लाह उन की मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है।अर्थात वे लोग जिन्हें उनके घरों से अकारण निकाला गया केवल इस आधार पर कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब है।

पाठको जिहाद का शब्द व्यापक अर्थों पर आधारित है। जिहाद सिर्फ कुफ़्फ़ार से लड़ाई को ही नहीं कहा जाता बल्कि किसी काम में अपनी इंतिहाई ताक़त इस्तिदाद लगाई,और फिर उसके बारे में पूरी कोशिश करने को जिहाद कहा जाता है। अरबी में इसका धातु जहद और जहद है जाहिद फ़िल अमर अर्थात उसने काम करने की कोशिश तथा मेहनत की।

जिहाद धर्म इस्लाम का एक मुक़द्दस और अहम कर्तव्य है जो आरम्भ से शुरू हुआ और क़ियामत तक जारी रहेगा। क़ुरआन मजीद और हदीसों से जिहाद की बहुत सी किस्में साबित हैं। जैसे जिहाद कबीर,जिहाद अकबर,जिहाद असग़र,जिहाद बिलइलम इत्यादि।

जिहाद असग़र का दूसरा नाम तलवार के जिहाद अर्थात क़िताल भी है।यह तब जायज़ होता है जब कोई ग़ैर मुस्लिम ताक़त या देश इस्लाम धर्म को या मुसलमानों को इस्लाम शिक्षाओं पर अनुकरण करने पर संसार से मिटाने के लिए जंगी कार्रवाई करता है। उन्हें केवल ''रब्बुनल्लाह' कहने की वजह से घरों से बेघर करता है

तलवार के जिहाद के बारे में मुसलमानों का अपना बनाया अक़ीदा

बहुत अफ़सोस है कि मुसलमानों ने जिहाद का बहुत ग़लत मफ़हूम समझ रखा है।मुसलमान इस्लाम के नाम पर ख़ूँन फैलाने वाले फ़साद,ग़द्दारी,डाका करने और लूट मार करने का नाम जिहाद रखते हैं। वे लालच और स्वार्थ और व्यक्तिगत लाभों के लिए इस्लाम के दुश्मनों

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं:

"इस्लाम बड़ी नेअमत है इस का सम्मान करो और शुक्र करो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 181)

जमाअत के सभी दोस्तों को जलसा सालाना क़ादियान 2019 ई मुबारक हो।

दुआ का अभिलाषी

नासिर अहमद शाह

एच,बी शाह लाल मार्केट रोड,

गेंगटोक,सिक्किम

के गले काटने का नाम जिहाद रखते हैं ओर वह ग़ाज़ी कहलाने के शौक़ में बंदूक़ और पिस्तौल से ग़ैर मुस्लिमों पर फ़ायर करने का नाम जिहाद रखते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"याद रहे कि मस्ला जिहाद को जिस तरह पर इस ज़माना के इस्लामी उल्मा ने जो मौलवी कहलाते हैं समझ रखा है और जिस तरह वे अवाम के आगे इस मस्ला की सूरत वर्णन करते हैं हरिगज़ वह ग़ज़वा सही नहीं है और उसका नतीजा इसके कुछ नहीं कि वे लोग अपने जोश वाले उपदेशों से वहशी सिफ़ात वाली अवाम को एक दरिन्दा सिफ़त बनाए और इन्सानियत की समस्त पवित्र ख़ूबियों से बेनसीब कर दें। अत: ऐसा ही हुआ। और मैं नि:सन्देह जानता हूँ कि जिस क़दर ऐसे नाहक़ के ख़ून इन नादान और नफ़सानी इन्सानों से होते हैं कि जो इस राज़ से बेख़बर हैं कि क्यों और किस वजह से इस्लाम को अपने इब्तिदाई ज़माना में लड़ाईयों की ज़रूरत पड़ी थी इन सब का गुनाह इन मौलवियों की गर्दन पर है कि जो पोशीदा तौर पर ऐसे मसले सिखाते रहते हैं। जिनका नतीजा दर्दनाक खून फैलाना है।"

(रिसाला गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद ,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 7)

"वास्तव में यह जिहाद का मसला जैसा कि उनके दिलों में है सही नहीं है। और इस का पहला क़दम इन्सानी हमदर्दी का ख़ून करना है।"

(रिसाला गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 8)

"मौलवियों ने असल हक़ीक़त जिहाद की छुपा कर लूट मार और क़तल इन्सान के मंसूबे अवाम को सिखाए और इस का नाम जिहाद रखा है।"

(रिसाला गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 9)

" ये तरीक़ जिहाद जिस पर इस ज़माना के अक्सर वहशी कारबन्द हो रहे हींह इस्लामी जिहाद नहींहै बल्कि ये नफ़स अम्मारा के जोशों से या बहिश्त की तम-ए-ख़ाम से नाजायज़ हरकात हैं जो मुसलमानों में फैल गए हैं।"

(रिसाला गर्वनमैंट अंग्रेज़ी और जिहाद, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 9)

जिहाद के ख़ुद बनाए गए अक़ीदा के बुरे परिणाम

(1)ईसाईयों ने अपने मज़हब को " मुहब्बत के धर्म' के तौर पर परिचित करवाया और दुनिया वाले ईसाई मज़हब को मुहब्बत नर्मी और विनय का मज़हब यक़ीन करने लगे। इसी तरह सनातन धर्म हिंदू मज़हब वालों ने अपने धर्म को अहिंसा वादी के तौर पर परिचित करवाया। और यह ऐलान किया कि हिंदू मज़हब हिंसा न करने पर यक़ीन रखता है। इस धर्म में इन्सानों का क़तल तो जीव हत्या भी मना है। इसी तरह दुनिया के दूसरे धर्मों के राहनमाओं ने भी अपने अपने मज़हब को सबसे उच्च साबित किया और बताया कि उनकी शिक्षाओं में नर्मी और मुहब्बत का पहलू ग़ालिब है। यह अलग बात है कि इन की मूल किताबें क्या शिक्षा पेश करती हैं मगर इन धर्मों के मानने वालों ने दुनिया से यही स्वीकार करवाया कि उनका मज़हब मुहब्बत और नर्मी की ही शिक्षा देता है

इसके विपरीत अन्जाम को न जानने वाले मुसलमानों के तथाकथित मौलवियों और तथाकथित उल्मा ने इस्लाम को जिस रंग में दुनिया के सामने पेश किया इस से यह यक़ीन हो गया कि मौलवियों का पेश किया इस्लाम दहशतगर्दी और ख़ूँन फैलाने के इलावा और कोई शिक्षा नहीं देता। मौलवियों के प्रभाव में मुसलमानों ने इसी इस्लाम को सय्यदना मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ मंसूब किया जबकि हुज़ूर का प्रस्तुत किए इस्लाम से इस का दूर का भी सम्बन्ध नहीं।

(2)अफ़सोस यह है कि वर्तमान ज़माना में मुसलमानों के हर देश में दो पक्ष बने हुए हैं।एक हुकूमत का पक्ष और दूसरा हुकूमत के विरोधियों का पक्ष और दोनों ही विश्व व्यापि इस्लाम के दुश्मनों का माध्यम बने हुए हैं। और दोनों को ख़तरनाक किस्म के हथियार बाहरी ताक़तें ही प्रदान कर रही हैं। हालाँकि इस्लाम से इस का कोई भी सम्बन्ध नहीं बल्कि बाहरी ताक़तों की यह एक साज़िश है जिसके माध्यम से इस्लाम की अमन वाली शिक्षा को दाग़दार किया जाता है और इस्लाम को एक दहश्त और ख़ौफ़ का मज़हब मशहूर किया जाता है।

उदाहरण के तौर पर कुछ समय पहले अफ़ग़ानिस्तान में रूस की फ़ौज दाख़िल हो गई और अफग़ानिस्तान पर क़ब्ज़ा कर लिया।रूस की विरोधी ताक़त अमरीका को यह बात सहन न हुई और उन्होंने पेशावर और उसके आसपास मुसलमान जिहादियों को ट्रेनिंग दी और उनको जिहाद करने के लिए अफ़ग़ानिस्तान भेज दिया और उनकी ज़बरदस्त सहायता की। आख़िर कुछ सालों की कोशिश के बाद रशिया अफ़ग़ानिस्तान से निकलने पर मजबूर हो गया और इस के बाद अमरीका वहां क़ाबिज़ हो गया और अफ़ग़ानिस्तान में अब तक मुसलमानों के ख़ून के साथ होली खेली जा रही है। और यह सब जिहाद के नाम पर इस्लाम को बदनाम करने के लिए किया जा रहा है

सिर्फ अफ़ग़ानिस्तान ही क्यों इराक़, शाम मिस्र,फ़लस्तीन,लीबिया,अल-जज़ाइर,ट्यूनिस, यमन इत्यादि में भी यही तथाकथित जिहादी अपने तथाकथित जिहाद के माध्यम से इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। और दूसरी तरफ़ अपने देशों को तबाह-ओ-बर्बाद कर रहे हैं। इराक़ में एक तथाकथित ख़लीफ़ा उल-मारूफ़ बग़दादी को एक विश्वव्यापी ताक़त ने खड़ा क्या उस के माध्यम से इस्लाम के नाम पर क़तल तथा लूट करवाई और ख़िलाफ़त जैसे मुक़द्दस नाम को बदनाम किया। और फिर जब यह तथाकथित साज़िश कामयाब ना हुई तो कहा जाता है कि उसे संसार से मिटा दिया।यह सब इस वजह से हुआ कि मुसलमानों के मौलवियों ने जिहाद के ग़लत अर्थ किए और अवामुन्नास को इतना भड़काया किया कि वह जिहाद का सही मफ़हूम समझ ही ना सके और उन्होंने सिर्फ ख़ूँन फैलाने को ही जिहाद समझा

जिहाद के ख़ुद बनाए अक़ीदा और इसके बुरे प्रभावों से बचने का तरीक़ा

अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम को वर्तमान युग में मामूर और न्याय करने वाला बना कर भेजा। आप ने उनके अक़ीदों का सुधार फ़रमाया जिन्हें मुसलमानों ने बिगाड़ दिया था,उन्हें में से एक जिहाद था। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिहाद की सही तारीफ़ लोगों को समझाई और फ़रमाया।वर्तमान युग में कोई मुल्क या ताक़त मुसलमानों को इस्लामी शिक्षाओं पर अनुकरण करने से कोई तलवार नहीं रोकती और ना ही उन्हें इस्लाम पर अनुकरण करने की वजह से उनके घरों से बेदख़ल करता है और ना ही उन पर इस तरह अत्याचार करता है जैसे मक्का के कुफ़्फ़ार ने मुसलमानों पर किए थे अत: जिहाद असग़र या तलवार का जिहाद जायज़ नहीं है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:"आज से इन्सानी जिहाद जो तलवार से किया जाता था ख़ुदा के आदेश के साथ बंद किया गया। अब उस के बाद जो आदमी काफ़िर पर तलवार उठाता है और अपना नाम ग़ाज़ी रखता है वह इस रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नाफ़रमानी करता है जिसने आज से तेराह सौ वर्ष पहले फ़र्मा दिया है कि मसीह मौऊद के आने पर समस्त तलवार के जिहाद ख़त्म हो जाऐंगे।अत: अब मेरे ज़हूर के बाद तलवार का कोई जिहाद नहीं। हमारी तरफ़ से अमान और सुलह फैलाने का सफ़ेद झंडा बुलंद किया गया है। ख़ुदा तआला की तरफ़ दावत करने की एक राह नहीं। अत: जिस राह पर नादान लोग एतराज़ कर चुके हैं। ख़ुदा तआला की हिक्मत और मस्लिहत नहीं चाहती कि इसी राह को फिर धारण किया जाए उस की ऐसा ही उदाहरण है कि जैसे जिन निशानों

की पहले तक़ज़ीब हो चुकी वे हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नहीं दिए गए। अत: मसीह मौऊद अपनी फ़ौज को इस मना किए गए मुक़ाम से पीछे हट जाने का आदेश देता है।

(ख़ुत्बा इल्हामिया, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 16 पृष्ठ 28)

तोहफ़ा गोलड़विया में फ़रमाते हैं:'

وجوہ الجہاد معدومۃ فی ھذا لزمن و ھذہ البلاد ۔فالیوم حرامٌ علی المسلمین ان یحاربو اللدین ۔و ان یقتلوا من کفر بالشرع المتین ۔فان اللہ صرّح حرمۃ الجہاد عند زمان الامن والعافیۃ

(ज़मीमा तोहफ़ा गोलड़विया,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 82)

अर्थात चूँकि मौजूदा ज़माना और इस देश में जिहाद की वजूह समाप्त हैं इस लिए मुसलमानों पर हराम है कि वे धर्म के लिए जंग करें और इस आदमी को क़तल करें जो शरीयत का इनकार करे क्योंकि ख़ुदा तआला ने स्पष्ट बता रखा है कि अमन तथा भलाई के ज़माना में जिहाद हराम होता है

हक़ीक़तुल महदी में फ़रमाते हैं कि

فرفعت ھذہ السنۃ برفع اسبابہا فی ھذہ الایام ۔و اُمرنا ان نعد للکافرین کما یعدون لنا ولا نرفع الحسام قبل ان نقتل بالحسام

(हकीकतुल महदी,रुहानी ख़ज़ाइन, भाग 14 पृष्ठ 454)

अत: यह सुन्नत (अर्थात तलवार के जिहाद की) मुल्तवी कर दिया गया है। इस वजह से कि अब इस के कारण नहीं रहे हम आदेश दिए गए हैं कि हम काफ़िरों के मुक़ाबला के लिए वैसी ही तैयारी करें, जैसे वे हमारे मुक़ाबला के लिए करते हैं। हम उन पर उस वक़्त तक तलवार ना उठाएं, जब तक वह हम पर तलवार से क़तल करने के लिए हमला ना करें।

अत: हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम ने मुसलमानों को जिहाद से नहीं रोका। बल्कि इस्लाम मुख़ालिफ़ीन का तलवार से मुक़ाबला करने और उन्हें क़तल करने से मना किया है। और यह इसलिए कि वह इस्लाम धर्म को समाप्त करने के लिए तलवार के माध्यम से हमला नहीं कर रहे। अत: मुसलमानों के लिए भी जायज़ नहीं कि वह अकारण इस्लाम के नाम पर तलवार उठाएं। और ग़ाज़ी कहलाने के शौक़ में कुफ़्फ़ार का सिर काटें।

मुसलमानों के पास तलवार के जिहाद के लिए, ना तलवार है ना ढाल।

सय्यदना मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि

اِنَّمَا الْاِمَامُ جُنَّۃٌ یُقَاتَلُ مِنْ وَّرَائِہٖ وَیُتَّقٰی بِہٖ

अर्थात (अल्लाह तआला की तरफ़ से निर्धारित इमाम ढाल होता है जिसके पीछे रह कर क़िताल किया जाता है और इसी के माध्यम बचा जाता है ।ऐसे क़िताल करने वालों के बारे में अल्लाह तआला का वादा है कि अल्लाह उनकी मदद पर पूरी क़ुदरत रखता है। वर्तमान समय में ऐसे देशों जिनमें मुसलमान कहलाने वाले हुकमरान या ऐसी दहश्तगर्द तंज़ीमें जो अपने आपको इस्लाम की तरफ़ मंसूब करती हैं,हर क्षेत्र में शिकस्त और नाकामी पर नाकामी का सामना कर रही हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि उन्हें ऊपर वर्णन की गई आयत की रोशनी में अल्लाह तआला का समर्थन हासिल नहीं। हाँ जिन सयासी हितों के लिए जंगें हैं उन्हें सियासत के नाम पर लड़ना चाहिए। मज़हब इस्लाम का उनसे कोई नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहि अस्सलाम फ़रमाते हैं

अब तुम में क्यों वो सैफ की ताक़त नहीं रही
भेद इस में है यही कि वो हाजत नहीं रही
अब कोई तुम पे जबर नहीं ग़ैर क़ौम से
करती नहीं है मना सलात और सौम से
तुम में से जिसको धर्म दियानत से है प्यार
अब उस का फ़र्ज़ है कि वो दिल कर के इस्तिवार
लोगों को ये बताए कि वक़्त-ए-मसीह है
अब जंग और जिहाद हराम और क़बीह है

(ज़मीमा तोहफ़ा गोलड़विया, रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 77)

हर ज़माना का जिहाद अलग अलग होता है

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि:

واعلموا ان وقت الجہاد السیفی قد مضی ولم یبق الا جہاد القلم والدعاء وآیات عظمیٰ

(हकीकतुल महदी, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 14 पृष्ठ 457)अर्थात समझ लो कि अब तलवार के जिहाद का ज़माना नहीं बल्कि दुआ और महान निशानों से जिहाद करने का ज़माना है

فلا سیف فی ھذا الزمان الّا سیف قوۃ البیان ولا اجد فی ھذا العصر تاثیر القنات الّا فی البراھین والادلۃ والاٰیات

(हकीक अलमहदी,रुहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 463)

इस ज़माना में क़ुव्वते ब्यान के सिवा कोई तलवार नहीं। और दलीलों तथा बराहीन और निशानों के वर्णन करने में जो तासीर है। वह भाले में हरगिज़ नहीं।

अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के माध्यम से हर मुसलमान को जिस जिहाद का आदेश दिया वह "जिहाद कबीर"(बड़ा जिहाद) है। फ़रमान इलाही है

وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا

(अल-फ़ुर्कान 53) अत: तू काफ़िरों की बात ना मान और इस (क़ुरआन के माध्यम उनसे जिहाद कबीर' कर। एक दूसरी जगह फ़रमाया

يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ

(अल-मायदा 68)हे रसूल तेरे रब की तरफ़ से जो कलाम भी तुझ पर उतारा गया है उसे लोगों तक पहुंचा।

वर्तमान युग में मुसलमानों पर जो जिहाद फ़र्ज़ है और जिसके करने की सख़्त ज़रूरत है वह है "तब्लीग़ इस्लाम और दावत इलल्लाह" यह जिहाद कबीर हर मुसलमान पर हर ज़माना तथा स्थान में फ़र्ज़ किया गया था,अफ़सोस मुसलमानों के तथाकथित मौलवियों और राहनमाओं पर कि उन्होंने इस जिहाद की तरफ़ तो ध्यान ना दिया,बल्कि एक ऐसे "जिहाद" के करने की तरफ़ चल पड़े, जिस की वर्तमान युग में ज़रूरत ना थी। इसी वजह से हर क्षेत्र में मुसलमानों को बदतरीन शिकस्त हुई। आज से लगभग एक सौ दो साल पहले हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह नसीहत फ़रमाई थी

अब छोड़ दो जिहाद का ए दोस्तो ख़्याल
दीं के लिए हराम है अब जंग और क़िताल
यह आदेश सुन के भी जो लड़ाई को जाएगा
वो काफ़िरों से सख़्त हज़ीमत उठाएगा

(ज़मीमा तोहफ़ा गोल्ड़विया,रुहानी ख़ज़ाइन भाग 17 पृष्ठ 77)

पिछले एक सौ दो साल गवाह हैं,दुनिया में जहां कहीं मुसलमानों ने '' इस्लाम धर्म''के नाम पर तलवार के जिहाद किया ,वहां उन्हें बदतरीन शिकस्त का सामना करना पड़ा

वर्तमान समय में तब्लीग़ इस्लाम और तलवार के जिहाद की ज़रूरत है। अल्हमदो लिल्लाह मुस्लिम जमाअत अहमदिया हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की इमामत तथा मार्ग दर्शन में जिहाद कबीर का फ़र्ज़ अदा कर रही है।

☆ ☆ ☆
☆ ☆
☆

सम्पादकीय पृष्ठ 1 का शेष

अभी कुछ दिन पहले के दौरा यूरोप (फ्रांस, हॉलैंड,बेलजीयम के अवसर पर दिनांक 8 अक्तूबर 2019 ई को फ्रांस में यूनेस्को की इमारत में आपने लैक्चर दिया जिसमें आपने इस्लामी शिक्षाएं वर्णन कीं और बताया कि दुनिया में इलमी और साईंसी तरक़्क़ी में मुस्लमानों का कैसा शानदार किरदार रहा है। पाठकों को बताते चलें कि यूनेस्को, यू.इन की एक संस्था है जो शिक्षा साईंस और कल्चर को बढ़ावा देने के लिए क़ायम किया गया है। इस के कामों में प्रैस की आज़ादी ग़रीबी की समाप्ति और विरसा की सुरक्षा इत्यादि के काम शामिल हैं।

दिनांक 22 अक्तूबर 2019 ई को आपने जर्मनी की राजधानी बर्लिन में "इस्लाम ऐंड यूरोप" के विषय पर ख़िताब फ़रमाया। इस प्रोग्राम में 27 क़ौमी असैंबली के मेम्बर, दफ़्तर ख़ारजा के प्रतिनिधि, प्रोफ़ैसर्ज़, यू.एस और फ्रांस एंबेसीज़ के पोलीटिक्ल अफ़्सर, विभिन्न हुकूमत के प्रतिनिधि, विभिन्न धर्मों और चर्चों और कम्यूनिटीज़ के प्रतिनिधि,प्रैस और मीडिया के प्रतिनिधि और एमन्सिटी इंटरनैशनल के प्रतिनिधि शामिल थे। हुज़ूर अनवर के हॉलैंड पधारने पर हॉलैंड के अख़बार (Ons Almere) ने 25 सितम्बर 2019 ई दिनांक बुध को यह ख़बर लगाई।

"अमन का ख़लीफ़ा हॉलैंड तशरीफ़ लाया है।"

और यह ख़बर प्रकाशित की कि ख़लीफ़तुल मसीह पूरी दुनिया में इन्सानी हमदर्दी और मानव जाति की सेवा कर रहे हैं, अमन और मज़हबी भाईचारा को बढ़ावा दे रहे हैं, समय के ख़लीफ़ा ने दुनिया के अन्य पार्लीमैंट के अतिरिक्त डच पार्लीमैंट में भी ख़िताब किया है।

वक़्त की मांग और हालात के तक़ाज़ा के अनुसार आपको दुनिया में अमन की स्थापना के बारे में अल्लाह तआला के फ़ज़ल तथा करम से जो काम करने की तौफ़ीक़ मिली है इस में आपका बहुत नुमायां और विशेष स्थान है। यही वजह है कि ना सिर्फ यह कि हम अपनी किताबों, रिसालों और अख़बारों में आपको अमन का सफ़ीर लिखते हैं बल्कि दूसरे भी स्पष्ट रूप से इसको वर्णन करने लगे हैं कि दुनिया में अमन तथा शान्ति फैलाने में इस आदमी का कोई जवाब नहीं। पिछले दौरा अमरीका के अवसर पर दिनांक 21 अक्तूबर 2018 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को जहाज़ के द्वारा वाशिंगटन से हीवसटन जाना था। 12 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ एयरपोर्ट पर पधारे। यूनाईटिड एयर लाईन के सिनियर स्टाफ़ ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर स्पेशल लाऊंज में तशरीफ़ ले आए। दो बजे जहाज़ में बोर्डिंग हुई और दो बज कर पैंतीस मिनट पर यूनाईटिड एयर लाईन का जहाज़ UA 484 वाशिंगटन के Dulles एयरपोर्ट से हीवसटन के जॉर्ज बुश इंटरनेशनल एयरपोर्ट के लिए रवाना हुई। जहाज़ के रवाना होने के कुछ देर बाद पायलट केबिन से यह ऐलान हुआ कि

" हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद हमारे जहाज़ में सफ़र कर रहे हैं और हम उनको स्वागत कहते हैं हुज़ूर अमन के एक विश्वव्यापी (World Ambassador of Peace)हैं और दुनिया में मज़हबी आज़ादी, भाईचारा और अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं।"

(देखें बदर 31 जनवरी 2019 ई पृष्ठ 10 कालम 1)

दुनिया की विभिन्न पार्लीमैंटों में हुज़ूर अनवर ने इस्लाम की अमन प्रदान करने वाली शिक्षा पर जो लैक्चर दिए उन में से हुज़ूर के कुछ उपदेश और हुज़ूर अनवर के लैक्चर पर मेहमानों की प्रतिक्रियाएं नीचे प्रस्तुत हैं।

22 अक्तूबर 2008 ई को हुज़ूर अनवर ने ब्रिटिश पार्लीमैंट में ख़िताब फ़रमाया। दोनों सदनों से आए हुए तीस से अधिक पार्लीमैंट के मेम्बरों और सारी दुनिया का प्रतिनिधित्व करने वाले सिफ़ारतख़ानों और विचारधाराओं से सम्बन्ध रखने वाली प्रमुख शख़्सियतें हुज़ूर अनवर के ख़िताब को सुनने के लिए जमा थीं।

ख़िताब हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारी ज़िन्दगियों का एक मात्र और उच्च मक़सद यह है कि हम दुनिया के सामने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पवित्र और इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा प्रस्तुत करें। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया समाज में अमन की स्थापना के लिए इस्लाम की शिक्षा यह है कि इन्साफ़ से बिलकुल क़दम ना हटाओ यहां तक कि दुश्मन से भी इन्साफ़ करो। इस्लाम का आरंम्भिक इतिहास ज़ाहिर करता है कि इस शिक्षा पर चलते हुए इन्साफ़ के समस्त तक़ाज़ों पर भरपूर अनुकरण किया गया। तारीख़ गवाह है कि रसूलुल्लाह ने मक्का फ़तह के बाद हरगिज़ कोई बदला उन लोगों से नहीं लिया जिन्हों ने मुसलमानों को बहुत अधिक अत्याचारों का निशाना बनाया था। ना सिर्फ यह कि आपने उन्हें माफ़ फ़र्मा दिया बल्कि उन्हें इजाज़त दी कि वे अपने-अपने मज़हब पर अनुकरण करें।

आदरणीया हैज़ल बलेयरज़ साहिबा सैक्रेटरी आफ़ स्टेट स्थानीय गर्वनमैंट फ़ार कम्यूनिटी ने कहा कि मैं निहायत सच्चाई से कह सकती हूँ कि मैं ने इस ख़िताब को बहुत प्रभावित करने वाला पाया है। इस किस्म का ख़िताब सियास्तदान बहुत कम कर सकते हैं और इतना प्रभावित करने वाली तक़रीर बहुत कम सुनने में आती है।

Capitol Hill अमरीका में हुज़ूर अनवर का ख़िताब 27 जून 2012 दिनांक बुध हुआ। जैसे ही हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ हाल के अंदर दाख़िल हुए ,सारे मेहमान सम्मान के लिए खड़े हो गए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ स्टेज पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए। मेहमानों में 29 सैनेटर्ज़ और कांग्रेस मैन के इलावा उनके स्टाफ़ मैंबर्ज़,वज़ारत ख़ारजा डिपार्टमैंट आफ़ स्टेट के प्रतिनिधि,White House से सम्बन्ध रखने वाले प्रतिनिधि, वज़ारत दिफ़ा पेंटागन के प्रतिनिधि,थिंक टैंकस, NGOs और हियूमन राईट्स के इदारों के प्रतिनिधि, कॉलेज और यूनीवर्सिटीज़ के प्रोफ़ैसर, विभिन्न देशों के राजदूत और फ़ौजी लोग शामिल थे। इन मेहमानों की संख्या 110 से अधिक थी।

हुज़ूर अनवर के ख़िताब से पहले कांग्रेस की तरफ़ से जो क़रारदाद पास की गई उस का कुछ हिस्सा प्रस्तुत है।

आप की दुनिया में अमन की स्थापना , न्याय , इन्साफ़ , इन्सानी हुक़ूक़ की स्थापना , जमहूरीयत और मज़हबी आज़ादी के लिए कोशिशों को स्वीकार करते हैं।

...यह क़रारदाद स्वीकार करती है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह मुस्लमानों के एक नुमायां लीडर हैं जो अमन की स्थापना के लिए ख़ुत्बों , लैक्चर , किताबों और व्यक्तिगत मुलाक़ातों में इन्सानियत की सेवा के लिए अहमदिया इक़दार , विश्वव्यापी मानवीय अधिकारों की स्थापना और अमन तथा न्याय वाले समाज और सोसाइटी के क़ियाम के लिए हर समय कोशिश कर रहे हैं।

...यह क़रारदाद इस बात को भी स्वीकार करती है कि हुज़ूर अनवर जब दुनिया के विभिन्न देशों के दौरा में देशों के सदरों , वुज़राए आज़म , मुल्कों के राजदूतों और अन्य पार्लियामेन्ट के लोगों को मिलते हैं तो उन में इन्सानियत की सेवी की भावना को उजागर करते हैं और इन्सानियत की सेवा के लिए व्यावहारिक क़दम उठाते हैं

...अतः कांग्रेस यह क़रारदाद पास करती है कि वह हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब का वाशिंगटन डी सी में स्वागत करती है। आपके अमन की स्थापना और न्याय की स्थापना की कोशिशों को स्वीकार करती है और इस बात को भी मानती है कि आप अपनी जमाअत को बावजूद उन पर सख़्त अत्याचार और Persecution के उन्हें अमन से रहने

और सब्र करने की नसीहत करते हैं।

ख़िताब हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया : क़ुरआन करीम इस बात को स्पष्ट करता है कि समस्त लोग पैदाइशी तौर पर बराबर हैं। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो आख़िरी ख़िताब फ़रमाया,इस में समस्त मुस्लमानों को यह ताकीद की कि वे हमेशा याद रखें कि किसी अरबी को अजमी पर और किसी अजमी को अरबी पर कोई प्राथमिकता नहीं है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भी शिक्षा कि किसी गोरे को काले पर और काले को गोरे पर कोई फ़ज़ीलत नहीं है। अत: यह इस्लाम की स्पष्ट शिक्षा है कि समस्त क़ौमीयतें और नस्लें बराबर हैं। इस्लाम की शिक्षा में यह भी स्पष्ट किया गया है कि समस्त लोगों को बिना किसी अन्तर और द्वेष के समान अधिकार प्रदान किए जाएं। इस्लाम हमें हर मामला में बुराई के बिना न्याय और बराबरी की शिक्षा देता है। इस बारे में क़ुरआन करीम ने हमारा फ़ैसला करने वाला मार्ग दर्शन किया है। अत: सूरह अल-मायदा की आयत नम्बर 3 में वर्णन है कि अदल तथा न्याय की मांग पूरे करने के लिए यह ज़रूरी है कि इन लोगों के साथ भी जो नफ़रत और दुश्मनी में हद से बढ़ गए हैं इन्साफ़ का सुलूक बरता जाए। और क़ुरआन करीम यह भी हमें सिखलाता है कि जब भी कोई आपको नेकी और भलाई की तरफ़ बुलाए तो उसे स्वीकार करो। और अगर कोई आपको बुराई और ग़ैर मुंसिफ़ाना तरीक़ा की तरफ़ ले जाए तो इस को रद्द कर दो। सूरह अन्निसा की आयत 136 में वर्णन है कि अगर आपको अपने ख़िलाफ़ या अपने माता पिता के ख़िलाफ़ या अपने प्यारों के ख़िलाफ़ गवाही देनी पड़े तो ज़रूर दो ताकि सच्चाई और न्याय को क़ायम रखा जा सके। इस्लाम हमारा ध्यान अमन की स्थापना की तरफ़ करवाता है। इस्लाम सम्पूर्ण इन्साफ़ का तक़ाज़ा करता है। इस्लाम हमेशा सच्ची गवाही देने का तक़ाज़ा करता है। इसी तरह इस्लाम हम से मांग करता है कि हमारी हासिदाना नज़रें दूसरों के मालों पर ना पड़े। और इस्लाम इस बात का भी तक़ाज़ा करता है कि तरक़्क़ी करने वाली क़ौमें अपने व्यक्तिगत स्वार्थों को बचाते हुए तरक़्क़ी करने वाली और ग़रीब क़ौमों की निस्स्वार्थ हो कर ख़िदमत करें। अगर इन समस्त बातों को सम्मुख लाया जाए तो वास्तविक अमन की स्थापना होगी।

प्रतिक्रिया मेंम्बर आफ़ कांग्रेस Keith Ellison ने कहा कि हुज़ूर अनवर के ख़िताब का उन पर बहुत प्रभाव हुआ है। अमन और न्याय के बारे में हुज़ूर अनवर ने जिस तरह धार्मिक शिक्षाओं को पेश किया है वे बहुत ही सुन्दर हैं। हुज़ूर अनवर का ख़िताब प्रकाशित कर के व्यापक स्तर पर बांटा जाना चाहिए। हुज़ूर जैसे उच्च रूहानियत के दर्जा पर फ़ाइज़ मुसलमान लीडर की आज उम्मते मुस्लिमा को ज़रूरत है और फ़िर्क़ों में बटे हुए मुसलमानों के लिए हुज़ूर का वजूद बरकतों का कारण है। महोदय ने कहा क़ुरआन करीम की शिक्षा के अनुसार धर्म में कोई जबर नहीं है और सब मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वह इस्लाम की सही शिक्षाओं को समझें।

4 दिसम्बर 2012 ई दिनांक मंगल यूरोपीयन पार्लीमैंट में हुज़ूर अनवर का ख़िताब हुआ। यूरोपीयन पार्लीमैंट, योरुपी यूनीयन को चलाने के लिए एक पार्लीमानी संस्था है, क़ानून बनाने के एतबार से इस को दुनिया की सबसे ज़्यादा ताक़तवर पार्लीमैंट भी कहा जाता है। पार्लीमैंट की इमारत में तशरीफ़ लाने के बाद मैंबरान पार्लीमैंट और अन्य मेहमानों ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की। अत: बर्तानिया , नार्वे, स्पेन और आयरलैंड के मैंबरान पार्लीमैंट और अन्य सम्मान्नीयों ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ पार्लीमैंट के स्टेज पर तशरीफ़ लाए । हुज़ूर अनवर के दाएं तरफ़ इस आयोजन के मेज़बान, यूरोपीयन पार्लीमैंट मैंबर Dr. Charles Tannock बैठे थे। स्टेज पर एक तरफ़ यूरोपीयन पार्लीमैंट का झंडा और दूसरी तरफ़ लिवाए अहमदियत लहरा रहा था। यूरोपीयन पार्लीमैंट के इतिहास में पहली बार उनके कान्फ्रैंस हाल में लिवाए अहमदियत लहराया गया। अल्हम्दु लिल्लाह। डाक्टर चार्ल्स टेनाक ने अपने परिचयात्मक सम्बोधन में कहा

"अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी विश्वव्यापी सतह पर अमन का पैग़ाम फैला रही है और कट्टरता के ख़िलाफ़ लड़ रही है। हमारा फ़र्ज़ बनता है कि इस कम्यूनिटी के बुनियादी पैग़ाम को यूरोप में फैलाईं जो कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं पर आधारित है। यह अमन का पैग़ाम है और यह अमन सिर्फ मुस्लमानों के बीच नहीं बल्कि दुनिया में मौजूद समस्त धर्मों के बीच अमन का पैग़ाम है।"

ख़िताब जमाअत के रूप में हम निरन्तर दुनिया की तवज्जा अमन की स्थापना और लोगों की सुरक्षा की तरफ़ दिलाते रहते हैं और अपने सामर्थ्य के अनुसार पूरी कोशिशें करते हैं। अहमदिया मुस्लिम जमाअत के सरबराह होने की हैसियत से जब भी कोई अवसर बनता है मैं ऐसे मामलों पर नियमित रूप से बात करता हूँ। मैं हमेशा अमन की स्थापना और आपसी मुहब्बत की तरफ़ ध्यान दिलाता हूँ। इस्लाम की सबसे बुनियादी शिक्षा यह है कि सच्चा मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से हर अमन पसन्द सुरक्षित हो। यह मुसलमान का वह परिचय है जो इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ख़ुद वर्णन फरमाया है। क्या इस बुनियादी और ख़ूबसूरत उसूल को सुनने के बाद भी कोई एतराज़ इस्लाम पर उठ सकता है? निसन्देह नहीं। स्थानीय स्तर से लेकर विश्वव्यापी सतर तक यदि समस्त पक्ष इस सुनहरी उसूल की पाबंदी करने लगें तो हम देखेंगे कि कभी भी मज़हबी फ़साद पैदा ना होगा और कभी भी स्यासी मसले पैदा ना होंगे और ना ही लालच और इक़तिदार की हवस के कारण फ़साद पैदा होगा। अमन को बढ़ावा देने के लिए इस्लाम का एक और सुनहरा उसूल यह है कि दूसरों के हुक़ूक़ नष्ट किए जा रहे हों तो हम इस बात को हरगिज़ बर्दाश्त ना करें। जिस तरह हम अपना हक़ मारा जाना नहीं देख सकते इसी तरह हमें दूसरों के लिए भी इस चीज़ को स्वीकार नहीं करना चाहिए। इस्लाम शिक्षा देता है कि जहां सज़ा देनी पड़े वहां यह ख़्याल रखा जाए कि यह सज़ा असल क़सूर से ज़रूर सम्बन्धित हो फिर भी अगर माफ़ करने से सुधार होता हो तो माफ़ करने को प्राथमिकता देनी चाहिए और असल और बुनियादी मक़सद सुधार, सुलह और स्थायी अमन की स्थापना होनी चाहिए। इस्लाम इस बात पर बहुत ज़ोर देता है कि हमेशा साफ और न्याय पूर्ण काम रखा जाए। इस्लाम सिखाता है कि तर्जीह देते हुए किसी भी पक्ष का नाजायज़ साथ ना दिया जाए। इस्लाम की एक और ख़ूबसूरत शिक्षा यह है कि समाज में अमन की स्थापना इस बात की मांग करता है कि अपने ग़ुस्सा को ईमानदारी और इन्साफ़ के उसूलों पर हावी करने की बजाय, ज़बत किया जाए। इस्लाम का आरम्भिक इतिहास इस बात की गवाही देती है कि वास्तविक मुसलमान हमेशा इस उसूल पर चलते रहे और जिन्होंने इस उसूल की पाबंदी नहीं की उन पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बड़ी नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया। इस्लाम इस बात की शिक्षा देता है कि दूसरों की दौलत और साधनों पर द्वेषपूर्ण नज़र ना रखी जाए। हमें दूसरों की जायदादों की लालच नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह भी अमन की तबाही का कारण है।

Bishop Dr. Amen Howard जो जेनेवा (स्विटज़रलैंड से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब में शामिल होने के लिए आए थे, महोदय एंटर फ़ेथ इंटरनैशनल के प्रतिनिधि और सामाजिक संस्था Feed a Family के सदर भी हैं, ने कहा :

"यह शख़्स जादूगर नहीं लेकिन उनके शब्द जादू जैसा असर रखते

हैं। लहजा धीमा है लेकिन उनके मुँह से निकलने वाले शब्द ग़ैरमामूली ताक़त, शौकत और प्रभाव अपने अंदर रखते हैं। इस तरह का हौसले वाला इन्सान मैंने अपनी ज़िन्दगी में कभी नहीं देखा। आपकी तरह के सिर्फ तीन इन्सान अगर इस दुनिया को मिल जाएं तो लोगों के अमन के हवाले से इस दुनिया में हैरत करने वाला इन्क़िलाब महीनों नहीं बल्कि दिनों के अंदर पैदा हो सकता है और यह दुनिया अमन और भाईचारा का घर बन सकती है। मैं इस्लाम के बारे में कोई अच्छी राय नहीं रखता था। हुज़ूर के ख़िताब ने इस्लाम के बारे में मेरे दृष्टिकोण को पूर्ण रूप से तबदील कर दिया है।"

दिनांक 4 नवम्बर 2013 ई को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने न्यूज़ीलैंड की पार्लीमैंट में ख़िताब फ़रमाया। मैंबर पार्लीमैंट ऑनरेबल कंवल जीत बख़शी ने पार्लीमैंट पहुंचने पर हुज़ूर अनवर का स्वागत किया और हुज़ूर अनवर को पार्लीमैंट की इमारत के अंदर ले गए। हुज़ूर अनवर का लैक्चर पार्लीमैंट के सबसे बड़े हाल"ग्रांड हाल" में रखा गया था।

हुज़ूर अनवर ने अपने ख़िताब के शुरू में फ़रमाया कि मैं इस मसला पर बात करूँगा जो मेरे नज़दीक इस दौर की प्रमुख ज़रूरत है और वह दुनिया में अमन की स्थापना है। हुज़ूर अनवर ने दुनिया के भयंकर हालात और ऐटमी जंग की संभावनाओं का वर्णन करने के बाद फ़रमाया दूसरे विश्व युद्ध के बाद दुनिया में स्थायी अमन की स्थापना के लिए और भविष्य में जंगों से बचने के लिए सारी क़ौमों ने मिलकर एक संस्था बनाई जिसे वह लीग आफ नेशनज़ कहते हैं। लेकिन लगता है कि जैसे लीग आफ़ नेशनज़ अपने उद्देश्य में बुरी तरह नाकाम हुई इसी तरह आज अक़्वाम-ए-मुत्तहदा का स्थान और सम्मान भी गिरता चला जा रहा है। अगर इन्साफ़ के तक़ाज़े पूरे ना हों तो फिर बेशक अमन की स्थापना के लिए जितनी चाहे संस्थाएं बन जाएं उन की सारी कोशिशें नष्ट हो जाएँगी।

अमन की स्थापना के लिए इस्लामी शिक्षा का वर्णन करते हुए आपने फ़रमाया क़ुरआन करीम शिक्षा देता है कि हर किस्म की दुश्मनी और द्वेष दूर करने के लिए जहां तक सम्भव हो सके बातचीत और वार्तालाप के द्वारा हल तलाश करने चाहिए। यक़ीनन लोगों के साथ हिक्मत और नर्मी के साथ कलाम करना उनके दिलों पर सकारात्मक और प्यारा असर ही डालता है और दिलों से नफ़रत और द्वेष ख़त्म करने का कारण होता है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक मुसलमान जमाअत का रहनुमा होने की हैसियत से मेरा फ़र्ज़ है कि मैं दुनिया का ध्यान अमन की स्थापना की तरफ़ करवाओं। मैं इसे अपना फ़र्ज़ समझता हूँ क्योंकि इस्लाम का असल मतलब तो अमन और सलामती ही है। अगर कुछ मुसलमान देश शिद्दत पसंदी के नफ़रत फैलाने के काम करते हैं या उन कामों का समर्थन करते हैं तो इस से यह नतीजा नहीं निकालना चाहिए कि इस्लामी शिक्षाऐं लड़ाई और फ़साद का सन्देश देती हैं। इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुयायियों को "सलाम" कहने की शिक्षा दी है जिसका अर्थ है कि हमेशा सलामती को फैलाते रहो। हमें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुबारक आचरण से मालूम होता है कि आप समस्त ग़ैर मुस्लिमों पर भी सलामती भेजते चाहे वे यहूदी, ईसाई हों या उनका सम्बन्ध किसी भी मज़हब या अक़ीदा से होता। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ऐसा इसीलिए करते कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निकट समस्त लोग ख़ुदा तआला की सृष्टि हैं और ख़ुदा तआला के नामों में से एक "सलाम" अर्थात सलामती का माध्यम भी है। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम समस्त मानव जाति के इन्सानों के लिए अमन और सलामती चाहते थे।

कंवल जीत सिंह बख़शी,मैंबर पार्लीमैंट ने कहा:मेरा जमाअत अहमदिया के साथ पिछले दस साल से सम्बन्ध है और मेरा देखना है कि इस जमाअत का बड़ा मक़सद अमन और विश्वव्यापी भाईचारा को बढावा देना है।

इस्राईल के राजदूत Yosef Livne ने कहा मेरे ख़्याल में ख़लीफ़तुल मसीह ने जो पैग़ाम दिया है वह बहुत महत्तव रखता है। हर एक को उसे स्वीकार करना चाहिए। मेरी यही इच्छा है कि आपका पैग़ाम हक़ीक़त का रूप धार ले। यह जितना जल्दी हो इसी में बेहतरी है

राजन प्रसाद,मैंबर पार्लीमैंट ने कहा मैं हमेशा इस बात से प्रभावित रहा हूँ कि किस पर अमन तरीक़ से अहमदी इस देश के शहरी की हैसियत से रहते हैं और अपने अमन के पैग़ाम पर अनुकरण करते हैं।

Patric Reilly नायब हाई कमिशनर यू के ने कहा हमें जो पैग़ाम सुनने का अवसर मिला है वह बहुत अहम है और ज़रूरत इस बात की है कि यह फैल कर सारी दुनिया तक पहुंचे।

हॉलैंड की नैशनल पार्लीमैंट में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 6 अक्तूबर 2015 ई को ख़िताब फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आज के ज़माना में दुनिया का अमन और इस की सुरक्षा सबसे भयानक मसला है। हम अहमदी मुसलमान उन लोगों में से नहीं हैं जो आज के फ़साद और बदअमनी में हिस्सा डाल रहे हैं बल्कि हम तो वे लोग हैं जो दुनिया में अमन चाहते हैं। हम वे लोग हैं जो दुनिया के ज़ख़्मों को मर्हम लगाना चाहते हैं। हम वे लोग हैं जो मानव जाति को मुत्तहिद करना चाहते हैं। हम वे लोग हैं जो हर किस्म की नफ़रत और द्वेष तथा वैर को प्यार और मुहब्बत में तबदील करना चाहते हैं और सबसे बढ़कर हम वे लोग हैं जो दुनिया में अमन की स्थापना के लिए हर मुमकिन कोशिश करते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

यह बहुत बड़ी नाइंसाफ़ी है कि कुछ लोग या गिरोह क़ुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम को फ़साद और ज़ुल्म से जोड़ते हैं। अगर हम क़ुरआन करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत का ध्यान पूर्वक अध्ययन करें तो हमें मालूम होगा कि इस्लाम हर किस्म की इंतिहापसंदी और ख़ून फैलाने का विरोधी है। वक़्त की कमी के कारण यह तो संभव नहीं कि मैं विस्तार से इस पर विचार करूँ लेकिन फिर भी कुछ प्रमुख इस्लामी शिक्षाओं को वर्णन करूँगा जो बड़े स्पष्ट अंदाज़ में साबित करती हैं कि इस्लाम अमन का मज़हब है। और इस के बाद हुज़ूर अनवर ने अमन के बारे में इस्लामी शिक्षाएं वर्णन कीं।

फ़ौरन अफ़ीयर कमेटी के क़ाइम मक़ाम चेयरमैन HARRY VAN BOMMEL जिन्होंने इस तक़रीब की मेज़बानी की,ने कहा: यह प्रोग्राम मेरी उम्मीद से बहुत ज़्यादा कामयाब रहा है और अब इस के बहुत दूर तक जाने वाले नतीजे निकलेंगे। ख़लीफ़तुल मसीह ने अपना पैग़ाम बहुत प्रभावकारी अंदाज़ में दिया। हॉलैंड के लोगों का यह हक़ है कि उनको इस्लाम का यह अमन पसंद चेहरा भी दिखाया जाए। उनको इस पैग़ाम की ज़रूरत है। ख़लीफ़तुल मसीह के साथ पार्लीमैंट की यह आयोजन पहला क़दम था। अब हम और अधिक ऐसे प्रोग्रामों का आयोजन करेंगे।

हॉलैंड के भूतपूर्व रक्षा मन्त्री Dr. W F VAN EEKELEN ने कहा ख़लीफ़तुल मसीह के पैग़ाम से इस्लाम का वास्तविक चेहरा देखने का अवसर मिला है और अब यह इच्छा है कि हुज़ूर अनवर बार-बार हॉलैंड तशरीफ़ लाएंगे ताकि लोगों के दिल से इस्लाम का ख़ौफ़ निकल जाए।

मोंटी नीग्रो के मैंबर पार्लीमैंट MR DRITAN ABAZOVIC ने कहा :यह आयोजन जमाअत के लिए एक बहुत बड़ी कामयाबी है कि

इस के विश्वव्यापी लीडर ने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा बहुत उच्च स्तर पर पेश की है। आज की ख़तरों वाली दुनिया में ऐसे आयोजन की बहुत ज़रूरत है।

स्विटज़रलैंड से बिशप डाक्टर अमन हॉवर्ड भी इस प्रोग्राम में शामिल हुए थे। यह सेंक्चुरी परेज़ इंटरनैशनल चर्च जेनेवा के बिशप हैं। उन्होंने कहा :मैं यक़ीन रखता हूँ कि आप वास्तव में अमन के पैयाम्बर हैं और मैं चाहता हूँ कि समस्त मुस्लमान विश्वव्यापी सतह पर अमन स्थापित करने की जुस्तजू में आपके शरीक हो जाएं।

क्रोशिया देश से हुकूमत करने वाली पार्टी सोशल डेमोक्रेट के एक मैंबर पार्लीमैंट PAND EK DRAZENKO ने कहा :ख़लीफ़तुल मसीह ने इस्लामी शिक्षाओं को बड़े ही वाज़िह और स्पष्ट रंग में बयान किया। दुनिया में अमन के क़ियाम के लिए इस्लामी शिक्षाऐं बहुत प्रभावी हैं। अगर समस्त मुस्लमान इन शिक्षाओं पर सच्चे दिल से अनुकरण करें तो दुनिया अमन का घर बन सकती है

स्वीडन के मैंबर पार्लीमैंट MR BENGT ELIASSON ने कहा: मुझे हुज़ूर अनवर के ख़िताब ने बहुत प्रभावित किया है। आपके ख़िताब में सिर्फ सच्चाई ही सच्चाई थी कोई भी मस्लिहत नहीं थी। अमन , इन्साफ़,बर्दाश्त,इन्सानियत,मुहब्बत और भाईचारा से सम्बन्धित हुज़ूर अनवर ने बड़े आसान शब्दों में में ध्यान दिलाया है और दुनिया को एक पैग़ाम दिया है।

कैनेडीयन पार्लीमैंट में हुज़ूर अनवर ने 17 अक्तूबर 2016 ई को ख़िताब फ़रमाया और अमन की स्थापना के बारे में इस्लामी शिक्षाएं और बहुत सारे मस्लों पर रोशनी डाली। ख़ाकसार सिर्फ़ कुछ लोगों की प्रितक्रियएं नीचे पेश करता है ताकि मालूम हो कि हुज़ूर के ख़िताब को किस क़दर अच्छी नज़र से देखा गया।

इस्राईली राजदूत राफ़ाइल बाराक ने अपने प्रितिक्रिया का इज़हार करते हुए कहा :क्या ही प्रभावित करने वाली तक़रीर थी। अमन के लिए अहम पैग़ाम था और यह कि समस्त धर्मों को किस तरह एक दूसरे की इज़्ज़त करनी चाहिए। आज इस्लाम के बारे में मेरी सोच बदल गई है और इस की क़द्र-दानी भी बढ़ गई है। इस तक़रीर को प्रकाशित करना चाहिए और ज़्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाना चाहिए। और अगर लोग इस पैग़ाम की पैरवी करेंगे तो दुनिया के गंभीर से गंभीर मसाइल भी हल हो सकते हैं। मुझे हुज़ूर के ख़िताब में बर्दाश्त का पहलू बहुत पसंद आया और यह कि समस्त लोगों के हुक़ूक़ अदा किए जाएं। चाहे वे मुस्लमान हूँ या यहूदी। सब के हुक़ूक़ अदा होने चाहिऐं। अहम और प्रभावित करने वाला सन्देश था।

चीफ़ इमाम और स्कॉलर मुहम्मद जिबारा ने कहा :मैं एक सुन्नी इमाम हूँ और मुझे यह कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं कि इस तक़रीर ने दुनिया में क़ियाम अमन की बुनियाद रखी है । इस तक़रीर की आज की दुनिया में बहुत ज़रूरत है। ख़लीफ़ा की तक़रीर हिक्मत से भरी बहुत उच्च समय अनुकूल थी। हज़रत अक़दस निहायत दूर-अँदेश और निहायत अच्छी सोच के वाले हैं। आपने फ़रमाया कि इन्साफ़ के क़ियाम में बराबरी होनी चाहिए। आपने इस्लामी नज़रिया को निहायत ख़ूबसूरत रंग में पेश फ़रमाया और बहुत से मुश्किल पहलूओं को इस ख़ूबसूरत अंदाज़ में बयान फ़रमाया कि लोगों की भवानाओं को भी ठेस न पहुंचे।

मैंबर पार्लीमैंट' नकोला डी औरेव' ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा :हुज़ूर की शख़्सियत कमाल करने वाली थी और शब्द बहुत अधिक प्रभावित करने वाले। आपकी तक़रीर निहायत शानदार थी जिसमें सारे दुनिया के मस्लों को संक्षेप के साथ पेश किया गया। जमाअत अहमदिया एक ज़बरदस्त जमाअत है और मज़हबी तन्ज़ीमों के लिए एक उदाहरण है। मैं हैरान हूँ क्योंकि मेरा ख़्याल था कि हुज़ूर कुछ शब्द शुक्रगुज़ारी के अदा कर के बैठ जाएंगे लेकिन जो तक़रीर आपने बयान फ़रमाई शायद ही मैंने इस से बेहतर कोई तक़रीर सुनी हो। उन्होंने इन समस्त समस्याओं का जिनका सामना सारी दुनिया को है , पर रोशनी डाली मुझे आज के प्रोग्राम में शामिल हो कर बेहद ख़ुशी हुई और मैं इस अमन के सफी के बयान को सुन सका। ये अकेले सारी दुनिया को इस्लाम से परिचित करवा रहे हैं ।

अल्लाह करे कि दुनिया शीघ्र इस्लाम की अमन देने वाली शिक्षाओं की आग़ोश में आ जाए। आमीन।

(मन्सूर अहमद मसरूर)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

अख़बार बदर ख़ुद भी पढ़ें और अपने दोस्तों को भी पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें।

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अख़बार बदर के विशेष नम्बर नवम्बर 2014 ई के लिए अपना पैग़ाम भिजवाते हुए फरमाया कि

"यह बात बदर के दफतर और पाठकों को हमेशा याद रखनी चाहिए कि यह अख़बार जमाअत के दोस्तों के आध्यात्मिक सुधार और उन्नति के लिए जारी किया गया था और हमारे बुज़ुर्गों ने बावजूद विपरीत परिस्थतियों के पूरे यत्न से उसे हमेशा जारी रखने की कोशिश की और उनकी दुआओं और पवित्र प्रयासों से ही यह आज तक जारी है और यह चीज़ इस बात की मांग करती है अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और लाभ प्राप्त करें। अल्लाह तआला अपने फज़ल से हिन्दुस्तान के अहमदियों को विशेष रूप से और बाकी दुनिया के अहमदियों को प्राय: इसका अध्ययन करने की और इस से जुड़ी हुई बरकतों को समेटने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन।"

सय्यदना हज़रत ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस महत्त्वपूर्ण और ईमान वर्धक उपदेश को सामने रखते हुए जमाअत अहमदिया भारत के दोस्तों की सेवा में अनुरोध किया जाता है कि हर घर में अख़बार बदर का अध्ययन किया जाना बहुत ज़रूरी है। इसमें कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेशों के अतिरिक्त हुज़ूर अनवर के जुम्ए के ख़ुत्बे और भाषणों तथा हुज़ूर अनवर के विभिन्न देशों के दौरों की बहुत दिलचस्प और ईमान वर्धक रिपोर्ट नियमित प्रकाशित होती हैं जिस का अध्ययन हर अहमदी लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला के फज़ल से अब यह अख़बार हिन्दी, बंगला, तमिल, तेलुगु , मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषा में प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी दोस्तों ने अभी तक अखबार बदर अपने नाम नहीं लगवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर लगवाकर ख़ुद भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य लोगों को भी इस अध्ययन का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर के उपदेशों को पर अनुकरण करने की तौफीक़ प्रदान करे। आमीन। बदर से संबंधित किसी भी जानकारी के लिए निम्नलिखित नम्बर पर संपर्क करें। (नवाब अहमद, प्रबंधक अख़बार बदर)

managerbadrqnd@gmail.com +91 94170 20616 ,

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad